ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २०८ म अंक १५ अगस्त २०१६ (वर्ष ९ मास १०४ अंक २०८)

ऐ अंकमे अछि:-

१.संपादकीय संदेश

२.गद्य

२.१.आशीष अनचिन्हार- संशोधन केर मतलब विनाश नै होइ छै

२.२.रवि भूषण पाठक- फसाद आ आनंद (लघु कथा)

२.३.डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- १. सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता (लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे) २.दीर्घ कथा-परिस्थिति लेखिका

२.४.राजेश वर्मा 'भवादित्य'- बीहनि कथा

३. पद्य

३.१. 1. रवि भूषण पाठक - 9 टा कविता 2. रौशन कुमार झा "गोविन्द"- कसैया दहेज़

३.२.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.३.रामसोगारथ यादव- ३ टा कविता

३.४.जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल- २ टा गजल

-

४.बालानां कृते- आशीष अनचिन्हार- बाल गजल

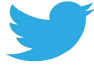
Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।



VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha  Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

‘दी ओरिजिनल गीतांजलि’ केर विमोचन:

टैगोरक तिरोधानक ७५ वर्षक बाद

श्रावण मासक २२ तारीख टैगोर-प्रेमी लोकनिक लेल एकटा महत्वपूर्ण दिवस होई छइ. आइ सं ७५ वर्ष पूर्व हुनकर तिरोधान भेल छलनि आ’ कलकत्ताक राजपथ पर मनुक्खक समुद्र बहि गेल छल; मुदा कम्मे लोग जनैत अछि जे जाहि “गीतांजलि: द’ सोंग ओफ्फेरिंग्स” (इंडिया सोसाईटी द्वारा प्रकाशित, १९१२) केर लेल १९१३ मे एशियाक पहिल साहित्यकार केर रूप मे हुनका नोबेल पुरस्कार भेंटल छलनि, ओ हुनक कवि-रूप मे मर्यादाक सही प्रमाण नइ छलनि, कियेकये त’ मूल ‘गीतांजलि’ (१९१० मे बंगला मे प्रकाशित) केर १५७ मे सं मात्र ५३ गोट कविता एहि कवि-कृत अंग्रेजी अनुवाद मे अंतर्भुक्त भेल छल, बाकी १०४ गोट कविताक अनुवाद टैगोर कहियहु नइ केलनि – जाहि सं हुनकर कविताक प्रेमी पाठक कें ओरिजिनल गीतांजलि’ केर रसास्वादनक कोनो मओका नइ भेंटलनि; आब नचिकेताक अनुवाद मे वैह मूल गीतांजलिक पूर्णांग अनुवाद आ’ ९० पृष्ठ केर विश्लेषण आ’ व्याख्या सहित ई अपूर्व रुपें कविता-प्रेमी पाठक वर्ग लेल उपस्थित अछि; २०१५ मे एहि पुस्तकक मूल इउरोपिय संस्करण चपल छल जर्मनी सं – जकर प्रकाशक छलाह एनिमा विवा मल्टीलिंगुआ – सुदूर एंडोरा देशक; आब तकरहि भारतीय तथा सार्क संस्करण प्रकाशित भेल – जकरा विश्व-भारतीक उपाचार्य प्रो: स्वपन



दत्ता विमोचन केलनि आ' विश्व-भारतीक संग MoU केर उपज स्वरुप एहि पुस्तकक विषय मे बाजली प्रो: तपती मुखोपाध्याय, अध्यक्षा, रवीन्द्र भवन. एहि पुस्तक उपलब्ध भ' सकैछ ९९९ टाका (१०% केर छूट तथा डाक व्यय फ्री, अर्थात मात्र 900 टाका) मे, जखन कि एकर यूरोपियन एडिशन केर मूल्य छइ ३४ यूरो (प्रायः २५२० टाका). एहि पुस्तकक लेल लिखी: E-LEKHANFoundation Trust: B1&C1, Dakshinayan, Abanpally, Santiniketan 731235 Dt Birbhum, West Bengal; E-mailunsciil51@gmail.com (Cell 9830132234)

विदेह रचनात्मकता बढ़ेबाक हिसाबे किछु ने किछु नव काज करैत आबि रहल अछि। ऐ बेर विदेह एकटा नव प्रोजेक्ट लऽ कऽ आएल अछि, जै अन्तर्गत विदेहक संपादक मंडल एकटा कोनो रचनाकर्मीसँ हुनक किछु रचना आमंत्रित कऽ विदेहक एकटा अंकमे देत आ ओइ रचनाकर्मीक संबंधमे कोनो आन रचनाकर्मी टिप्पणी देता। रचनाकर्मी आ टिप्पणी देनिहारक नामक घोषणा एकै समएमे कएल जाएत। रचना ओ टिप्पणी जहिया आएत तै केर बादे अंक केर निर्णय कएल जाएत मने रचना आ टिप्पणी दूनू ऐ प्रोजेक्ट लेल आवश्यक अछि।

ऐ प्रोजेक्ट केर पहिल घोषणामे **कामिनी** क रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ कामिनीजीक रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल**मधुकांत झा** जीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि।
ओना ई प्रोजेक्ट सबहक सहयोगपर आधारित रहत तँए ई प्रोजेक्ट लगातारो चलि सकैए आ सुविधानुसार सेहो।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ जनवरी ओ फरवरी २०१७ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना ३१ दिसम्बर २०१६ धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान
विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान
१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११
२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)
२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कँ "तरेगन" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकँ "अम्बरा" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "अर्चिस" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार – श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "देवीजी" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकँ "बेटीक अपमान आ छीनरदेवी" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकँ "निश्तुकी" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकँ "मोहनदास" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (सखारी पेटारी- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (नै धारैए- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (अनचिन्हार आखर- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (पाखलो - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

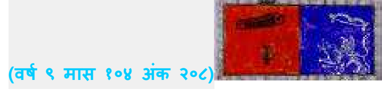
अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

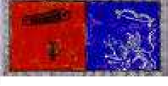
मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम-लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य–अभिनय-



(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **टाॅसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) **श्री हरि नारायण मण्डल** सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) **जय प्रकाश मण्डल** सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट– बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री चन्दन कुमार मण्डल** सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

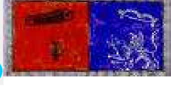
हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद** राउत सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)



(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) **वासुदेव राम** सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- िनर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) **श्री बौकू मल्लिक** सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री राम विलास धरिकार** सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट– बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- िनर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) **श्री राम अवतार** राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **श्री रौशन यादव** सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट– बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

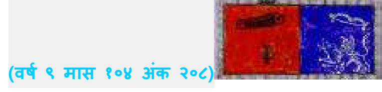
(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) **श्री राज कुमार महतो** सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- िनर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री घुरन राम**, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट– मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) **श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार,** सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) **सुश्री मिथिलेश कुमारी** सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट-– मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) **श्री किशोरी दास** सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट-– मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री खखर सदाय सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तानपुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)



श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- िनर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुिमयाँ बजबै छथि।

श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नङेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

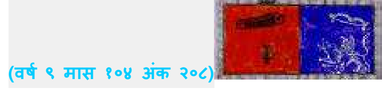
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०



Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

गजेन्द्र ठाकुर
ggajendra@videha.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

२. गद्य

२.१.आशीष अनचिन्हार- संशोधन केर मतलब विनाश नै होइ छै

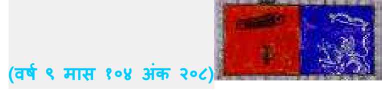
२.२.रवि भूषण पाठक- फसाद आ आनंद

२.३.डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- १. सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता (लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे) २.दीर्घ कथा-परिस्थिति लेखिका

२.४.राजेश वर्मा 'भवादित्य'- बीहनि कथा

आशीष अनचिन्हार- संशोधन केर मतलब विनाश नै होइ छै

हमर मने आशीष अनचिन्हारक एकटा आलेख दरभंगासँ प्रकाशित दैनिक मिथिला आवाजमे 9 फरवरी 2014कँ "मैथिली गजलमे लोथ गजलकारक योगदान" नामसँ भेल रहैतकर उत्तर दैत सुरेन्द्रनाथजी एकटा आलेख लिख



ला जे कलकत्तासँ प्रकाशित कर्णामृत केर अप्रैल-
जून 2015मे "मैथिली गजलक पूंषत्वहीन आलोचना" केर नामसँ प्रकाशितभेल आ सुरेन्द्रनाथ जीक ऐ आलेखक उत्तर दैत हमर एकटा आलेख कर्णेमृतक नवीन अंक अप्रैल-
जून 2016मे "संशोधन केर मतलब विनाश नै होइ छै" नामसँ प्रकाशित भेलअछि। ओना संपादक महोदय किछु काँट-छाँट सेहो केलखनि अछि तँए विदेहक पाठक लेल मूल आलेख देल जा रहल अछि पढ़ल जाए। संगे-
संग ऐ मूल लेखक अंतमेकर्णामृतमे प्रकाशित लेखक कटिंग सेहो देल जा रहल अछि पहिले सुरेन्द्रनाथजीक तकर बाद हमर बला (ऐ लेखमे देल गेल सुझाव कर्णामृत पत्रिका लेल छल)----

संपादक/ उपसंपादक महोदय लोकनिसँ आग्रह जे ऐ आलेखमे आएल सभ उदाहरण आ ओकर लक्षणकेँ यथावत् राखथि कारण गजल उच्चारणपर निर्भर करै छै आ उच्चारणवर्तनीपर। संगे-
संग दू शेरक बीचमे जते जगह छै से रहऽ दियौ।

संशोधन केर मतलब विनाश नै होइ छै

(आलोचना)
आशीष अनचिन्हार

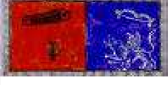
अप्रैल-
जून 2015मे प्रकाशित सुरेन्द्रनाथ जीक आलेख " मैथिली गजलक पूंषत्वहीन आलोचना" पढ़लहुँ आ ओहिपर हम अपन किछु विचार राखऽ चाहब। ओना सुरेन्द्रनाथजीक आलोचना हमर आलेखपर केंद्रित छल तँए पाठककेँ लगतिन जे ई प्रत्यालोचना थिक मुदा सुरेन्द्र नाथ जी अपने ठाम-
ठीम किछु स्पष्ट करऽ कहने छथि तँइ ई आलेखलऽ कऽ हम आएल छी आ पाठक सभसँ आग्रह जे एकरा प्रत्यालोचना नै बल्कि सुरेन्द्र नाथजीक आग्रह मानबाक परिणाम बूझथि। जे-
जे चीज सुरेन्द्रजी हमरासँ बूझए चाहैछथि वा हुनकर जै-
जै विचारपर हमरा आपत्ति अछि से हम क्रमशः बिंदुवार दऽ रहल छी----
1) ऐ लेखक शुरूआतेमे सुरेन्द्रनाथ जी "मैथिली-
हिंदी" लऽ कऽ अगुता गेल छथि। हम फेर जोर दऽ कऽ कहब चाहब जे मैथिलीक अधिकांश रचनाकार हिंदीक नकल करैए आएकर सबूत सुरेन्द्रनाथजी अपने ऐ आलेखमे बहुत बेर देने छथि। कतहुँ ज्ञानेन्द्रक ना तँ कतहुँ अनिरुद्ध



सिन्हा तँ कतहुँ हिंदी गजलः संघर्ष और सफलता। कुल मिला कऽ ईआलेख हिंदीक नकल थिक आ ऐ आलेखसँ ई हमर ओ विचार मजगूत भऽ जाइए जकरा तहत हम बेर-
बेर कहै छी आ कहऽ चाहब जे मैथिलीक अधिकांश लेखन हिंदीक नकलथिक। ऐ ठाम ई स्पष्ट करब बेसी जरूरी जे सुरेन्द्रनाथ जी रेफरेन्स दैत काल अपन मानसिक वर्णसंकरताक परिचय देने छथि। पूरा दुनियाँक रेफरेन्स तँ द ऽ देला मुदा गंगेशगुंजन जीक "बहर-
मेनिया" बला कथन ओ कहाँसँ लेला। विदेहमे मुन्नाजीक संयोजनमे गजलक उपर परिचर्चा भेल रहै आ तैमे गंगेश गुंजन जीक आलेखमे ई संदर्भ आएल छैआ बादमे ई आलेख विदेह-
सदेहमे प्रिंट रूपमे एलै। मुदा रेफरेन्समे एकर चर्चा नै। की सुरन्द्रनाथजी ई कहि सकै छथि जे अमीर खुसरोक मैथिली मिश्रित गजलक अंश ओकहाँसँ प्राप्त केने छथि? संगे-
संग ओ राजेन्द्र विमलजीक उक्ति कहाँसँ आनि लेलथि जखन की ओ इंटरव्यू विदेहमे प्रकाशित छै (सदेहमे सेहो)| ई छनि सुरेन्द्रनाथजीकमानसिक वर्णसंकरता जकरा ओ बेर-बेर अपन आलेखमे देखेने छथि।

2) लगैए जे सुरेन्द्रनाथजी जखन तामसमे अबैत हेता तखन हुनक आँखि मुना जाइत हेतनि (मात्र अनुमान) से हम माया बाबू आ नीरजजीक संदर्भमे हिनक तामसकेँ देखैतअनुमान लगा रहल छी। हमरा ने माया बाबूक गीतलसँ परेशानी अछि ने बीतलसँ। हिंदीक नीरजकेँ उँच स्थान मात्र ऐ दुआरे देल गेलन्हि जे ओ हिंदी भाषाक क्षमतापर बिनाबयान देने कहलखिन जे गजलक नाम गीतिका हेबाक चाही। ऐठाम धेआन दिऔ नीरजजी ई कहियो नै कहलखिन जे हिंदीमे गजल लिखब संभव नै छै, तँइ हिंदीमे नीरजजीकेँऊँच स्थान भेटलनि। ऐकेँ उल्टा माया बाबू अपन अक्षमताकेँ झाँपि ई बयान देला जे मैथिलीमे गजल लिखब संभव नै तँए गीतल हेबाक चाही। दूनू बयानमे फर्क छै तँए दुन्नूकसम्मानो अलग-
अलग। हमरा ने माया बाबूपर आपत्ति अछि आ ने हुनक प्रयोगपर हमरा तँ बस हुनकर उद्येश्यपर आपत्ति अछि। माया बाबूक सामने निस्सन मैथिली गजलकपरंपरा छल ओइकेँ बाबजूदो एहन बयान किएक?

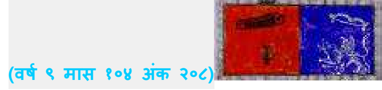
3) जेना प्रकृति अपन मान्यता लेल केकरो पुछारी नै करै छै तेनाहिते पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा आ मधुपजीक गजलकेँ कोनो आशीष अनचिन्हार वा सुरेन्द्रनाथ कीआन कोनो गजलकारक अनुसंशाक जरूरति नै छै। पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा आ मधुपजीक गजल मैथिली गजलक पूर्वज थिक तँ ई तीनू गोटें निश्चित रूपसँ मैथिलीगजलक "असल प्रवर्तक" छथि। सुरेन्द्रनाथजी पुछै छथि जे "की ओ सभहँक (पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा आ मधुपजीक) गजलक व्याकरण अनचिन्हारक आखरकव्याकरणसँ ऐम-
मेन मेल खाइत अछि। जँ सएह तँ हुनकर सभहँक अवसान भेलाक बादो मैथिली गजल बाँझ अथवा मसोमात किए बनल रहल?"


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

आब ऐ प्रश्नक उत्तर तँ सुरेन्द्रनाथजी अपने छथि। बाप बच्चाक लालन-पालन करै छै मुदा जँ बच्चा जवान भेलाक बाद अपना हिसाबें चलै छै तँ फेर ओइमे बापक कतेसहभागिता? पं. जीवन झा, कविवर सीताराम झा आ मधुपजी ई तीनू गोटें व्याकरणयुक्त गजल देला मुदा तकर बादक नकलची पीढ़ी जँ पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झाआ मधुपजीकेँ नै गुदानै तँ फेर ओइ लेल ई तीनू (पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा आ मधुपजी) किए दोषी हेता। जा धरि मैथिली गजलमे सुरेन्द्रनाथजी सन-सन अराजकगजलकार होइत रहत ता धरि मैथिली गजल बाँझ अथवा मसोमात बनल रहत।ऐ तीनू (पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा आ मधुपजी)क संपूर्ण गजल ओ ओकरव्याकरणिक व्याख्या सहित पढ़बाक लेल "मैथिलीक प्रतिनिधि गजल 1905सँ 2014 धरि" नामक पोथी देखू।

4) बहुत रास अराजक गजलकार जकाँ सुरेन्द्रनाथजी सेहो बहर आ छंदकेँ अलग-अलग मानै छथि। ई माननाइ तेहने भेल जेना कियो वाटर आ पानिकेँ अलग मानथि। बुक आपोथीकेँ अलग मानथि। सच तँ ई छै जे बहर आ छंदमे मात्र भाषायी अंतर छै। संस्कृतमे छंद कहल जाइत छै तँ अरबीमे बहर। ओना एकटा तात्विक अंतर जरूर छै जे संस्कृतमेछंद व्यापक अर्थ दै छै आ सरल वार्णिक, वर्णवृत आ मात्रिक तीनू छंद अबै छै तँ बहरमे मात्र वर्णवृत। ओना अरबीमे सरल वार्णिक आ मात्रिक छंदक प्रचार नै केर बराबर छै आवर्णवृतक एकछत्र राज्य छै तँए बहर आ छंद एक समान अछि। वर्णवृत वा बहरक साधारण नियम छै जे ई लघु-गुरू द्वारा निर्धारित होइत छै (बहुत काल लघु-गुरू लेल लघु-दीर्घ वा ह्रस्व-दीर्घ युग्म केर सेहो प्रयोग होइत छै)। आ संस्कृतक वर्णिक छंदमे पहिल पाँतिक मात्राक्रम जे छै सएह सभ पाँतिक मात्राक्रम समान हेबाक चाही आ प्रत्येकशब्दक संख्या समान हेबाक चाही तखन वार्णिक छंद हएत। अरबियोमे तेहने सन छै मुदा आधुनिक भाषामे मात्राक्रम तँ समान रहलै मुदा अक्षर संख्या उपर निच्चा कऽ सकैछी। संगे-संग गजल लिखबा कालमे किछु छूट देल जाइत छै जे की मात्र आवश्यक स्थितिमे प्रयोग होइत छै। आब ई लघु-गुरूक की व्यवस्था छै वा छूट कोन रूपें लेल जेतै सेजनबाक लेल कोनो छंदशास्त्रीक पोथी पढ़ि लिअ। ओना हमरा पूरा उम्मेद अछि जे सुरेन्द्रनाथजी लग लघु-गुरू गनबाक ज्ञान हेबे करतनि (ई उम्मेद हमरा ऐ लेल अछि कारणसुरेन्द्रजी अपन आलेखमे बेर-बेर छूट बला ज्ञानक प्रदर्शन केने छथि)। ऐठाम कही जे गजलक हरेक पाँतिक मात्राक्रम एक समान हेबाक चाही (एक समान मात्रा आ एकसमान मात्राक्रम दूनू अलग-अलग वस्तु छै)।

5) कहबी छै जे "नकल करबाक लेल अकल चाही" मुदा सुरेन्द्रनाथजीकेँ नकलो करबाक बुद्धि नै छनि। ओ कोनो ज्ञानेन्द्र केर पोथीक उदाहरण दै छथि आ कहै छथि जे निरालागजलक व्याकरणकेँ तोड़ि देला। सच तँ ई अछि जे निराला मात्र विषय परिवर्तन केला आ उर्दू शब्दक बदला गजलमे हिंदी शब्दक प्रयोग केला। मैथिलीक बहुत रास शाइर एहनेअराजक बयान दैत छथि जे दुष्यंत कुमार व्याकरण तोड़ला तँ अदम गोंडवी ई केला तँ ओ ओना के

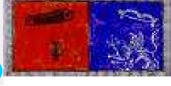


ला। मुदा हिंदीक सभ गजलकार व्याकरणक पालन केला खाली ओ विषयपरिवर्तन केला आ हिंदी शब्दक प्रयोग बेसी केला। हम ऐठाम पहिने निराला आ शमशेर बहादुर सिंह केर गजलक व्याकरण देखा रहल छी (चूँकि सुरेन्द्रनाथजी फैशन आनकल करैत बिना पढ़ने हिनकर सभहँक नाम लेने छथिन) आ तकर बाद जयशंकर प्रसाद सहित दुष्यंत कुमार, अदम गोंडवी, मुनव्वर राना सहित आन-
आन गजलकारकगजलक व्याकरण देखा रहल छी। वास्तवमे सुरेन्द्रनाथजी भ्रम पसारि रहल छथि वा ई कहब बेसी उचित जे ओ अपन अज्ञानताक कारणें भ्रम पसारि रहल छथि। ऐठाम हमकही जे सुरेन्द्रनाथजी अपन आलेखमे कत्तौ उदाहरण नै देने छथि जे कोन तरहें निरालाजी गजलक व्याकरणकेँ तोड़लखिन मुदा हम उदाहरण दऽ कऽ देखा रहल छी जे हिंदीकसभ गजलकार सभ कोना व्याकरणक पालन केलथि। । तँ पहिने निराला आ शमशेर बहादुरक गजलकेँ देखू--
(संपादक/ उपसंपादक महोदय लोकनिसँ आग्रह जे ऐ आलेखमे आएल सभ उदाहरण आ ओकर लक्षणकेँ यथावत् राखथि कारण गजल उच्चारणपर निर्भर करै छै आ उच्चारणवर्तनीपर।संगे-
संग दू शेरक बीचमे जते जगह छै से रहऽ दियौ)
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है

मतला (मने पहिल शेर)क मात्राक्रम अछि--
2122+2122+2122+212 आब सभ शेरक मात्राक्रम इएह रहत। एकरे बहर वा की वर्णवृत कहल जाइत छै। अरबीमे एकरा बहरेरमल केर मुजाइफ बहर कहल जाइत छै। मौलाना हसरत मोहानीक गजल " चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है" अही बहरमे छै जकर विवरण आगू देल जाएत। ऐठाँ ईदेखू जे निराला जी गजलक विषय नव कऽ देलखिन प्रेमिकाक बदला विषय मिल आ पूँजी बनि गेलै मुदा व्याकरण वएह रहलै। हमरा ने ज्ञानेन्द्रसँ मतलब अछि नेसुरेन्द्रनाथसँ। हमरा मात्र पाठकसँ मतलब अछि आब वएह कहथि जे कि निरालाजी व्याकरण कतऽ तोड़लखिन? आब हम ऐठाम सुरेन्द्रजीसँ आग्रह करबनि जे हुनका तँ लघु-
गुरूक सिद्धांत अबिते छनि तँ आब बाँचल शेरक निर्णय कऽ लेथु। सभ पाठकसँ आग्रह जे निर्णय करथि जे निराला जी बहरक पालन केला की नै। बाँचल शेर एना छै--

हार होंगे हृदय के खुलकर तभी गाने नये,
हाथ में आ जायेगा, वह राज जो महफिल में है



तरस है ये देर से आँखे गड़ी श्रृंगार में,
और दिखलाई पड़ेगी जो गुराई तिल में है

पेड़ टूटेंगे, हिलेंगे, जोर से आँधी चली,
हाथ मत डालो, हटाओ पैर, बिच्छू बिल में है

ताक पर है नमक मिर्च लोग बिगड़े या बनें,
सीख क्या होगी पराई जब पसाई सिल में है

शमशेर बहादुर सिंह

1

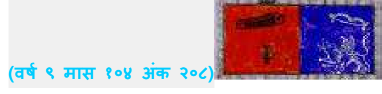
जहाँ में अब तो जितने रोज अपना जीना होना है,
तुम्हारी चोटें होनी हैं हमारा सीना होना है।

वो जल्वे लोटते फिरते है खाको-खूने-इंसाँ में :
'तुम्हारा तूर पर जाना मगर नाबीना होना है!

ऐ गजलक मतलाक मात्राक्रम अछि 1222-1222-1222-
1222 आ एकर पालन दोसर शेर सहित आन सभ शेरमे अछि। सुरेन्द्रनाथजीसँ आग्रह जे ओ पूरा गजल पढ़ि लेथि।
चूँकि सुरेन्द्रनाथजीक इच्छित उदाहरण हम दऽ चुकल छी मुदा तैयो हम ऐठाम हिंदी-
उर्दूकक किछु महत्वपूर्ण गजलक व्याकरण देखा रहल छी जे तँ मुख्यतः पाठक लेल अछिमुदा सुरेन्द्रनाथ आ हुनकर संगी सेहो देखथि--
जयशंकर प्रसाद

सरासर भूल करते हैं उन्हें जो प्यार करते हैं
बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं

उन्हें अवकाश ही इतना कहां है मुझसे मिलने का
किसी से पूछ लेते हैं यही उपकार करते हैं



जो ऊंचे चढ़ के चलते हैं वे नीचे देखते हरदम
प्रफ्फुलित वृक्ष की यह भूमि कुसुमगार करते हैं

न इतना फूलिए तरुवर सुफल कोरी कली लेकर
बिना मकरंद के मधुकर नहीं गुंजार करते हैं

'प्रसाद' उनको न भूलो तुम तुम्हारा जो भी प्रेमी हो
न सज्जन छोड़ते उसको जिसे स्वीकार करते हैं

प्रसादजी ऐ गजलक बहर अछि-- 1222-1222-1222-1222
आजुक समयक प्रसिद्ध शाइर आ फिल्मी गीतककार जावेद अख्तरजीक ई गजल देखू जे की जगजीत सिंह गेने छथि--
तमन्ना फिर मचल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ
ये मौसम ही बदल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ
1222-1222-1222-1222

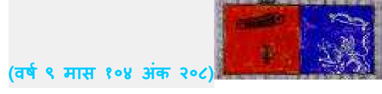
आब पूरा गजल देखू--

तमन्ना फिर मचल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ
ये मौसम ही बदल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ

मुझे गम है कि मैने जिन्दगी में कुछ नहीं पाया
ये ग़म दिल से निकल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ

नहीं मिलते हो मुझसे तुम तो सब हमदर्द हैं मेरे
ज़माना मुझसे जल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ

ये दुनिया भर के झगड़े, घर के किस्से, काम की बातें
बला हर एक टल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ



आब हसरत मोहानीक ई प्रसिद्ध गजल देखू--

2122-2122-2122-212
चुपके-चुपके- रात दिन आँ-सू बहाना- याद है
हमको अब तक- आशिक़ी का- वो ज़माना -याद है

आब पूरा गजल देखू--

चुपके-चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है

बा-हज़ाराँ इज़्तराब-ओ-सद हज़ाराँ इश्तियाक़
तुझसे वो पहले-पहल दिल का लगाना याद है

तुझसे मिलते ही वो बेबाक हो जाना मेरा
और तेरा दाँतों में वो उँगली दबाना याद है

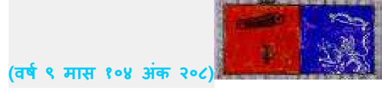
खेंच लेना वोह मेरा परदे का कोना दफ़तन
और दुपट्टे से तेरा वो मुँह छुपाना याद है

जानकर सोता तुझे वो क़स्दे पा-बोसी मेरा
और तेरा ठुकरा के सर वो मुस्कराना याद है
(ई गजल बहुत नमहर छै तँए मात्र पाँच टा शेर दऽ रहल छी)

कबीर दासक एकट गजलकेँ तक्ती कऽ कऽ देखा रहल छी--

बहर—ए—हजज केर ई गजल जकर लयखंड (अर्कान) (1222×4) अछि--

ह1 मन2 हैं2 इश्2, क़1 मस्2ता2ना2, ह1 मन2 को 2 हो 2, शि1 या2 री2 क्या2



हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या ?
रहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या ?

जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर-ब-दर फिरते,
हमारा यार है हम में हमन को इंतजारी क्या ?

खलक सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है,
हमन गुरनाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या ?

न पल बिछुड़े पिया हमसे न हम बिछड़े पियारे से,
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या ?

कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से,
जो चलना राह नाज़ुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ?

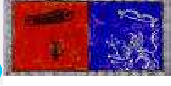
तेनाहिते आजुक प्रसिद्ध शाइर मुनव्वर राना केर ऐ गजलक तक्ती देखू—

बहुत पानी बरसता है तो मिट्टी बैठ जाती है
न रोया कर बहुत रोने से छाती बैठ जाती है

यही मौसम था जब नंगे बदन छत पर टहलते थे
यही मौसम है अब सीने में सर्दी बैठ जाती है

नकाब उलटे हुए जब भी चमन से वह गुज़रता है
समझ कर फ़ूल उसके लब पे तितली बैठ जाती है

मुनव्वर राना (घर अकेला हो गया, पृष्ठ - 37)
तक्तीअ
बहुत पानी / बरसता है / तो मिट्टी बै / ठ जाती है
1222 / 1222 / 1222 / 1222
न रोया कर / बहुत रोने / से छाती बै / ठ जाती है



1222 / 1222 / 1222 / 1222

यही मौसम / था जब नंगे / बदन छत पर / टहलते थे

1222 / 1222 / 1222 / 1222

यही मौसम / है अब सीने / में सर्दी बै / ठ जाती है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

नकाब उलटे / हुए जब भी / चमन से वह / गुज़रता है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

(नकाब उलटे के अलिफ़ वस्ल द्वारा न/का/बुल/टे 1222 मानल गेल अछि)

समझ कर फ़ू / ल उसके लब / पे तितली बै / ठ जाती है

1222 / 1222 / 1222 / 1222

आब राहत इन्दौरी जीक ऐ गजलकेँ देखू--

ग़ज़ल (1222 / 1222 / 122) (बहर-ए-हजज केर मुजाइफ)

चरागों को उछाला जा रहा है

हवा पर रौब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीत होगी

मगर सिक्का उछाला जा रहा है

जनाजे पर मेरे लिख देना यारों

मुहब्बत करने वाला जा रहा है

राहत इन्दौरी (चाँद पागल है, पृष्ठ - 24)

तक्तीअ =

चरागों को / उछाला जा / रहा है

1222 / 1222 / 122

हवा पर रौ / ब डाला जा / रहा है

1222 / 1222 / 122

न हार अपनी / न अपनी जी / त होगी

1222 / 1222 / 122

(हार अपनी को अलिफ़ वस्ल द्वारा हा/रप/नी 222 गिना गया है)

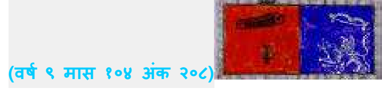
मगर सिक्का / उछाला जा / रहा है
1222 / 1222 / 122
जनाजे पर / मेरे लिख दे / ना यारों
1222 / 1222 / 122
मुहब्बत कर / ने वाला जा / रहा है
1222 / 1222 / 122

फेरसँ मुनव्वर रानाजीक एकटा आर गजलकेँ देखू--
हमारी ज़िंदगी का इस तरह हर साल कटता है
कभी गाड़ी पलटती है कभी तिरपाल कटता है

सियासी वार भी तलवार से कुछ कम नहीं होता
कभी कश्मीर कटता है कभी बंगाल कटता है
(मुनव्वर राना)
1222 / 1222 / 1222 / 1222
(मुफाईलुन / मुफाईलुन / मुफाईलुन / मुफाईलुन)
हमारी ज़िं / दगी का इस / तरह हर सा / ल कटता है
कभी गाड़ी / पलटती है / कभी तिरपा / ल कटता है

सियासी वा/ र भी तलवा/ र से कुछ कम / नहीं होता
कभी कश्मी/ र कटता है / कभी बंगा / ल कटता है
आब दुष्यंत कुमारक ऐ गजलक तक्ती देखू--
2122 / 2122 / 2122 / 212
हो गई है / पीर पर्वत /-सी पिघलनी / चाहिए,
इस हिमालय / से कोई गं / गा निकलनी / चाहिए।
आब अहाँ सभ ऐ गजलकेँ अंत धरि जा सकै छी। पूरा गजल हम दऽ रहल छी—

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।



आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

आब कने अदम गोंडवी जीक दू टा गजलक तक्ती देखू—
1222 / 1222 / 1222 / 1222
ग़ज़ल को ले / चलो अब गाँ / व के दिलकश /नज़ारों में
मुसल्सल फ़न / का दम घुटता / है इन अदबी / इदारों में
आब अहाँ सभ ऐ गजलकेँ अंत धरि जा सकै छी। पूरा गजल हम दऽ रहल छी—

ग़ज़ल को ले चलो अब गाँव के दिलकश नज़ारों में
मुसल्सल फ़न का दम घुटता है इन अदबी इदारों में

न इनमें वो कशिश होगी, न बू होगी, न रानाई
खिलेंगे फूल बेशक लॉन की लम्बी क़तारों में

अदीबों! ठोस धरती की सतह पर लौट भी आओ
मुलम्मे के सिवा क्या है फ़लक़ के चाँद-तारों में

रहे मुफ़लिस गुज़रते बे-यक़ीनी के तज़रबे से
बदल देंगे ये इन महलों की रंगीनी मज़ारों में

कहीं पर भुखमरी की धूप तीखी हो गई शायद
जो है संगीन के साये की चर्चा इश्तहारों में.

फेर गोंडवीजीक दोसर गजल लिअ—
2122 / 2122 / 2122 / 212
भूख के एह / सास को शे / रो-सुख़न तक /ले चलो
या अदब को / मुफ़लिसों की / अंजुमन तक /ले चलो
आब अहाँ सभ ऐ गजलकैं अंत धरि जा सकै छी। पूरा गजल हम दऽ रहल छी--
भूख के एहसास को शेरो-सुख़न तक ले चलो
या अदब को मुफ़लिसों की अंजुमन तक ले चलो

जो ग़ज़ल माशूक के जल्वों से वाक़िफ़ हो गयी
उसको अब बेवा के माथे की शिकन तक ले चलो

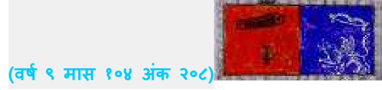
मुझको नज़्मो-ज़ब्त की तालीम देना बाद में
पहले अपनी रहबरी को आचरन तक ले चलो

गंगा जल अब बुर्जुआ तहज़ीब की पहचान है
तिश्नगी को वोदका के आचरन तक ले चलो

ख़ुद को ज़ख्मी कर रहे हैं ग़ैर के धोखे में लोग
इस शहर को रोशनी के बाँकपन तक ले चलो.

आब आधुनिक उर्दूक प्राचीनतम गजलकार हरी चंद अख़्तरजीक ई गजल देखू--

सुना कर हाल क़िस्मत आज़मा कर लौट आए हैं
उन्हें कुछ और बेगाना बना कर लौट आए है
1222-1222-1222-1222
आब पूरा गजल देखू--



सुना कर हाल क़िस्मत आज़मा कर लौट आए हैं
उन्हें कुछ और बेगाना बना कर लौट आए है

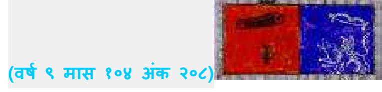
फिर इक टूटा हुआ रिश्ता फिर इक उजड़ी हुई दुनिया
फिर इक दिलचस्प अफ़्साना सुना कर लौट आए हैं

फ़रेब-ए-आरज़ू अब तो न दे ऐ मर्ग-ए-मायूसी
हम उम्मीदों की इक दुनिया लुटा कर लौट आए हैं

ख़ुदा शाहिद है अब तो उन सा भी कोई नहीं मिला
ब-ज़ोम-ए-ख़ुवेश इन का आज़मा कर लौट आए हैं

बिछ जाते हैं या रब क्यूँ किसी काफ़िर के क़दमों में
वो सज्दे जो दर-ए-काबा जा कर लौट आए हैं

("फिर इक" मे अलिफ-
वस्ल छूट छै आ एकर उच्चारण "फिरिक" छै। तेनाहिते "हम उम्मीदों " लेल तेहने सन बूझू।)
कतेक नाम आ गजल दिअ ऐ ठाम। कहबाक मतलब जे हरेक शाइर अपन गजलमे कथ्य आ तेवर बदलै छथि व्याकरण वएह रहै छै। मुदा मैथिलीक विद्वान तँ बस विद्वानछथि हुनका के टोकत। ऐ ठाम ई उदाहरण सभ देबाक मतलब मात्र सही पक्षकेँ उजागर करबाक अछि।
ओना सुरेन्द्रनाथजी कहता जे ई उदाहरण सभ हिंदी-
उर्दूक अछि आ मैथिलीक अपन व्याकरण हेबाक चाही। पहिल गप्प जे ओ अपने कहै छथि जे हिंदीक गजलमे व्याकरण नैछै आ दोसर गप्प जे कोनो विधाक व्याकरण तँ मूले भाषासँ लेल जेतै खाली लक्ष्य भाषामे संशोधन हेतै । आब ई संशोधन केना हेतै से ऐ उदाहरणसँ बूझू—
1222-1222-1222-1222 (मने लघु-दीर्घ-दीर्घ, लघु-दीर्घ-दीर्घ,लघु-दीर्घ-दीर्घ,लघु-दीर्घ-
दीर्घ केर चारि बेर प्रयोग) के अरबीमे बहरे-
हज़ज कहल जाइत छै आ एकरा बहुतसंगीतमय बूझल जाइत छै मुदा बहुत संभव जे भाषायी भिन्नताक कारण ई बहर या छंद मैथिलीमे कर्णप्रिय नै हो। आ एहन स्थितिमे मैथिलीमे 122-1222-222-
1222सनकेँ कोनो छंद आबि जाए। हमरा बुझने इएह संशोधन छै।

मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

आब 1222-1222-1222-1222 केर गिनती करबाक लेल जे नियम छै सएह नियम 122-1222-222-1222 लेल सेहो रहतै या अन्य कोनो छंद लेल वएह रहतै।
तेनाहिते संस्कृत आ अरबीमे 122-122-122-122 छंदक समान रूपसँ प्रयोग होइत छै। संस्कृतमे एकरा भुजंगप्रयात कहल जाइत छै तँ अरबीमे बहरे-मुतकारिब। दूनू भाषामे ईउच्च संगीत क्षमता नेने भेटत। संस्कृतमे गोस्वामी तुलसीदासजीक ई रचना देखू जे भुजंगप्रयात (बहरे मुतकारिब)मे अछि--

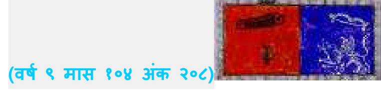
नमामी शमीशान निर्वाण रूपं
विभू व्यापकम् ब्रम्ह वेदः स्वरूपं
पहिल पाँतिकैँ मात्रा क्रम अछि---- ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ, दोसरो पाँतिकैँ मात्रा क्रम अछि-----ह्रस्व- दीर्घ -दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ
फेर उपरे जकाँ कही जे भऽ सकैए जे मैथिलीमे ऐ ढ़ाँचामे संगीत नै आबि सकै आ तँए 22-122-22-122 रूप आबि जाए वा 221-122-212-122 रूप आबि जाए। मुदा लघु-दीर्घ गिनती करबाक नियम तँ समाने रहतै। बदलतै नै। मैथिलीमे शाइर राजीवरंजन मिश्रजी एहने संशोधन ओ परिवर्तन करैत गजल कहि-लीखि रहल छथि। राजीवजी कोनोअरबी वा संस्कृतक मान्य छंद नै लै छथि मुदा गजलक पहिल पाँतिमे जे मात्राक्रम रहै छै तकर ओ पूरा गजलमे पालन करै छथि आ इएह तँ छंद वा बहरक निर्वाह केनाइ भेलै।उदाहरण लेल राजीवजीक एकटा गजल राखि रहल छी—

नै राम रहीमक झोक रहय
नै वेद कुरानक टोक चलय

मतलाक दूनू पाँतिमे 221 122 2112 ढ़ाँचा अछि आ निच्चा आन शेर सभमे देखू इएह मात्राक्रम भेटत--
किछु आर भने नै होइ मुदा
बस संग धऽ लोकक लोक सहय

नै ईद दिवाली भरिकैँ मजा
आनंद सहित नित नेह लहय

हो राम रहीमक गान सदति



नै नामकँ खातिर जीव मरय

राजीव सुनब नै लोककँ कहल
किछु लोक तऽ अतबे खेल करय

की ऐ गजलमे समकालीन स्वर नै छै। सुरेन्द्रनाथजीकेँ मेहनति नै करबाक छनि तँ नै करथु मुदा भ्रम ओ अज्ञानता नै पसारथु से हमर आग्रह। हम ऐ ठाम मैथिलीक किछुगजल कारक दूटा कऽ शेर देखा रहल छी। सभ गोटा देखू जे कोना एकै संग समकालीन स्वर आ व्याकरण छै—
कविवर सीताराम झाजीक गजलक दूटा शेर--

हम की मनाउ चैती सतुआनि जूड़शीतल
भै गेल माघ मासहि धधकैत घूड़तीतल`

मतलाक छंद अछि 2212+ 122+2212+ 122 आब दोसर शेर मिला लिअ-
अछि देशमे दुपाटी कङरेस ओ किसानक
हम माँझमे पड़ल छी बनि कै बिलाड़ि तीतल

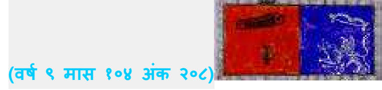
पहिल शेर आइयो ओतबे प्रासंगिक अछि जते पहिले छल। आइयो नव साल गरीबक लेल नै होइ छै। दोसर शेरकेँ नीक जकाँ पढ़ू आइसँ साठि-सत्तर साल पहिलुक राजनीतिक चित्र आँखि लग आबि जाएत।
जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल" जीक गजलक दू टा शेर--

टूटल छी तँइ गजल कहै छी
भूखल छी तँइ गजल कहै छी

मतलाक दूनू पाँतिमे 2222 +12 + 122 छंद अछि आ एकर दोसर शेर देखू--

ऑफिस सबहक कथा कहू की
लूटल छी तँइ गजल कहै छी

पाठक निर्णय करता जे समकालीन स्वर छै की नै।



योगानंद हीराजीक गजलक दू टा शेर—

मोनमे अछि सवाल बाजू की
छल कपट केर हाल बाजू की

मतलाक दूनू पाँतिमे 2122-12-1222 अछि आ दोसर शेर देखू

छोट सन चीज कीनि ने पाबी
बाल बोधक सवाल बाजू की

की समकालीन स्वर नै छै?
समकालीन स्वरे नै कालातीत स्वरक संग विजयनाथ झा जीक ऐ गजलक दूटा शेर देखू--

जीवनक आशय सदाशय सूत्र शिवता सार किछु
बेस बीतल शेष एहिना अभिलषित आभार किछु

मतलाक छंद अछि 212-212-212-212 आब दोसर शेरक दूनू पाँतिकेँ जाँच कऽ लिअ संगे संग भाव केर सेहो।

द्वन्द अछि आनंद तैयो क्लेश प्रियगर वारुणी
पी रहल हम जानि गंगा मधु मदिर नहि आर किछु

ऐठाम हमरा लग उदहारणक नमहर लिस्ट अछि मुदा मुदा पत्रिकाक सीमा होइत छै तँए हम रुकि रहल छी। सुरेन्द्रनाथजी कहै छथि जे रचनामे समकालीन स्वर हेबाक चाही। आ देखू जे दुष्यंत कुमार, अदम गोंडवी, निराला सहित मैथिलीक बहुत रास शाइर बिना व्याकरणकेँ तोड़नेकेना समकालीन स्वर देने छथि अपन गजलमे। की ई हिम्मत आ मेहनति करबाक क्षमता सुरेन्द्रनाथ जीमे छनि? हमरा बुझने सुरेन्द्रनाथजी संशोधनक मतलब छोड़ि देनाइ-
तोड़ि देनाइ आ विनाश केनाइ बुझै छथि। आ हुनकर ऐ अज्ञानतापर की कएल जा सकैए से पाठक निर्णय करता।

6) सुरेन्द्रनाथजी अपन आलेखमे योगानंद हीरा आ विजयनाथ झाजीक संदर्भमे ई प्रश्न केला जे "हिनका सभमे प्रतिभा छलनि तँ ई सभ घनगर किएक नै भेला"। एकरजबाबमे हम बस एतबा कहऽ चाहै छी जे जँ कोनो खेतिहर

अपन खेतमे गहूँम बाउग करै छै। आ गहूमक संग बहुत रास घास सभ जनमै छै। आब जँ खेतिहर कमौट नै करतै तँओ घास सभ गहूमकेँ बढ़हे नै देतै। ई पूर्णतः सत्य छै आ पाठक एकर अंदाजा लगा सकै छथि। मैथिली गजलक संदर्भमे इएह भेलै। शुरूमे नीक गजल तँ एलै मुदा बिनाआलोचकक ई विधा रहि गेल आ एकर परिणाम स्वरूप " सुरेन्द्रनाथ" सन-सन जंगली घास " योगानंद हीरा ओ विजयनाथ झा" सन गहूमकेँ झाँपि देलकै। बीच-बीचमे जे खादपड़लै तकर तागति सेहो बहुसंख्यक घास द्वारा चूसि लेल गेलै।

7) सुरेन्द्रनाथजी हमर ऐ बातसँ बहुत तामसमे छथि जे " गजेन्द्र ठाकुर मैथिलीक पहिल गजलशास्त्र देला"। सुरेन्द्रनाथजी कहै छथि जे मैथिलीमे बहुत पहिलेसँ गजलशास्त्रछै। हम हुनकर मतक आदर करै छी संगे संग पूछए चाहै छी जे " अराजक गजलकार सभ गजलशास्त्र कहिया लिखला" आ जँ लिखबो केला तकर सूचना सुरेन्द्रनाथ जी नै दऽरहल छथि। हुनका कहबाक चाही जे अमुक लेखक गजेन्द्र ठाकुरसँ पहिने गजलशास्त्र लिखने छथि। बस बात खत्म मुदा ओ नाम नै कहि रहल छथि। ऐ पत्रिकाक माध्यमें हमहुनकासँ आग्रह करैत छी जी जे ओ पाठककेँ मैथिलीक पहिल गजलशास्त्रक नाम ओ ओकर लेखकक नाम कहता। आ तकर बाद गजेन्द्र ठाकुर बला दावा हम अपने खारिज कलेब................. प्रतीक्षामे छी

8) ई जानल बात छै जे मैथिलीमे सरल वार्णिक बहरक अविष्कार मात्र एकसूत्रमे बन्हबाक लेल भेल छै। आ एकर लाभ मैथिलीक नव गजलकार सभकेँ भेलै से पूरा दुनियाँजानि रहल अछि। मुदा सुरेन्द्रनाथजी बिना मूल ग्रंथ, पढ़ने तामसमे आबि लिखै छथि। तँए हुनकासँ गंभीरताक आशा करब बेकार।

9) पद्य बला प्रसंगमे सुरेन्द्रनाथजी अपने ओझरीमे छथि। हुनका बुझबाक चाही जे समस्त लिखित वस्तु काव्यक अंतर्गत आबै छै। बादमे गेय आ सरस काव्यकेँ "पद्य"कहल गेलै तँ शुष्क काव्यकेँ "गद्य"। कोनो निश्चित नियमसँ बान्हल पद्य एकटा विधा बनल जेना कोनो पद्यकेँ दोहाक नियममे दियौ तँ दोहा बनतै, सोरठाक नियममे दियौतँ सोरठा।। तेनाहिते गजलक सेहो नियम छै। आब प्रश्न छै जे जँ कोनो दोहा की सोरठा की कुंडलिया की गजल ओइ निश्चित नियमक पालन नै सकल छै तँ ओ की कहेतै।निश्चित तौरपर ओ सभ पद्ये कहेतै। कारण ओइमे कोनो खास विधाक नियम नै छै मुदा गेयता आ सरसता तँ छैके। मुदा सुरेन्द्रनाथजी एतेक छोट आ सरल बात नै बूझिसकलाह तकर हमरा दुख अछि।

10) सुरेन्द्रनाथजी अपन आलेखमे बहुत दुविधाग्रस्त छथि। कतहुँ ओ लिखै छथि जे गजलमे व्याकरण नै होइ छै, तँ कतहुँ लिखै छथि जे गजलमे व्याकरण नै हेबाक चाही आअंतमे कहै छथि जे मैथिलीक गजलकेँ अपन व्याकरण हेबाक चाही।

बहुत दुविधा छनि सुरेन्द्रनाथजीकेँ मुदा ऐ दुविधामे हम फँसऽ नै चाहैत छी आ तँए सोझे पाठक लग चलै छी......
....

कर्मामृतमे प्रकाशित सुरेन्द्रनाथजीक लेखक कटिंग--

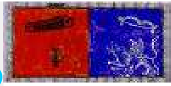


मैथिली गजलक पूंषत्वहीन आलोचना









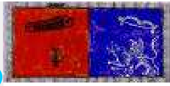






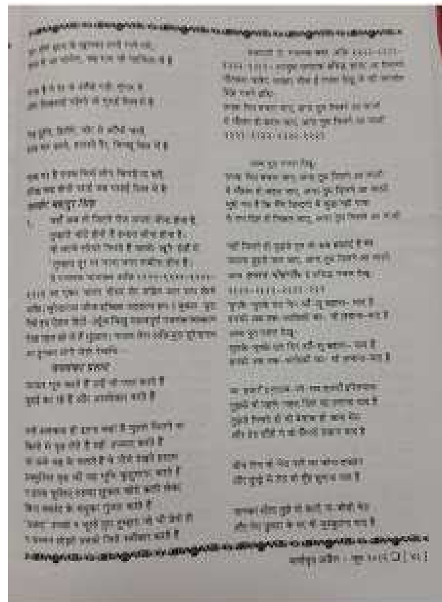


कर्मामृतमे प्रकाशित आशीष अनचिन्हारक लेखक कटिंग--





संशोधनक मतलब विनाश नै होइ छै



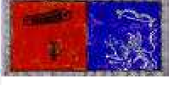
Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner





ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

रवि भूषण पाठक- फसाद आ आनंद (लघु कथा)

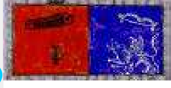
समै काटबा ,बितेबा लेल आदर्श जगह ।ई गाम जत्त' भरि दिन केकरो सँ केकरो फसल रहै ,मारि नइ त' मारिक भूमिका नइ त' मारिक उपसंहार ।कतौ पंचैती ,कतौ उपराग ,नालिश ,कतौ गारागंजन ,कतौ निंदा रसक आनंद ,मुदा सबसँ बेशी आनंद रहै मारि-पीट ,मल्लयुद्ध या फेर दू पाटी क' बीचक सामूहिक संघर्ष । यदि कतौ झगड़ा फसल होए त' किमहरो सँ हूलि जाउ ,केकरो पक्ष ' लियौ ,कुनो बात पर नराज भ' जाउ ,केकरो हां मे हां मिलबू ,मौका देखिके केकरो पर बिगड़ि जाउ,भीड़क आनंद लिय' ।अप्पन माथ-कपाड़ बचबैत केकरो पक्ष सँ लाठी चलबू या उपदेश दिय' मुदा सम्हरि के ,कहियो-कहियो जतरा खराब होइ छैक ,नइ सम्हरै त'भाग-पड़ाउ ।

फसाद

पछिला दू दिन सँ सब ताक मे रहै ...कुनो मौका मिलै आ सधा ली... केओ एक बेर छीकै त' दोसर दू बेर ...कोहुना मारि शुरू भ' जाए..मोर्टन झा एक बेर राम कहलखिन त' सोहन मिसर कें भेलेन जे हमरा खौंझा रहल अछि तें ओ दू बेर राम राम कहलखिन ...यदि दशरथ कुनो भगवानक नाम रहतै छल त' मिश्रजी दशरथो-दशरथ जरूर कहथिन छल ,यदि रावण राम कें हरेने रहतै छल तखन मिश्रजी रावण-रावण जरूर कहथिन रहै ।मुदा राम-राम कहला सँ मोर्टन मिश्र पर कुनो प्रभाव नइ पड़लै ,ओ खौंझाबै लेल कहने छलखिन थोड़कें तें निराश दूनू गुट मारि करबा लेल दोसर बहन्ना बनब' लागलै

फसाद-1

अल्फा मरसैब तामैत रहलखिन आ गारि सुनैत रहलखिन ।बीटा एक बेर गारि दै आ हहा के हँसि पड़ै ,मरसैब उत्तर तामैत रहथिन त' दक्खिन चलि जाथिन ,फेर बीटा दछिनबारी कात मे गड़िया आबै ,मरसैब पूबारी कात चलि जाथिन आ फेर बीटा ससरि के पूबारी कात चलि जाए ।ई परिक्रमा कतेको बेर चललै ,बीटा थाकि जाए त' गामा काज कर' लागै ।मरसैब कुनो तरहे चाहथिन जे आइ मारि नइ फँसै मुदा बीटा आ गामा दूनू भाइ पनपियाइ खेला के बादे आयल छलै ,ओ चाहै छलै जे आइ कोहुना मामला फरिया जाए ,किएक त' आइ मरसैब असगरे छलखिन ,आ मरसैबो आइ एकदम अड्डी गाड़ने छलखिन कि आइ किछ नइ होए ।ताबते मे मरसैबक बेटा प्रोटान बड़हल आबैत देखेलै ,मरसैब कें भेलेन जे आब किछु कएल जा सकैत अछि ,आ ऊ धोती कें कनेक सम्हारि कें बान्हनै शुरू केलखिन ।पूब दिस बान्ह पर एकटा हलचल देखेलेन ,आंखि पोछि के देखलखिन ,शायत बीटा



क' बाप रहै ,मरसैब फेर सँ तामनै शुरू क' देलखिन...

फसाद-2

ई कुनो मीटिंग रहै मंदिर पर ।सब टोलक आदमी जमा भेला ।सरकारी कर्मचारी ,ओकर दलाल ,गामक चौकीदार ,पोस्टमेन ,बैंक मनेजर आदि आदि सेहो रहथिन ।सरकार के पास रहै बहुत रास पैसा ,बहुत रास प्लानिंग ,बहुत रास झोल-झाल ।मीटिंगक अध्यक्ष कहलखिन ' हम पूछि रहल छी ,अहां सब बताबैत चलू '

अस्पताल कत' स्थापित होए?

बभनटोली मे सर

गौशाला किमहर रहतै?

काइथटोली मे सर

बैंक लेल कुन जगह?

रजपूताना सर

आ दूधसंग्रह केंद्र?

भूमिहरटोली मे होए त' केहन रहतै

ई सुनिते दुसधटोलीक लोक ,चमरटोलीक लोक सब धीरे-धीरे घूसक' लागलै ।

मुदा कुरमी टोली आ गुअरटोलीक लोक सब ओहिना मौजूद रहलै ।

सब के लागलै कि मीटिंग आब खतम भ' गेलै ।अध्यक्ष महोदय कार्यवृत्ति भर' लागलखिन आ कहलखिन सब आदमी साइन करू ,तखने गुअरटोलीक एकटा जवान कहलकै हाकिम सब संस्था ओमहरे ल' जेबै कि किछु हमरो आर दिसन रहतै ।अध्यक्ष महोदय कहलखिन बाजू ने जे सर्वसम्मति से अहां सब कहबै से कएल जेतै ।

तावते समवेत स्वर मे खुसूरपुसूर शुरू भ' गेलै ।ऐ स्वर मे जातिक नाम ,लाठीक नाम ,स्वतंत्रता ,विकास आदिक विभिन्न शब्द एक-दोसर पर बजर' लागलै ।एतबे मे के लाठी ,के मूसर ,के कुरसी ,के टेबुल ,के कोरो उठा के एक-दोसर पर चलब' लागलै एकर अलग-अलग लिस्ट छैक ।ई सब लिस्ट थानाक दरोगा संग मे छैक ।घायलक सूची ,मृतकक सूची अखबार मे छापल छैक आ घाव ,दर्द ,बेंडेजक संग पूरा गाम खूनोखून भेल छैक

फसाद-3

दिनेश कहलखिन रै 'राजेश' ,मुदा राजेश के सुनेलए 'रए राइतेश' आ ई सुनिते कहैत छै 'हँ पादेश' ।

दिनेश- की कहलहीं?

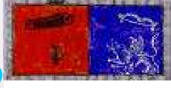
राजेेश- जे तू कहलहीं

दिनेश-एना किएक बाजैत छें?

राजेश-जेना तू बाजै छहीं

दिनेश सोच' लागलै कि रजेशवा एना किएक बाजि रहल छैक ,तखने ओकरा हाथ सँ खुरपी बाल्टीन मे गिर गेलै ।खुरपी देखिते राजेश चिकरैत आबि गेलै दिनेशक सामने

राजेश दूनू हाथ सँ दिनेशक गट्टा धेलकै ,दिनेश ओकरा धकियाबैत ,गट्टा छोड़ब' लागलै ।गट्टा छूटलै तखन राजेश डांड़ ध' लेलकै ,राजेश डांड़ छोड़बै आ दिनेश ओकरा नचाब' लागलै ।दिनेश एकटा बिट्ठू काटलकै त' राजेश



एक्के बेर हाथ छोड़ि देलकै आ अपन दांत ओकरा पीठ मे गड़ा देलकै ।दांत गड़ाबिते दिनेशक देह एक्के बेर झनझना उठलै ,ऊ खुरपी उठेलकै आ उलटा क' के बेंट दिस सँ एक बेंट ओकरा पीठ पर देलकै ।बेंटक मारि खाइते राजेश पलटलै आ अप्पन दांत सँ दिनेशक करेजा मे लगा देलकै ।करेजा मे दांत घूसबैत माउस नोचैत बाहर निकललै आ थूकि के अप्पन लाल मुंह दिनेश कें देखब' लागलै ।खून देखिते दिनेश कें बहुत तामस एलै ,ओ खुरपी छोड़ि अपन घर मे घूसि गेलै आ अन्दर सँ भाला निकालि लेलकै ।भाला देखिते गामक दर्शकवर्ग सक्रिय भेलै ।खुसुर-पुसूरक बाद एकाध आदमी आगू बरहलखिन ,तावते दिनेशक कनियां एकबाइग आबि के एक लाठी राजेशवा कें ध' देलकै आ ओमहर राजेशवाक कनियां काननै शुरू क' देलकै ,पता नइ किएक ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र-१.सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता (लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे) २.दीर्घ कथा-परिस्थिति लेखिका

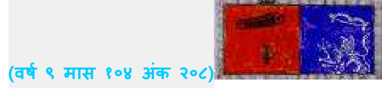
१

सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता

(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)

सौराठ मिथिलाक धरोहर-गाम अछि। केतेको सालसँ चलैत सभा हेतु अइ गाम आ सभा-गाछीकेँ के नहि जनैत अछि? कहल जाइत अछि जे सौराठक मूल नाम ‘सौराष्ट्र’ छल। सौराष्ट्रक अर्थ भेल १०० राष्ट्र। लोक कथाकेँ जँ मानी तँ सौराठ रामायण (हमरा हिसाबे सीतायण) सँ जुड़ल स्थान अछि। लोक कथा के मान्यता में कहल जाइत अछि जे सीताक स्वयंवर सौराठमे भेल छल। ओइ स्वयंवरमे १०० राष्ट्रक राजकुमार भाग लेने छला तँए एकर नाम ‘सौराष्ट्र’ भेल जे बादमे अपभ्रंशित भऽ‘सौराठ’ भेल। ऐ बातकेँ थोड़ेक आरो ठोस आधार देबाक लेल चली लोक मान्यता दिस। कहल ईहो जाइत अछि जे सीता-स्वयंवर आ बिआहमे सात लाख लोक आएल छला। ओतेक मनुख रहत केतए? तँए ऐ लेल एकटा पैघ स्थानक निर्माण कएल गेल जे सभ सुविधासँ युक्त छल। ओ स्थान आब ‘सतलखा’ नामक गामसँ विख्यात अछि। सतलखा सौराठसँ सटले अछि। मात्र तीन किलोमीटरक अन्तर छै।

आब दोसर उदहारण, भगवान शिवक धनुष जतए राखल गेल छल ओ स्थान आब ‘धनुखी’ नाओंसँ जानल जाइत अछि अर्थात धनुखी गाम। राजा जनकक छोट भाए छलखिन कनक। कनक ऋषि छला। ओ अपन आश्रम बनौने छला। ओइ स्थानपर आब ‘कनैल गाम’ बसल अछि। सीता प्रति दिन भोरे अपन संगी-बहिनपाक


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

संग 'मंगलबनी' नामक फुलबाड़ीसँ फूल लोढ़ै छली। मंगलबनी आब अपभ्रंशित भऽ 'मंगरौनी' बनि चुकल अछि आ मधुबनीक बगलेमे ई गाम अछि। भऽसकैत अछि जे सौराठक यएह दन्त-कथा ऐ गामकेँ 'सभा गाछी' लेल योग्य बनेने हुअए? खैर! सभा गाछी पर चर्चा कहिओ बाद में करब।

विद्यापतिक पौत्र बादमे सौराठमे आबि कऽ बसि गेला। ओ सभ अखनो छैथ। हुनकर संतति सब एखनो अहि गौरव के समेटने छथि । जखन हम सौराठ में रही त अही कुलक एक महिला विद्यापतिक बहुत गीत अपन मधुर कंठ स सुनेली । एक गीत जे मोन के थैहर-थैहर क देलक ओ छल:

सुरसरि सेबि मोरा किछुओ ने भेल ।

पुनमति गंगा भागीरथ लैल।

हटबह बनिया हाट बजारे।

अही बाटे अबै छथि सुरसरि धारे।।

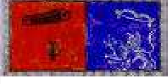
विद्यापति पर सेहो विस्तार स कहिओ आर बात करब. एखन अपन मूल बात के आगा बढ़ाबी।

सौराठ अपना-आपमे रामायण, भगवान शिवक तंत्र आ राजा सलहेसक आख्यानसँ जुड़ल अछि। सौराठ हिन्दू आ मुसलमानक बीच आपसी सम्बन्धक अद्भुत उदाहृण सेहो अछि।

गुजरातमे जे 'सौराष्ट्र' अछि जेतुक्का सोमनाथ मन्दिर विश्व प्रसिद्ध अछि आ द्वादस ज्योतिर्लिंगमे एक लिंग अछि, जेहो लोकधारामे मिथिलाक सौराठसँ जुड़ल अछि। बता दी जे गुजराती भाषामे सौराष्ट्रकेँ सेहो सौराठे कहल जाइत छै।

गुजरातक सौराठ आ मिथिलाक सौराठक मध्य एक कथा ऐतिहासिक अछि। ऐ कथाक इतिहासमे चली। सौराठ गाममे दू गोट ब्राह्मण कुमार भेला- गंगदत्त (गंग देव) आ भागीरथ दत्त (भागिरथ देव)। दुनू सहोदर भाए। नैनेसँ संस्कृतमे उत्कृष्ट आ कर्मकाण्डमे मग्न। एक बेर दुनू भाँइ निआरलैन जे द्वादस ज्योतिर्लिंगक दर्शन करब। फेर की छल दोसरे दिन निकैल गेला। सभ लिंगक दर्शन करैत सौराष्ट्र[1]क सोमनाथ मन्दिरमे पहुँच खूब नियम निष्ठासँ पूजा-अर्चना केलैन। भगवान शिव जेना हुनकर आत्मामे बसि गेलखिन। आब हुनका सोमनाथ छोड़बाक मोने ने होनि! बाह रे भक्त! बाह रे समर्पण! पाँच दिन ओतै रहि गेला। छठम राति सोमनाथ महादेव मन्दिरक देख-रेख करैबला मुखियाक सपनामे आबि कहलखिन-

"दू संस्कारी आ विद्वान् मैथिल ब्राह्मण कुमार अतए आएल छैथ। ई सभ बहुत नीक लोक छैथ। विद्वान त छथिए एक नंबर केर भक्त सेहो थिकाह । अहाँ सभ हिनका लोकैनकेँ निवेदन करू जे ऐ मन्दिरक मुख्य पण्डित केर भार स्वीकार कऽ लेथि।"



..सोमनाथ बाबा ऐ दुनू भाँइक हुलिया सेहो बता देलखिन। जखन मुखिया भोरमे उठल तँ देखलक जे सहीमे दू ब्राह्मण बालक शिवक ध्यानमे मग्न छैथ। हुनका लग गेला। परिचए-पात भेलैन। आ अन्ततः निवेदन केलखिन-

“हे मिथिलाक पण्डित द्वय! ऐ भूमिपर अपनेक स्वागत अछि। सोमनाथ महादेव केर ई इच्छा छैन जे अहाँ सभ मुख्य पुजारिक भार ग्रहण कए हमरा लोकनि के चरितार्थ करी?”

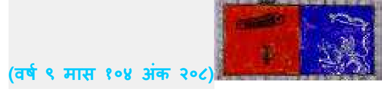
गंगदत्त आ भागीरथ दत्त ऐ भारकेँ स्वीकारि लेलैन। मुदा ई अबस्स कहि देलखिन जे छह मास एकटा भाए सोमनाथमे रहता आ दोसर मिथिलामे आ हरेक छह मासमे पार बदैल जेतैन। दुनू भाँइ आब कर्मकाण्डमे आरो लीन भऽ गेला।

ओइ समय सोमनाथ भारतक सभसँ सम्पन्न मन्दिर छल। प्रतिदिन वनारससँ भरल गंगाजलसँ शिव लिंगक स्नान आ पूजा होइत छल। कहल जाइत अछि जे वनारससँ सोमनाथ धरि पीत-वस्त्र पहीरल भक्तक चेन (श्रृंखला) लागल रहैत छल। सबहक हाथमे स्वर्ण कलश। पहिल बेकती कलशमे गंगाजल भरि लगभग डेढ़ किलोमीटर जा ओ कलश दोसर आदमीकेँ दऽ दइत। दोसर आदमी पहिनहिसँ खाली कलश लेने ठाढ़ रहैत। फेर ओ आदमी भरल कलश हाथमे लऽ डेढ़ दू किलोमीटर चलैत छल आ तेसर आदमीकेँ भरल कलश दैत खाली कलश लैत गंगा दिस आबि जाइ छल। ..अही तरहेँ वनारससँ सोमनाथ धरि मानव श्रृंखलासँ गंगाजल स्वर्ण कलशमे पहुँचै छल। सभकेँ अपन समय बूझल रहइ।

वनारससँ सोमनाथक दूरी अछि १७९२ किलोमीटर। एकर अर्थ भेल जे २४०० स्वर्ण कलश गंगाजल लेल प्रयोगमे अबैत छल आ २४०० पीत वस्त्रमे लोक ऐ कार्यक सम्पादनमे अपन श्रमदान करैत छल।

गुजरात प्रान्तक काठियावाड़ क्षेत्रमे सोमनाथ अछि। प्रतिहार वंशक राजा नागभट द्वतीय ८१५ इसवीमे लाल रंगक पाथर (Red sandstone) सँ एक भव्य आ विशाल मन्दिरक स्थापना केलैन। ई मन्दिर अपन स्थापत्य कला, क्षेत्र गौरव, आ स्वर्ण, चानी, हीरा, एवं अनेक बहुमुल्य पाथर, रत्न, द्रव्य संगे मुद्राक भण्डारण लेल सेहो विश्व विख्यात छल।

महमूद गज़नी (९७१-१०३०) जेकरा ‘महमूद जाबुली’ अथवा ‘यामीन-उद-दवला अब्दुल कासिम महमूद इब्न सेबुक्तेगिन’क नाओंसँ सेहो इतिहासमे जानल जाइत अछि–ओ अपन सेना सबहक संगे भारतक–औझुका गुजरात प्रान्त स्थित–प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिरपर १०२५ ईस्वीमे आक्रमण केलक। प्रारम्भमे मन्दिरक रक्षक-प्रहरी-स्थानीय सेना– आ चालुक्य वंशक राजा भीम प्रथम (काठियावाडक राजा) राजक सेना ग़ज़नीक विरोध करैत लड़ल मुदा अन्ततः हारि गेल। निरंकुश आ जीतक मदमे मातल गज़नी अपन सेनाक संग समस्त सोमनाथ मन्दिरक परिसरकेँ मटियामेट करए लगल। मन्दिरसँ सभ मूर्ति एवं बहुमुल्य वस्तु, हीरा-सोना-चानी-मूंगा-पन्ना-पुखराज-स्फटिक-माणिक्य इत्यादि आर ने जानि की की, सभकेँ लूटलक। मन्दिरकेँ तोड़ि कऽ ध्वस्त कऽ देलक। आ जे कियो ओतए आएल ओकरा मौतक घाट उतारि देलक। भक्त, सेवादार आ पण्डित सभ या तँ भागि गेला वा जे नहि भागि सकला सेहो सभ अपन प्राणसँ हाथ धोलैन आ निर्मम हत्याक शिकार भेला।


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

किछु सेवादार आ मन्दिर संचालन समितिक सदस्य सोमनाथ मन्दिरक लिंग बँचबैक अन्तिम प्रयास केलैन आ हिम्मत करैत गज़नी लग गेला। हाथ जोड़ी विनम्र भावसँ निवेदन करैत कहलखिन-

"श्रीमान! अपने जे ध्वस्त केलौं तइले कुनो बात नहि। आरो अगर हीरा, मोती, द्रव्य जात लेबाक अछि तँ हम सभ आनि दइ छी। जेतेक लिंगमे लागल अछि तेकर ५० गुणा, मुदा लिंगकेँ ध्वस्त नहि कएल जाओ!"

ई बात सुनिते गज़नी क्रोधसँ लाल भऽ गेल। चिचियाक बाजल-

"अही लेल हम युद्ध जितलौं! हम जखन अपन देश आपस जाएब तँ लोक की कहत? कहत ने 'गज़नी बुत पूजक काफ़िरक देवताकेँ बिना ध्वस्त केने आबि गेल?' अल्लाह हमरा कहियो माफ़ नहि करता?"

कहैत गज़नी सभकेँ ओतै मारि देलक। रक्त केर धार बहए लगल...।

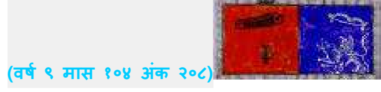
ऐ तरहेँ सोमनाथ मन्दिरकेँ लूटैत काल गजनी लगभग ५०,००० ब्राह्मण एवं हिंदू सबहक नृशंस हत्या केलक। एतेक शोणित बहेलाक बादो गज़नीकेँ मोन शांत नहि भेलइ। लिंगक सभ कीमती वस्तुकेँ समैट अपना कब्ज़ामे लेलक। आ स्वयं अपना हाथमे पैघ हथौरा लऽ शिव लिंगपर दानवी प्रहार तेना करए लगल जेना मदमे पागल भेल हो। प्रहारपर प्रहार! निर्दय प्रहार। निरंकुश प्रहार! आस्थावादी आ मूर्ति-पूजक देवतापर मूर्ति भंजक प्रहार! इतिहासपर प्रहार! वर्तमानपर प्रहार! भविष्यपर प्रहार! संस्कृतिपर प्रहार! संस्कारपर प्रहार! हिन्दू धर्मक भावना आ बिश्वासपर प्रहार! मान्यतापर प्रहार! आरो नहि जानि कथी-कथीपर प्रहार! आब गज़नी सैकड़ो संख्यामे गाइक वद्ध कए मन्दिरक प्रांगनमे भोजन बना अपन आसुरी सेना आ लूटेरा सभ संगे खाए लगल...।

..किम्बदन्तिक अनुसार सोमनाथ शिव लिंगक प्रस्तरक भग्नावशेषकेँ गज़नी अपना संगे लेने गेल। आ ओ अपन शहरक जमा मस्जिदमे ओइ प्रस्तर अवशेषकेँ सीढ़ी बनबैमे प्रयोग केलक। दुनियाकेँ ई बतेबा लेल जे "देखू हिन्दू धर्मक सभसँ पैघ देवताक ऊपर हम सभ लात-दऽ नित्य नमाज पढ़ए जाइ छी।" धन सम्पैतक अतिरिक्त गज़नी अपना संगे हजारक संख्यामे स्त्रीगण एवं बच्चा सभकेँ सेहो गुलाम बना कऽ एतएसँ लऽ गेल।

आब फेर कनी मिथिलाक सौराठ दिस आबी। लोक मान्यता ई अछि जे सोमनाथ महादेवकेँ पहिनहि भान भऽ गेल रहैन जे गज़नी प्रांगणकेँ ध्वस्त कऽ देत। तँए ओ ऐ घटनासँ एक दिन पहिनहि सोमनाथ मन्दिरक पुजारी श्री गंगा उपाध्याय (देव) के रातिमे स्वप्नमे आबि कहलखिन-

"आब हम अतएसँ पलायन कऽ रहल छी। अहाँ जँ हमर पूजा करए चाहै छी तँ हमर निर्माल लऽ लिअ आ अहाँ एकरा जेतए राखब हम ओतइ पहुँच जाएब आ अहाँ हमरा पुनः पूजा-अर्चना करब। हँ, ऐ बातक धियान अबस्स राखब जे केकरो ऐ बातक भान नहि हुअए।"

ई कहि सोमनाथ महादेव अन्तर्धयान भऽ गेला। गंगदेव जखन सुति कऽ उठला तँ सपना जेना सत्य बुझमे आबै लगलैन। मन्दिरकेँ प्रांगनमे जेना भियौन लागए लगलैन। पूजा–पाठ, स्वाध्याय आदि कुनो कार्यमे मोने ने लगैन..! तखन गंगदेव अपन छोट भाए भागीरथदेवकेँ बजेला आ सपनाबला बात सुनेलखिन। सुनिते भागीरथदेव कहलकैन-



"भाय, हमरो बाबा सोमनाथ यएह सपना देला अछि। आब अतए रहनाइक अर्थ भेल अनिष्टकेँ अनेरे निमंत्रण देब।"

ई सोचैत दुनू भाँइ समस्त परिवारक संग शिब निर्मालि लऽ चुपचाप अपन गाम अर्थात सौराठ विदा भेला। सौराठ आबि–एखन जे सोमनाथ छैथ ताही ठाम–शिव निर्मालि राखि पूजा-अर्चना करए लगला। पूजा तँ करैथ मुदा सोमनाथ महादेवक सपनाबला बात केकरो नहि कहलखिन। पछाइत ओइ स्थानपर स्वतः एक लिंग प्रगट भेल। दुनू भाँइ गद-गद भऽ गेला। पूजा पाठमे लीन रहए लगला।

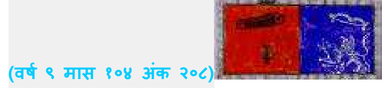
सौराठ एलाक उपरान्त दुनू भाँइक जीवन शैलीमे सेहो परिवर्तन भेल। दुनू भाँइ खेतीक तरफ़ सेहो धियान देमय लगला। अहीठाम दुनू भाँइ अपन-अपन बेवस्था सेहो अलग कऽ लेला। आ तइ निमित्ते ऐ गामक रकबा जे चौदह साए बीघा अछि तेकर बँटबाराक चर्च उठल। दुनू भाँइ सोचलैन जे जमीनक बँटबारा कऽ ली मुदा दुनू भाँइ एहिमे अपनाकेँ असमर्थ पेला। आब की करी? तखन गंगदेव महादेवक आराधना कए हुनकेसँ प्रार्थना केलैन जे उक्त जमीनक बँटबारा करू। लोक मान्यता कहैत अछि जे तखन कमला राता-राती ऐ गामक रकबा चौदह साए बीघाकेँ बीचो-बीच धारक रूपमे आबि सात-सात साए बीघा कएल। जेठ भाय–गंगदेव–केँ कमलाक पूब आ छोट भाए–भागीरथदेव–केँ कमलाक पच्छिम जमीन भेटलैन। जेकर प्रमाण आइयो जिला कार्यालयमे जे उपलब्ध नक्शा अछि, जेकर निर्माण १९०१ इस्वीक जनगणनाक संग भेल छल। तइमे चादर नम्बर-१ पछवरिया शीटबला नक्शापर सौराठ भागीरथ आ पुवरिया शीटबला नक्शापर चादर नम्बर-२ केर सौराठ गंगा अछि। संग-संग दुनूक रकबा सात-सात साए बीघा सेहो अछि।

दुनू भाँइ केकरो सोमनाथ केर सम्बन्धमे बिना बतेने मरि गेला। एकर बहुत दिनक बाद शिव निर्मालिक पूजा धीरे-धीरे बन्द जकाँ भऽ गेल। आ उक्त धरतीपर खेती-बाड़ी तँ नहि, मुदा चरौर बनि गेल। जैपर गामक चरवाहा सभ अपन-अपन माल-जालकेँ चरबैले जाइ छल। अहिना होइत होइत २०० वर्ष बीति गेल।

अही क्रममे फ़कीरचन्द नामक एक सूफी (मुसलमान कृषक, जेकर नामसँ फकोरमा नामक खेत अखनो धरि अछि) अपन टेंगारीसँ उक्त स्थानक झाड़ आ घास पातकेँ साफ़ करै छल। एकाएक फ़कीरचन्दक टेंगारी सोमनाथ नामक महादेवक लिंगपर लगलैन। टेंगारीक चोट लगिते लिंगसँ शोणित बहए लगल। स्थितिकेँ देखते फ़कीरचन्द घबराइत टेंगारी ओतै छोड़ि घर आबि गेला।

फ़कीरचन्द ओना तँ मुसलमान छला मुदा हिन्दू धर्मसँ सेहो हुनका सिनेह कम नहि छेलैन। भोजन कए ओ दिनमे कनीकाल लेल आँखि मुनला तखन हुनका सोमनाथ महादेव स्वप्न देलखिन आ कहलखिन-

"अहाँक टेंगारीसँ जइ पत्थरकेँ चोट लागल ओ साधारण पत्थर नहि अपितु शिव लिंग अछि। हम छी सोमनाथ महादेव। गज़नीक आक्रमणक समय ऐ गामक दू गोट ब्राह्मण गंगदेव आ भागीरथदेव हमर आज्ञापर सौराष्ट्रसँ हमरा निर्मालिक रूपमे अनलैन। हुनकर मृत्युक पछाइत आब कियो हमर पूजा नहि करैए। ओना, अइले गामक लोकक कुनो दोख नहि। अहाँ दूटा काज करू। पहिल तँ ई जे गामक लोक सभकेँ लऽ कऽ अहाँ ओइ स्थलपर जाउ आ लोक सभकेँ कहियौ जे पीसल भाँग, बेलपत्र, गाइक घी, चन्दन, दही आदिक लेपसँ हमर



लिंगकेँ पवित्र करैत। पूजा प्रारम्भ करैथ। अहाँकेँ हम असीरवाद दइ छी जे खूब फली-फूली। मुदा अहाँ ऐ गामसँ थोड़ेक दूर अर्थात १४०० बीघा केर सीमानसँ बाहर बास करू। तुर्क लूटेरा गज़नी हमरा बहुत परेशान केलक आ तंग तंग कऽ देने छल।"

एतेक बात कहि सोमनाथ अन्तर्धान भऽ गेला। फ़कीरचन्द अकचका कऽ उठल आ मुँह-हाथ धोइ कऽ गामक लोककेँ बजा सभ बात कहलक। आब गामक समस्त लोक- बच्चा, स्त्रीगण, बुढ़, युवा सभ चरौर दिस गेल। देखलक जे लिंगसँ शोणित बहि रहल अछि..! लगले पीसल भाँग, बेलपत्र, चन्दन, गंगाजल, गाए घी, दही, मधु, आदिसँ मालिश कए शिवलिंग के पवित्र कएल गेलैन तखन आब लिंगसँ रक्तस्त्राव बन्द भेल।

पूरा गाम ऐ चमत्कारसँ नाचए लगल। ढोल, पिपही, शंख, डमरू, झालि बाजए लगल, भजन कीर्तन शुरू भेल। 'हर-हर बम-बम' केर उद्घोषसँ वातावरण प्रफुल्लित भेल। लोक फ़कीरचन्दक प्रति अपन कृतज्ञता अर्पित करए लगल। फ़कीरचन्दक आँखिसँ खुशीक नोर झहरए लगलैन। मनमे उठलैन- अनेरे किए लोक धर्मक नाओंपर कटै-मरैए? की महमूद गज़नी सोमनाथ मन्दिरकेँ ध्वस्त केलाक बाद अमर भऽ गेल? अल्लाहकेँ आँखिमे तँ ओ गुनहगारे ने भेल..?

फ़कीरचन्दक सभसँ बेसी ई रहै जे हमरे कारण सौराठक सोमनाथ प्रगट भेला। आब जहिया धरि ई शिवलिंग रहत तहिया धरि फ़कीरचन्द अमर रहब। ई ने भेल गांगी-जमुनी तहजीब।

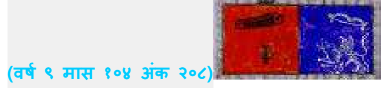
पुन: फ़कीरचन्दकेँ सपनाक दोसर बात मन पड़लैन। मन पड़िते गुनधुनमे पड़ि गेला- बाबा सोमनाथ तँ हमरा ऐ गामक चौहद्दी छोड़ि देमाक लेल कहने छला!आब की करी, केना करी? फ़कीरचन्द असमंजसमे पड़ि गेला- जे गाम हमर जीवन छी ओकरा केना छोड़ब? मुदा नहियोँ छोड़ब उचित नहि। तखन हमरामे आ महमूद गज़नीमे अन्तरे कुन? अगर एक मुसलमान सोमनाथ बाबाकेँ ध्वस्त आ तवाह करबा लेल जानल जाइत अछि तँ एक मुसलमान सौराठक सोमनाथकेँ पुनर्स्थापित करबाक लेल जानल जाएत। आ ओ मुसलमान आर कियो नहि फ़कीरचन्द हएत..।

..सोचैत-विचारैत फ़कीरचन्द दृढ़ मुद्रामे अपन घर जा कनियाँ आ बेटा सभकेँ बैसा कऽ सभ बात कहलखिन। संगे ईहो देलखिन जे 'देख, ई निर्णय हमर अन्तिम अछि। हम पाँच वक्त सभ दिन नमाज पढ़ै छी। सुच्चा मुसलमान छी, तँए हम तँ ऐ गामसँ बाहर जेबे करब।'

..किछु काल ना-नुकर केलाक बाद फ़कीरचन्दक घरवाली, बेटा सभ मानि गेली। तखन फ़कीरचन्द गामक लोककेँ बजेलक आ बाजल-

"देखू, बाबा सोमनाथ हमरा ईहो कहलैन जे हम ऐ गामक अर्थात सौराठक चौहद्दीसँ बाहर अपन घर बनाबी। तँए हम ई गाम छोड़ि १०-१५ दिनक भीतर केतौ दोसर ठाम चलि जाएब।"

समस्त सौराठक लोक फ़कीरचन्दक ऐ तियागसँ मन्त्र-मुग्ध भऽ गेल। गामक लोक अपन कृतज्ञता देखबैत फ़कीरचन्दकेँ जमीनक बदला दोसर गाममे दुन्ना जमीन कीनि देलकै आ ऐठामक घरसँ पैघ आ बेवस्थित घरो


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बना देलकै। फ़कीरचन्द सेहो गामक लोकक उपकार के जीवन पर्यन्त यादि रखलक आ जाबेत धरि जील ताबेत धरि सौराठ सप्ताहमे एक दिन अबस्स अबैत रहल।

फ़कीरचन्दकेँ गाम छोड़ला बाद कुनो मुसलमान ऐ गाममे बसबाक हेतु नहि आएल। गामक लोकके ई कथन छैन जे अखनो धरि ओइ मोजेमे मुसलमान सम्प्रदायक बासकेँ शुभ नइ मानल जाइत अछि। इमहर आबि कऽ एक-दू गोटे उत्साही मुसलमान युवक सभ सड़कक पच्छिम–पोखरौनी टोलपर बसबाक प्रयास केलैन मुदा हुनका सभकेँ एतेक प्राकृतिक उपद्रव भेलैन जे अन्ततः बाध्य भऽ सौराठ मौजासँ हटए पड़लैन।

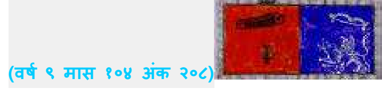
आब बात फेर सोमनाथ महादेवक करी। बहुत दिन धरि ओइ रूपमे बाबाक पूजा होइत रहल। बहुत दिनक बाद ऐठाम एक हकरू गोसाईं नामक सिद्ध महात्मा[2] भेला। ओ अहीठाम कुटिया बना रहए लगला आ सोमनाथ मन्दिरक समस्त परिसरक विकास कार्य जुटि गेला।

सोमनाथ महादेव केर लिंग गर्भ गृहमे बहुत नीचाँ छैन। केतेको बेर गौआँ सबहक बीच विचार भेलैन जे हुनका ऊपर अनैक प्रयास कएल जाए। मुदा तइमे एक बिडम्बना सदिकाल देखल गेल। कोरैत-कोरैत लोक जौं-जौं नीचाँ जाथि तौं-तौं शिव लिंग विशाल होइत गेल। जड़िक अन्ते नहि! सभ गोटे हारि कऽ अन्तिम निर्णय ई लेलैन जे आब कोरनाइ बन्द कऽ दी। सएह भेल, लोक नतमस्तक भऽ भाव-भिभोर होइत ह्रदयसँ शिवक महिमाकेँ स्वीकारलैन। शिव के प्रणाम केलैन।

शिव लिंगक सटल उत्तर दिशामे एक जलधरी अछि। ई जलधरी शिव लिंगक संगहि अंकुरित अछि। ऐ जलधरीक स्रोतकेँ समुद्र तलसँ जुड़ल बताएल जाइत अछि। कहियो काल ऐ जलधरीसँ आपरूपी जल निकैल बाबाक मन्दिरमे प्रवेश करैत शिव लिंगकेँ पूर्णतया जलमग्न कऽ लैत अछि। जल बहुत स्वच्छ आ हरियर कचोर होइत अछि। कियो-कियो ऐ जलक तुलना गंगाजलसँ करै छैथ। ऐ जलक स्वतः प्रस्फुटन होइक कुनो निश्चित तिथि, अवधि अथवा मौसम नहि अछि। कखनो भऽ सकैत अछि। कोनो-कोनो बेर सौन-भादोमे तँ कोनो-कोनो बेर बैशाख-जेठमे सेहो निकलैत अछि। जलक स्वतः प्रस्फुटन केर अवधि दू-सँ-सात दिनक रहैत अछि। ओकर बाद ई स्वतः सुखा जाइत अछि आ जल प्रवाह बन्द भऽ जाइ छै। बेसी काल शिव लिंगमे साँपकेँ लटपटाएल सेहो देखल जाइए।

सौराठ गाममे अनेकानेक विभूति भेला। जइमे महामहोपाध्याय पण्डित राजनाथ मिश्र उर्फ़ रजे मिश्र छह विषयक अद्भुत ज्ञाता। हुनक लिखल कएकटा पोथी अखनो उपलब्ध अछि। ऐ गाममे हुनक लिखल तांत्रिक पद्धतिसँ निर्मित दुर्गा पोथीसँ अखनो धरि दुर्गा पूजा होइत अछि। महामहोपाध्याय डॉ. गंगानाथ झा हिनक शिष्य छलाह । रजे मिश्र काशी वास केलाह आ ओतहि भगबान भोलानाथ के नगरी में गंगा कात में अपन अहि नश्वर काया के त्याग केलनि । ऐ भूमिपर एक विभूति भेला श्री गंगाधर मिश्र जिनकर योगदानक फलस्वरूप चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय केर स्थापना भेल। ऐठाम महान क्रांतिकारी श्री भागीरथ झा भेला,जिनकासँ ब्रिटिश हुकूमत त्राहि-कृष्ण करै छल आ 'शूट एट साईट'क आदेश सेहो देने छल। जे हिनका जीबैत अथवा मुइल पकड़ैबला अथवा जानकारी दइबलाकेँ लेल इनाम देल जाएत...।

..देशक आज़ादीक पछाइत भागीरथ झा जिवकोपार्जन हेतु महाराष्ट्र गेला आ बादमे सौराठ गामक नामक पताका फहरेला आ महाराष्ट्र विधान-सभाक सदस्य चुनल गेला। सौराठमे एक विभूति छला बाबु अबध विहारी झा। ई अंग्रेजक समयमे डिप्टी भेल छला बादमे विधान पार्षद सेहो भेला। ऐ गामक डॉ. सुरेन्द्रनाथ ठाकुर नामक


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रख्यात चिकित्सक भेला। ई जीवन पर्यन्त गाम आ परोपट्टाक लोकक मुफ्त सेवा आ चिकित्सा केलैन। ऐ गामक अन्य विभूतिमे पण्डित फेकू मिश्र, पण्डित हरीशचन्द्र झा, पण्डित कृष्णदेव झा, तांत्रिक नारायण मिश्र तथा डॉ. कलिका दत्त झा आदि प्रमुख छैथ।

सौराठसँ जखन हम आबए लगलौं तखन एक व्यक्ति हमरा भेँट करए एला। ओ गामक विद्यालयमे शिक्षक छला। सौराठ गामक इतिहास आ एकर गौरवकेँ ओ अपन एक कवितामे बहुत सुन्दर वर्णन केने छैथ। ओ कविता हम सुधी पाठक लेल दऽ रहल छी-

तपोभूमि जगजननी मिथिला ह्रदयस्थली जकर सौराठ/

श्री शारद नव निधि केर नैहर संग-संग जते सिधहु आठ//

पूर्व पवित्र धार जीबछ केर उत्तर लोहा ग्राम/

पश्चिम पोखरौनी दक्षिण धनुखिक मध्य ई धाम//

पुन्यस्थल सौराठ सभा मिथिला संस्कृति प्रतिक/

दर्शनीय सुन्दर शिव मन्दिर माधवेस्वरक थिक//

तुर्क लूटेरा महमूद गज़नी जखन उपद्रव कएल /

गुजरातक सौराष्ट्र तेजि शिव पथ सौराठक धैल//

ईस्वी एक हज़ार पचीसिक अछि ई गप्प करू विश्वास/

सोमनाथ शिव कमला केर छारनि पर आबि बनोलनि बास//

जंगल झार मशान मध्य शिव बसला गामक भेल उद्धार/

पुरना मन्दिर बोधकृष्ण सम्प्रति कयलनि अछि जीर्णोद्धार//

दतकट कथा सुनब तँ लागत मुदा जुरायेबदेखने नयन/

कार्तिक जेठक विषम ज्वालामे शिव लै छथि अपनहि जलशैन//

साधक सिद्ध समाज सुधारक न्यायी न्यायविज्ञ भरमार/

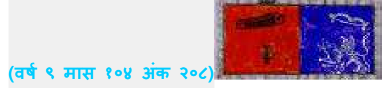
कुशल प्रशासक अभिनेता डॉक्टर प्रबुद्धजन अपरम्पार//

बानी केर बरदानी बेटा मिथिला केर संचित अध्याय/

राजनाथ मिथिला केर गौरव विश्रुत महामहोपाध्याय//

न्यायविज्ञ पण्डित गंगाधर साधक शिक्षा प्रेमीप्रज्ञ/

सूत्रधार सी. एम. कॉलेजक मिथिलावासी जिनक कृतज्ञ//



हरिश्चन्द्र ज्योतिष केर ज्ञाता कृष्णदेव व्याकरणाचार्य/

नाम कतेको गनब अन्त नहि छथि नवीन नामी प्राचार्य//

पद्मकान्त प्रियपात्र समाजक जिनका जन-जन केर आशीष/

सब तरहेँ मिथिला के गौरव सबतरि अपन बढ़ोलनि शीस//

विश्वविदित कवि विद्यापति केर बंसज आबि बनोलनि बास/

के नहि जनैछ शिव उगना भए भेलथि विद्यापति केर दास//

विद्यापति पुस्तक केर आलय केन्द्र चिकित्सा शिक्षा शोध/

संग्रहालय पत्रालय करैछ विकसित गामक बोध//

सोभा सभ्य सुशिक्षित जन-जन मुँह पर चौअनिया मुस्कान/

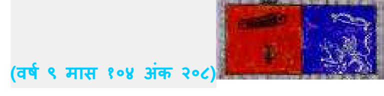
बाल ब्रिद्ध युवजन मृदुभाषी बुझि परत नहि छथि ई आन//

पग-पग पोखरि भव्य शिवालय रम्य बाग़ देखि होइछ हर्ष/

थिक सौराठ गाम सब तरहेँ मिथिला मैथिल केर उत्कर्ष//

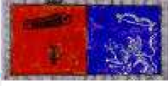
आभार- हम ऐ लेखक लेल श्री शिव कुमार मिश्र, श्री समरेन्द्र नाथ ठाकुर एवं सौराठ गामक महिला आ पुरुषकेँ धन्यवाद दइ छिऐन, किएक तँ हुनके सबहक देल जानकारीसँ ऐ आलेखक रचना कएल गेल अछि। हम अपन कृतज्ञता स्वर्गीय प्रोफेसर बैद्यनाथ सरस्वती के प्रति अर्पित करैत छी कारण ओ इंदिरा गाँधी राष्ट्रिय कलाकेन्द्र में unesco चेयर केर प्रोफेसर छलाह आ हम unesco स्कॉलर। unesco –UNDP और इंदिरा गाँधी राष्ट्रिय कलाकेन्द्र के सम्मिलित प्रयास स भारत केर १०० गामक संस्कृतिक आ संरचना केर अध्ययन करक रहैक. डॉ. कपिला वात्स्यायन आ प्रोफेसर सरस्वती हमरा कहलनि जे अहाँ एकटा एहेन गामक अध्ययन करू जकरा सब स्कॉलर आधार मानि काज करथि आ १०० गामक काज संपन्न हो. हम तुरते सौराठ केर नाम लेलौ आ दुनु गोटे स्वीकार क लेलनि.

ooo



[1] गुजरातक सौराष्ट्र

[2] बबाजी


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA



United Nations Educational, Scientific and C
OFFICE OF THE UNESCO REPRESENTATIVE TO BHUTAN, INDIA, MA
ASIA – PACIFIC REGIONAL BUREAU FOR COMMUNICATION AN

TEL. : 91-11-26713000
FAX : 91-11-26713001, 91-11-26713002
E-MAIL : newdelhi@unesco.org
INTERNET : http://unescodelhi.nic.in

UN
B –
Ne
Ind

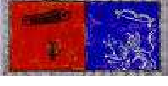
2 July

TO WHOM IT MAY CONCERN

Dr. Kailash Kumar Mishra has been known to me as a sincere hardworking and original scholar since 1998. He had prepare village report of Saurath - a heritage village of Mithila, Bihar u UNDP-UNESCO-IGNCA Project on **VILLAGE INDIA in 1999** Mishra was used by several scholars working in this project a to arrange the data in the universal pattern.

Later, when UNESCO and Indira Gandhi National Centre for to quantify all of 87 village reports of the project in a system style, Dr. Mishra was assigned to develop a universal forma format of presentation could be deemed very good. Clear, c understand even to a layman, it gives not only the demogra ethnology, but also explains away the myths related to the v the psyche.

I wish him success in his future endeavours and recommen any research/academic post for which Dr. Mishra may be a

मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

२

दीर्घ कथा

परिस्थिति लेखिका

राघव परेशान छला। सरिपहुँ दिल्लीसँ शोधक प्रक्रियामे दरिभंगा जेबाक छेलैन। दरिभंगा गेला। ओतए प्रोफेसर सुधाकर ठाकुरजीक निवासपर पहुँचला। सुधाकर पचास वर्षीय श्रोतीय ब्राह्मण छैथ, कारी भुजंग। डेढ़ आँखि। कुनो अफ्रिकन जकाँ बड़का बरी सन बिदरल ठोर। कँचियाएल नयन। तइमे बिना ढंगसँ धोल आ बिना आयरन कएल अंगा, अंगाक बाँहिक एक बटम टुटल। एक हाथमे अंगाकेँ मोड़ने आ दोसरमे बटम लगेने। पएरमे कोयला-मजदूर जकाँ गन्दगी सटल आ दुनू एँड़ीमे छँहोछित बेमाए फाटल। ऊपरसँ एकटा प्लाष्टिकबला चप्पल पहीरने। मुँहमे पान ठुसने। पानक दाग समस्त वस्त्रपर चकचकाइत...।

राघवकेँ भेलैन, हे भगवान! कोन मनुख-लग आबि गेलौं!! मुदा करितैथ की। लचार छला राघव। आधा मनसँ राघव प्रोफेसर सुधाकरकेँ चरण-स्पर्श केलैन। सुधाकर बहुत प्रसन्नतासँ राघवकेँ आवभगत केलखिन।

प्रोफेसर सुधाकरकेँ दरिभंगामे भव्य तीन मन्जिला मकान छैन। पैघ क्षेत्रमे बनल। मकानक आगूसँ पक्की-सड़क आ पाछूसँ पोखैर घेरल। प्रांगणमे प्रचुर खाली धरती, जइमे आम, जामुन आ लीचीक गाछ चतरल। घरक काते-कात गेना, गुलाब, अड़हुल इत्यादि फूलक अतिरिक्त तुलसी, पुदिना लागल। परिसरक मध्यमे झबड़ल नीमक गाछ जे छाहैरसँ परिपूर्ण छल।

निच्चासँ दू मन्जिल मकानकेँ प्रोफेसर सुधाकर कुनो आवासीय विद्यालयक छात्रावासक हेतु दऽ देने छेलखिन। तेसर मन्जिलमे स्वयं पत्नी-नन्दिता, पुत्र- अमरेश आ विमल संग रहै छला। पत्नी छेलखिन पैंतीस बर्खक। जेठ पुत्र सोलह बर्खक आ छोट तेहर बर्खक। घरमे प्रवेश करैत राघवकेँ एना बुझेलैन जे नर्कमे आबि गेलौं। घर सभ धुरा-गर्दासँ भरल। बाथरूम गन्हाइत। भीजल कपड़ा सभ तीन-चारि दिनसँ जेना पड़ल हो। बाथरूमक बाहर चारि-पाँचटा आँठि थारी पड़ल। थारीमे भात,तीमन आदि आँठि गन्हाइत, माछी भिनकैत..!

राघव एकटा कुर्सीमे बैसला। कनी कालमे प्रोफेसर सुधाकर जीक दुनू बालक आबि राघवकेँ पएर छूबि प्रणाम केलकैन। जेठ बालकक मुँह-कान कुनो रूपे एक सभ्य प्रोफेसर केर संतति नहि लगै छल। जेठ पुत्रक खिखिर जकाँ मुँह, ढाबूस बेंग सन पीअर-पीअर-छोट-छोट दाँत। शरीरक कांति हदसँ बेसी कमजोर। जेना यक्ष्मा रोगसँ ग्रसित होथि। फाटल हाफ पेन्ट आ नव अंगा पहीरने। गरदेन आ कनपट्टीपर मैल जमल। अपरोजकक नेता। छोट बालक मोट, मुदा मुँह-कान शोभनगर नहि। रीक्ष जकाँ झोंट। बुझाइत एना जेना कहियो कंगही आ तेलक भैंट नहि भेल होइ। दुनू भाँइमे एक अन्तर अबस्स बुझना गेलैन राघवकेँ- जेठ कनी सोझ, निश्छल तँ छोट कनी कईयाँ आ मतलबी।

एकटा पनरह बर्खक बच्चिया सुधाकरजी ओतए घरक-काज करै छलि, जेकर छीनकाय काया। आँखिमे काँची पड़ल। नाकपर सुखाएल पोटाक मोट मुल्लमा मोती जकाँ लागल। आँगुरक नह-सभमे कारी-कारी मैल भरल। ओकर नाओं छिऐ बेबी। प्रोफेसर सुधाकर बेबीकेँ कहलखिन-

"बेबी, कनी राघवजीकेँ एक गिलास सुसुम पानि पीआ। फेर नेबोबला चाह बना। वेचारे थाकल छैथ। जाबेत चाह पीता, स्नान-ध्यान करताह, ओतबा कालमे भोजनक व्यवस्था कर।"

प्रोफेसर सुधाकर अपन छोट पुत्रकेँ कहलखिन-

"बाऊ, कनी हम्मर पर्ससँ बीस टाका लऽ चौकपर सँ थोरेक खीरा, चुकुन्दर, मुरई, धनी पात आ हरिअर मिरचाइ लऽ आउ। नेबो घरेमे अछि।"

थोरबे कालमे बेबी एक गिलास सुसुम पानि लेने राघव लग आबि गेलैन। राघव तँ गन्दगीसँ परेशान छला, मुदा हारि मानि नाक आ आँखि मुनि पानि पीब गेला। प्रोफेसर सुधाकर केर बाथरूम भारतीय रेलक जेनरल बोगीक बाथरूमसँ कुनो दृष्टिकोणे नीक नहि छेलैन। मुदा 'मरता क्या नहीं करता'केँ स्मरण करैत राघव बिना कुनो प्रश्न केने बाथरूम दिस विदा भेला। स्नान एवं अन्य नित्य-क्रियाकेँ सम्पादित करबाक लेल यद्यपि राघव साबुन, सेम्पू, पेस्ट, अंगपोछा इत्यादि अपना अटैचीसँ निकालि ओतएसँ निकालला।

स्नानादिसँ निवृत भऽ राघव बाहर एला तँ देखै छैथ जे प्रोफेसर सुधाकर केकरोसँ बात फोनपर कऽ रहल छैथ। कनी-कालक पछाइत बातकेँ विराम दैत सुधाकर कहलखिन-

"राघवजी, अहाँक पत्नी सहजन्यासँ बात भऽ रहल छल। ओ कहै छेली जे राघव, बाहरक भोजन नहि पसिन करै छैथ आ कनी लजकोटर सेहो छैथ। भूखो लगल रहतैन तँ बजता नहि। तँए अपने हुनकर भोजनक बेवस्था शीर्घातिशीघ्र कऽ दियौन।"

एतेक बात कहैत प्रोफेसर सुधाकर बेबीकेँ कहलखिन-

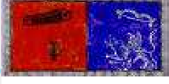
"बेबी छैँ। राघवजी भूखल-पीआसल छैथ। एखनहि हिनक पत्नी- सहजन्यासँ फोनपर बात भेल छल। जल्दी-जल्दी भोजन तैयार कर।"

ई कहैत प्रोफेसर सुधाकर अपन छोट पुत्रकेँ बजेलखिन-

"विमलजी! जल्दी आउ आ सलादक सामग्री लेने आउ। कीचनक दछिनवरिया कोणमे तेजहा चक्कु अछि सेहो लेने आएब। जाबेत धरि बेबी भोजन तैयार करैत अछि ताबेत धरि हमरा लोकैन सलाद तैयार कऽ लैत छी।"

विमल अपन पिताक आज्ञाकेँ पालन करैत सलादक सामग्रीकेँ एकटा सूपमे लऽ संगे चक्कू, थारी आदि सेहो लऽ अपन पिता लग आबि गेला।

प्रोफेसर सुधाकर सलाद काटए लगला। ओना सलादक सामग्री नीकसँ धोल नहि छेलैन। राघवकेँ मने-मन अपन सहचरी सहजन्यापर धोर तामस उठए लगलैन। सोचलैन-



"बेकारे ऐ प्रोफेसर सुधाकरकैँ ई किएक कहि देलखिन जे राघव घरक भोजन करता? कनी-मनी खा लितौं आ बादमे चुपचाप टावर केर कुनो भोजनालयमे भोजन कऽ अपन जीवन-रक्षा करितौं। मुदा सहजन्या तँ सभटा चौपट्ट कऽ देली! हे भगवान, आब की हएत? चण्डाल सोइत प्रोफेसर भाय अपना घरक अपवित्र आ गन्हाएल भोजनसँ हमर जान लऽ लेत! दुख- हरहु हारकानाथ शरण मैं तोरी।"

आ देखते-देखते भोजन तैयार भेल। सचार लगलै। संगे-संगे राघव आ प्रोफेसर सुधाकर भोजन करबाक लेल बैसला। सुधाकर अपन जेठ पुत्र- अमरेशकैँ कहलखिन-

"बाऊ, जल्दीसँ तीन-चारि तरहक अँचार लाऊ। राघवजी छब्बीस घण्टासँ भूखल छैथ।"

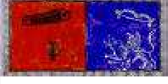
खैर! राघव नहियोँ चाहैत भोजन केला। ओना, भोजन ओतबो अधला नहि जेहेन राघव सोचने रहैथ। हँ, सुचिताक अभाव अबस्स रहइ। तरकारी सभमे नोन कनी अधिक जरूर रहइ। भोजन केला पछाइत राघव प्रोफेसर सुधाकरकैँ संगे एक पैघ कमरामे गेला। कमरामे ओछाइन इत्यादि राखल रहइ। दुनू गोरे बैसला। थोड़बे कालमे एक महिला नीक वस्त्र पहीरने, खुजल केसक संग ओतए पहुँचली। सुधाकर उठि एक कुर्सीपर ओहि महिलाकैँ इशारासँ बैसबाक निवेदन केलखिन। महिला प्रोफेसर साहैबकैँ इशारासँ सम्मान करैत एक कुर्सीपर जा सहज भावसँ बैस गेली। आब सुधाकर राघव दिस मुखाकृत होइत बजला-

"राघवजी, ई छैथ नन्दिता। हमर पत्नी। साहित्यमे अभिरूचि छैन। कविता, गल्प्, उपन्यास आदि लिखबो करै छैथ। समाजशास्त्रसँ एम.ए. छैथ। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयसँ समाजशास्त्र विभागसँ 'नारी मनोदशा' केर ऊपर पी.एच-डी कऽ रहली अछि। थेसिस लगभग तैयार छैन। सभ चीज ठीक रहलैन तँ दू मासक भीतर जमा भऽ जेतैन...।"

महिला मुस्कियाइत रहली। नन्दिता आ राघव लगभग उमेरमे समवयस्की, मुदा राघव प्रोफेसर सुधाकरकैँ गुरु तुल्य मानैत सदिकाल हुनकर चरण-स्पर्श करैबला, तँए मर्यादाक पालन करैत नहियोँ चाहैत राघव उठि कऽ नन्दिताक पएर छूबि प्रणाम केलकैन। नन्दितो अदहे मनसँ अभिवादन-स्वीकार करैत राघवकैँ पीठ थपथपा असिरवाद दऽ अपन गुरु-पत्नी बनबाक भारसँ उरीन भेली।

मुदा नन्दिता देखए-सुनएमे अद्भुत सुन्नैर। छरहर देह। कारी केस जे ठेहुनकैँ छुबैत...। नन्दिता सफेद रंगक साड़ीमे छेली। जइमे किछु डिजाइन बनल छेलैन। कम्प्युटराइज्ड पेर्टन, जे साड़ीकैँ आकर्षक आओर नन्दिताक सौन्दर्यकैँ बढ़ा रहल छेलैन। नन्दिताकैँ देख ई लगै छल जेना नन्दिता सोभाव आ संस्कारसँ आधुनिकी छैथ। कलरलेस लीपिस्टिक लगेने, आँखिमे सहनाज हूसेनक काजर, आ केस कुनो महग सेम्पूसँ धोने। केसक चमक ऐ बातक प्रमाण छेलैन। अधकटी बेलौजसँ नन्दिताक काँख देखाइत रहैन आ ओकरा अकारणे नहि झाँपए चाहैथ। राघवक धियान ओइ दिस चलिये गेलैन। समुन्नत वक्षकैँ तुरत बाद काँखक हस्यावलोकन कनी मनकैँ झंकृत करए बला लगलैन। नन्दिता कुनो युक्षिणीक मूर्तिसँ कम नहि छेली। कियो नइ कहि सकै छल जे पैंतीस बर्खक भऽ गेल छैथ आ दू गोट पुत्रक माता थीकीह। अपाङ्गस्तक सुन्दरताक खान बुझाइत नन्दिता।

बादमे प्रोफेसर सुधाकर नन्दिताकैँ राघवक परिचय दैत कहलखिन-



"राघवजी, संस्कृत आ कलाक बहुत नीक विद्वान छैथ। संस्कृतक संग-संग हिन्दी, मैथिली आ अंग्रेजी साहित्यपर समान अधिकार छैन। समाजशास्त्र,नृतत्त्वशास्त्र, कला-इतिहास, संग्रहालय विज्ञान, पुरातत्व आ सौन्दर्यशास्त्रमे गहन अभिरूचि रखै छैथ राघवजी। बहुत नीक लिखैत छैथ आ बहुत नीक बजैत छैथ। UNESCO-UNDP आदि संस्थाक हेतु भारतीय संस्कृति केर अनेको विषयपर लिखै छैथ, डक्युमेन्टरी फिल्म बनबैत छैथ। कविता, गल्प आदि सेहो लिखैत छैथ। मैथिली संस्कृतिपर कार्य करबाक हेतु मिथिला आएल छैथ। UNESCO-UNDP परियोजना लेल भारत सरकारक सहयोगसँ काज कऽ रहला अछि। एतए बीस-पचीस दिन रहता। दिनमे मिथिलाक अनेक गाम जेना- सौराठ, सरिसब पाही, सतलखा, अन्धराठाढ़ी, पुनौराधाम आदिक भ्रमण करता आ अधिकांश दिनमे रातिक दरिभंगा अपने सभ लग रहए चलि औता। किछु-किछु गाममे हमहूँ हिनका संगे जाएब। बहुत किछु सीखबाक अछि राघवजी सँ आ भारतीय लोक संस्कृतिसँ।"

नन्दिता राघव केर प्रशंसासँ बड्ड प्रभावित भेली। राघव दिस आनन्दक भावसँ देखलखिन। बजलैथ-

"तखन तँ हमहूँ जखन-कखनो राघव उपलब्ध रहता तँ अपन साहित्य आ साहित्य-लेखन केर विधापर विस्तृत चर्चा हिनकासँ कऽ सकै छी?"

आब राघव बजला-

"किएक नहि मैडम! हम अहाँक साहित्य पढ़ि आ ओइपर चर्च कय अपना-आपकेँ धन्य बुझब! अहाँसँ बहुत किछु सिखबाक अवसर भेटत। शैली, उपमा,अलंकारक प्रयोग आ बिम्बक विधानक जानकारी भेटत। हम तँ सौखिया लेखन करै छी साहित्यमे। संस्कृति आ मानव विज्ञानसँ समय नहि निकालि पबैत छी। ओना ईहो बता दी जे हमरा सम्बन्धमे श्रीमान कनी अधिक बता देलाह। हम तँ कला-संस्कृति आ मानव विज्ञानक अति-समान्य छात्र मात्र छी।"

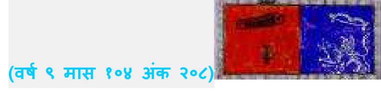
"अहाँसँ भेँट भेल तँ हम अपना आपकेँ उत्साहित बुझै छी।"

–स्वत: बजली नन्दिता। ई कहैत नन्दिता उठि कऽ अपन शयन कक्षमे गेली आ एकटा चानीक प्लेटमे लौंग, इलायची, सुपारी, सौंफ, नारिकेल इत्यादि लऽ कऽ पुन: लगमे आबि, प्लेट राघव दिस बढ़ा देलखिन आ पुन: अपन कुर्सीपर बैस रहली। राघव प्लेटकेँ प्रोफेसर सुधाकर दिस बढ़बैत बजला-

"श्रीमान, पहिने अपने लेल जाओ।"

प्रोफेसर साहैब हाथक इशारासँ राघवकेँ सिनेहक आदेश दैत पहिने लेबाक निर्देश देलखिन। सिनेहादेशक सम्मान करैत राघव प्लेटसँ दछिनी आ कनी सौंफ लऽ लेलैन।

थोड़े कालक बाद नन्दिता पुन: अपना कक्ष दिस गेली। दस मिनट लगेलैन आ आपस हाथमे पान बनेबाक तमाम सामग्री लय अनलैथ। अपन कुर्सीपर आसन ग्रहण करैत पान लगबए लगली, निपुणताक संग। राघवकेँ पुछलखिन-



"केहेन पान खाएब राघवजी? कुन जर्दा एवं अन्य चीज? कुट्टीबला सुपारी की सरौतासँ छल्ला बनल?"

राघवकेँ नन्दिताक आवभगतक स्टाइल नीक लगलैन, बजला-

"मैडम, हमरा क्षमा करू। हम कुनो तरहक पान नहि खाइ छी। श्रीमानकेँ दियौन आ स्वयं खाउ पान।"

नन्दिता आब एक खिली पान लगा प्रो. सुधाकरकेँ दऽ देलखिन आ दोसर खिली स्वयं लऽ लेली। पानक डालीसँ प्रो. सुधाकर अपना हाथे कारी-पीअर रंगक जर्दा अपने इच्छे लऽ लेलैन। नन्दिता सेहो एकटा छोट खिल्ली अपना लेल बनेली आ बिना कथ के सुपारी एक नान्हिटा टुकड़ी दाँत तरमे ग्रहण केली। थोड़बे कालक पछाइत नन्दिता प्रो. सुधाकरकेँ कहलखिन-

"बुझलौं की एगो बात?"

प्रो. सुधाकर-

"की? कहू ने?"

नन्दिता-

"ई पानक खिल्ली हमर जिनगीक अन्तिम, पानक खिल्ली थीक। आब हमहूँ पान नहि लेब। अगर राघवजी बिना पान खेने रहि सकै छैथ तँ हम किएक नहि?"

ऐ बातपर राघव विनम्रता पूर्वक बजला-

"नहि नहि। ऐमे कुनो महानताबला बात नहि छै, मैडम। ई तँ अपन पसिन आ ना पसिनपर निर्भर करै छै। हमरा पान नहि नीक लगैत अछि तँए नइ खाइ छी।"

बिच्चेमे प्रो. साहैब बाजि उठला-

"देखू नन्दिता! अगर अहाँ पानक तियाग करए चाहै छी तँ अबस्स करू। ई उत्तम निर्णय हएत। एहनो भऽ सकैत अछि जे किछु दिनक बाद हमहूँ पान तियागि दी।"

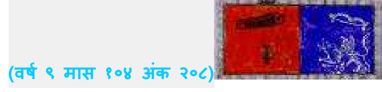
आब राघव गद्-गद् भऽ गेला। गदगदाइत बजला-

"श्रीमान आ मैडम, ओना अगर अहाँ लोकैन पान छोड़ि दी तँ नीक बात। सुपारी, जर्दा इत्यादिक कारणे पान आजुक युगमे माहुर बनि चुकल अछि। डाक्टर तँ एतेक तक कहै छैथ जे Oral Cancer केर प्रमुख कारणमे एक कारण पानो खाएब छी।"

राघवक कथनकेँ स्वीकृति प्रोफेसर सुधाकर आ नन्दिता अपन-अपन गरदेन हिला देलखिन। राघवकेँ नीक लगलैन।

एकाएक नन्दिता राघव दिस देखैत बजली-

"राघवजी, एक बातक निवेदन करी?"



राघव-

"निवेदन की मैडम, आज्ञा करू?"

नन्दिता-

"कुनो आज्ञा नहि। सिर्फ छोट-छीन निवेदन।"

राघव-

"कहू ने मैडम।"

नन्दिता-

"हमरा अहाँ मेडम नहि कहू। कुनो आरो नामसँ सम्बोधित करू। नन्दिता कहि सकै छी।"

राघव-

"नाम लऽ कऽ केना बजाउ? अहाँ गुरुपत्नी छी।"

प्रोफेसर सुधाकर निराकरण करैत बजला-

"सुनू ने राघवजी। अहाँ तँ हमर छोट भाए जकाँ छी। तइ दृष्टिकोणसँ नन्दिता अहाँक भाउज भेली। अगर अहाँ चाही तँ हिनका नन्दिता भाभीक नामसँ सम्बोधित कऽ सकैत छिऐन। नन्दितोकैं हमरा जनैत ई सम्बोधन नीक लगतैन।"

नन्दिता-

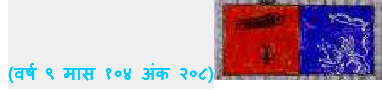
"हँ हँ। बिल्कुल ठीक शब्दक चयन भऽ गेल। राघवजी, आब अहाँ हमरा नन्दिता भाभी कहि सम्बोधित करू। हमरा बड्ड नीक लागत। मैडमकैं भारसँ हम दबल जा रहल छी।"

मन्द-मन्द मुस्कीसँ मुस्कियाइत राधव अपन सहमति देलखिन-

"ठीक छै। नन्दिता भाभी अहाँ लोकैनकैं जेहेन आज्ञा हुअए हमरा स्वीकार्य अछि।"

हलाँकी ऐ शब्दाबलीसँ राघव सेहो मने-मन पुलकित छला। हुनका आब लागए लगलैन जे आब कनी नन्दिताक साहित्य बिना कुनो विशेष मर्यादाक बन्धनसँ उवैड़ जाएब। शायद ई एक नव रस्ता प्रशस्त कऽ रहल छल। नन्दिताक चेहरा सेहो चमैक रहल छेलैन। हलाँकी प्रोफेसर सुधाकर कहि नहि किए, कनी परेशान भऽ रहल छला।

आब प्रोफेसर सुधाकर कहलखिन-



"राघवजी अहाँ थाकल छी। पहिने कनी आराम कएल जाउ। साँझमे छह बजे धरि हमरा लोकैन बैसब आ आगाँ केना कार्य करबाक अछि। कुन गाम कहिया जेबाक अछि, किनकासँ भैँट करबाक अछि आदि विषयपर विस्तारसँ चर्चा कऽ सर्वेक्षण केर ब्लू प्रिण्ट तैयार कऽ लेब।"

राघवजी सूति रहला...।

साँझमे साढ़े तीन बजे राघव जागि गेला। कनी कालमे प्रो. सुधाकर केर छोट बालक विमलेश एलखिन। विमलेश राघवकेँ पुछलखिन-

"ककाजी, जल लबैत छी?"

राघव गरदेन हिला स्वीकृति दऽ देलखिन। विमलेश पानि अनला। राघव पानि पीब लेला। पानि पीबते मन हर्षित भेलैन। विमलेशसँ स्कूलक पढ़ाइ आदिपर विचार करए लगला। विमलेश एक-नम्बर-के गपोड़ी, बात करैमे माहिर, बूढ़ जकाँ सभ बातकेँ रचिया-रचिया सुनबए लगलैन। राघवोकेँ कुनो खराप नहियेँ लागि रहल छेलैन। पनरह मिनटक बाद अमरेश सेहो ट्यूशन पढ़ि कऽ आपस आबि गेला। विमलेश आ अमरेश अपन-अपन कथा सुना कऽ राघवकेँ समय बिता रहल छेलखिन।

कनी कालक बाद प्रोफेसर सुधाकर आँखिकेँ हाथसँ पोछैत धड़फड़ाएल पहुँचला। कहलखिन-

"राघवजी, उठि गेलौं? नीकसँ नीन भेल किने?"

राघव-

"हँ श्रीमान, खूब सुतलौं। तमाम थकाबट दूर भऽ गेल। आब तरोताजा भऽ गेल छी। अपनेक बालक सभ बड्ड नीक छैथ। बीस-पच्चीस मिनटसँ हिनका लोकैनसँ वार्तालाप कऽ रहल छी। नीक लागि रहल अछि।"

आब चाह आबि गेल छेलैन। चाहक संगे-संग नन्दिता सेहो आबि गेली। कहि नइ किएक नन्दिताकेँ देखते-मातर राघवमे आश्चर्यजनक स्फूर्ति अबि गेलैन। सभ कियो चाह पीलाह। राघव प्रोफेसर सुधाकरजीक संगे Fieldwork केर Blie Print तैयार करए लगला। बीच-बीचमे नन्दिता दिस धियान चलि जाइन। ब्लू प्रिंट तैयार भऽ गेलैन। निर्णए लेलैन जे ऐगला दिन सात बजे भोरमे सौराठ गाम लेल प्रस्थान करता।

आब राघवआ प्रो. सुधाकर बजार हेतु विदा भेला। दरिभंगामे सुधाकर राघवकेँ किछु प्रतिष्ठित साहित्यकार, इतिहासकार, संगीतकार आदि लग लऽ गेलखिन। राघवकेँ नीक लागि रहल छेलैन। जानकारी प्राप्त भऽ रहल छेलैन। साँझमे आबै काल जीबैत रेहु माछ कीनलाह। पैसा राघव देलखिन।

माछक पाकमे नन्दिता सेहो संलग्न भेली। प्रो. सुधाकर सेहो लागल छला। माछक मसाला पीसबाक कार्य सेविका-बेबी कऽ रहलि छलि। राघव सेहो ओतै ठाढ़ भऽ गेला। पूरा पीकनिकक माहौल बनि गेल छेलइ। विमलेश चुपेचाप राघवकेँ कानमे कहलखिन-

"जनै छिऐ काकाजी, आइ माँ पहिल बेर कीचेनमे घुसली अछि। पापा आ माँ दुनू गोरे पाक विद्यामे केतेक नीक लागि रहल छैथ।"

राघव केवल एक मिसिया हँसि कऽ बातकेँ ओतै समाप्त कऽ देला। भोजन तैयार भेलइ। सभ गोरे संगे भोजन करै गेला। रातिमे भोजनमे सुचिता आ सचारमे श्रृंगार बुझेलैन। भोजन करै काल प्रो. सुधाकर नन्दितासँ कहलखिन-

"आमिल केतएसँ आएल छल?"

नन्दिता आनन्दित स्वरमे बजली-

"माँ भेजने छेली। पनरह दिन भऽ गेल। भेल जे राघवजीकेँ मिथिलामबला माछ बना कऽ खुएबैन। तँए ऐ माछमे पीऔज, लहसुन नहि देल अछि। टमाटरक बदला आमिल, पिऔज, लहसुनक बदला हींग, दही आ पुश्तादाना।"

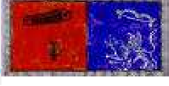
सुआद बिल्कुल अलग आ चहटगर। राघव भरि इच्छा भोजन केला। एहेन माछ खेबाक अवसर राघवकेँ जीवनमे पहिल बेर भेल रहैन।

भोजन केला बाद राघव सूति रहला। दोसर दिन साढ़े छह बजे प्रात: नहा-धो कऽ राघव तैयार छला। राघव आ प्रो. सुधाकर चूरा-दही-चीनीक जलपान कए सौराठ लेल विदा भेला। सौराठक यात्रा सफल रहलैन। सौराठसँ साढ़े चारि बजे साँझमे दरिभंगाक लेल विदा भेला। दरिभंगा अबिते नन्दिता अपनेहाथे चाह बनेली। सभ कियो संगे चाह पीला।

दोसर दिन सरिसब-पाही जेबाक छेलैन। प्रति-दिन भोरे सात बजेक यात्रा कुनो-ने-कुनो गाम लेल निश्चित रहैन। तेसर दिन प्रोफेसर सुधाकर केर एकाएक जानकारी प्राप्त भेलैन जे कॉपी-जाँच करबा लेल विश्वविद्यालय केर अन्य शैक्षणिक सहयोगी संगे हुनको बनारस हिन्दु विश्वविद्यालयमे पनरह दिन धरि सेन्ट्रलाइज्ड कॉपीक चेकिंगमे भाग लेबाक छैन। प्रो. सुधाकर किंकर्तव्यविमुढ छला। राघव सेहो परेशान छला। भेलैन, बिना प्रो. सुधाकरसँ काज केना हएत? मुदा अपन पनरह बर्खक अनुभवकेँ स्मरण केला पछाइत मनमे भेलैन- सभ किछु सम्भव छै। सोचलैन- आखिर हमहूँ तँ छी अही माटि-पानिक संतति। फेर चिन्ता कुन बातक? जे हेतै देखल जेतइ। हिम्मत देखबैत बजला-

"श्रीमान् अपने अबस्स जाउ। हम्मर मार्ग प्रश्स्त भऽ गेल अछि। अहाँ सभटा दिशा-निर्देशन कऽ देने छी। हम कार्य कऽ लेब। हमरा जेबासँ चारि-पाँच दिन पहिने अपने आपस आबि जाएब। बँचल-खुचल डाटा दुनू गोरे मिल कऽ कऽ लेब।"

प्रो. सुधाकर राघव केर ऐ तर्कसँ सहमत भेला आ बनारस जेबाक तैयारी करए लगलैन। ऐगला दिन भोरे सात बजे राघव कुनो गाम Fieldwork लेल गेला तँ एगारह बजे दिनमे प्रो. सुधाकर बनारस लेल दरिभंगा स्टेशनसँ रेल पकड़बाक लेल प्रस्थान केला। राघव साँझ छह बजे आपस एला। नन्दिता अपने हाथे चाह बनेली। एक लोटा आ एक गिलासमे जल अनलैन। राघव बिना कुनो प्रतिकारक भरि इच्छा जल पीला। फेर चाह पीबैले बैसला। नन्दिता चाह संगे भूजल चूरा तरल झींगा माछ लऽ अनलैन। थाकल राघवकेँ ई सत्कार गदगद कऽ देलकैन।



बृहस्पैत दिन रहैक तँए नन्दिता पीअर साड़ी पहिरने छेली। ब्लौज सेहो पीअर मुदा ब्लौज केर गला बाहिं आ वक्ष लग कारी रहइ। पीअर आ कारीक मिलान रमनगर लगैत छेलैन। नन्दिता सोनाक एकटा बल्ला एक हाथमे आ दोसरमे घड़ी पहीरिने छेली। नन्दिताक हाथ-पैर आदि साफ छेलैन। नन्दिता आ प्रो. सुधाकर केर जोड़ी देखलापर 'बानरक हाथमे नारिकेल'बला कहबी चरितार्थ होइ छल। चाह पीबै काल नन्दिता राघवसँ पुछलखिन-

"राघवजी, अगर अहाँ लग समए हो तँ, आइ राति किछु काल अहाँसँ साहित्यक चर्चा कऽ सकै छी?"

राघव बजला-

"हँ-हँ नन्दिता भाभी, किएक नहि। हम सामान्यत: दिनेमे अपन लेखन कार्य सम्पन्न कऽ लैत छी। अपने परेशान जुनि हौउ। निश्चिन्तसँ कऽ सकै छी।"

राघवक अश्वासनसँ नन्दिता बिहुँसि उठली। राघवो कुनो कम प्रफुल्लित नहि छला। चाह पीला पछाइत राघव पुन: किछु बाँचल कार्यकेँ सम्पादित कए स्नान केला। तेकर बाद प्रो. सुधाकर केर आवास लग एकटा सैलूनमे जा पूरा माथक मालिश, फेशियल इत्यादि करेलैन आ आपस आबि नन्दिता, अमरेश आ विमलेशक संग रात्रिक भोजन केला। रातुक भोजनमे नन्दिता अन्य भोज्य-पदार्थक अतिरिक्त काँच टमाटरकेँ आगिमे पका ओइमे पिऔज, लहसुन, आद, हरिअर मिरचाय आदि मिला चहटगर चटनी बनेने छेली। राघवकेँ चटनी बड्ड नीक लगलैन। भोजन करै काल विमलेश राघवकेँ कहलखिन-

"चचाजी, टमाटरक चटनी केहेन लगल?"

राघव जबाव देलखिन-

"अपूर्व! मन होइए रोटी चटनीए संग खाइ। ऐ चटनीक आगू सभ व्यंजन बेकार।"

राघवक ऐ जबावसँ नन्दिता प्रसन्न भेली आ गर्वान्वित स्वरूप निखैर उठली। राघवकेँ हुनकर स्वरूप बड्ड सोहनगर लगलैन। मुस्कियाइत रहला आ चहटगर चटनीक संग रोटी खाइत रहला। आब बिमलेश कहलखिन-

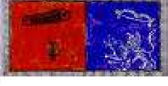
"चचाजी, मम्मी अपने हाथे अहाँ लेल ऐ टमाटरक चटनी बनेली अछि।"

राघव कृतज्ञताक स्वरमे बजला-

"नन्दिता भाभी, अहाँ सभ हमरा लेल केतेक कष्ट लइ छी? ऐ कर्जकेँ हम सातो जनममे नइ सधा सकब। बड़ा अपूर्व आ चहटगर अछि चटनी।"

नन्दिता-

"अरे राघवजी! अहाँ एना किए सोचै छी। सुधाकर नहि छैथ। बनारस जाइसँ पहिनहि हमरा कहने छला जे राघवकेँ बाहरक भोजन पसिन्न नइ होइ छैन, तँए घरेमे किछु-ने-किछु अपने हाथे बना देबैन। बेबी-हाथमे सुआद नइ छै।' तँए किछु बना देलौं। अहाँ तेतेक नीकसँ भोजन करै छी जे हमरो बनबैमे आन्नद अबैत अछि।"



आब राघव चुप्पे भऽ गेला। भोजन केला। हाथ धोइते रहैथ कि सुधाकरक फोर एलैन-

"की राघवजी, ठीक छी किने? आजुक यात्रा केहेन रहल? बुच्ची किछु नव चीज बनेली की?

राघव बजला-

"हँ श्रीमान्, अखने भोजन केलौं अछि। सभ वस्तु अपूर्व, मुदा काँच बिलौती केर चटनीक तँ जबाव नहि। मन तिरपीत भऽ गेल। कुनो दिक्कत नहि श्रीमान्। केवल अपनेक कमी खलि रहल अछि। फिल्डवर्क सेहो ठीक रहल। लोक सभ सहयोगी छला। बहुत रास जानकारी भेटल। अपने आएब तँ सभ डेटा आ आँकरापर वृहत चर्चा करब।"

हलाँकि राघव जनै छला जे सभ बातमे एक बात झूठ बजला, बाजल छला जे प्रोफेसर सुधाकर केर कमी हुनका महसूस भऽ रहल छैन। राघव तँ प्रसन्न छला जे आब ओ नन्दितासँ मुक्त भावसँ वर्तालाप कऽ सकैत छला। राघवकेँ प्रो. सुधाकर आ नन्दिताक बिआहमे कुनो रहस्य बुझना जा रहल छेलैन।

खैर, भोजन केला बाद राघव अपन कक्षमे गेला। कनी कालक बाद, भोजन केला बाद, बेबी अपन घर चलि गेलि। आब निच्चाँ जा नन्दिता मुख्य द्वार बन्द केलैन। जखन आपस एलीह तँ राघव पुछलखिन-

"नन्दिता भाभी, की करए गेल रही?"

नन्दिता जबाव देलखिन-

"सुधाकर नहि रहै छैथ तखन कैम्पसक मुख्य-द्वार हमरे बन्द करए पड़ैत अछि। सएह करए गेल रही।"

राघव बजला-

"हमरा कहितौं? हम कऽ दितौं!"

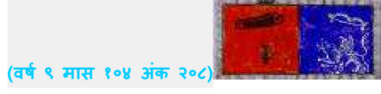
नन्दिता-

"कुनो बात नहि। हमरा आदत पड़ि गेल अछि। अहाँ चिन्ता नहि करू।"

पुन: नन्दिता अमरेश आ विमलेशकेँ आदेश करैत कहलखिन-

"अहाँ सभकेँ स्कूल जाइसँ पहिने भोरे-भोर उठि कऽ पढ़ाइ करक अछि। जल्दी-जल्दी दूध पीब लीअ आ सूति रहू।हम साढ़े चारि बजे भोरक घण्टी लगा दइ छी। अपने मने उठि मुँह-हाथ धो पढ़नाइ प्रारम्भ कऽ लेब।"

दुनू बालक माताक आज्ञाकेँ सम्मान करैत रसोइ-घर गेला। दूध गिलासमे राखल रहैन। दूध पीला आ सुतबा लेल चलि गेला। नन्दिता भीतर गेली। मच्छरदानी लगा देलखिन। लाइट ऑफ कऽ देलखिन। जीरो पावरक बल्ब ऑन कऽ देलखिन आ अपन दुनू छपल किताव, डायरी, किछु सादा पन्ना आ पेन लऽ राघव बला कक्षमे आबि गेली। राघव तैबीचमे एकटा अंग्रेजी उपन्यास पढ़ैत रहैथ। नन्दिताकेँ ऐबते-देरी राघव उपन्यासकेँ झाँपि लेला आ कातमे रखि देलखिन आ नन्दिताक स्वागतमे उठि कऽ बैसैत बजला-

(वर्ष ९ मास १०४ अंक २०८)मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

"आउ नन्दिता भाभी।"

नन्दिता सामनेबला कुरसीपर बैसली। अपन दुनू पुस्तकमे ऑटोग्राफ लिखलैन-

"सिनेही राघवजीकेँ,

सिनेह आ सम्मानक संग

-नन्दिता।"

राघवकेँ नन्दिताक ऑटोग्राफ नीक लगलैन। दुनू पोथीक पन्नाकेँ उलैट कऽ देखलाह। ओइमे एकटा पोथी काव्यक संग्रह रहै आ दोसर गल्प संग्रह। दुनू पोथीक भाषा हिन्दी रहैक। तमाम कथाक मुख्य पात्र महिला। पुरुखक प्रति महिलाक क्रोध, आक्रोश, घृणा आदि स्पष्ट परिलक्षित होइत रहइ। एना बुझना गेलैन राघवकेँ जे नन्दिताक महिला चरित्र बागी आ विद्रोही तेबरमे ठाढ़ छैन। हिंसक हेबामे सेहो महिला चरित्रकेँ कुनो दिक्कत नहि छै।

आब नन्दिता राघवकेँ कहलखिन-

"सुनू राघवजी, हम अहासँ साहित्यिक चर्चा करए चाहै छी। हम्मर पोथी बादमे अहाँ पढ़ि लेब। अखैन किछु चर्चा करी?"

राघव बजला-

"हँ-हँ अबस्स करू। अहाँक लेखनी हमरा प्रभावकारी लागि रहल अछि। पहिने अपन लिखल एक-आध मैथिली कविता सुनाउ।"

नन्दिता राघव केर ऐ निवेदनसँ गद्-गद् भऽ गेली। अपन डायरीक पन्ना पलटनाइ प्रारम्भ करैत पुछलखिन-

"प्रेम-कविता सुनाबी?"

राघव कहलखिन-

"कुनो सुना सकै छी। हम अहाँक शैली आ रचनासँ अपना-आपकेँ अवगत करए चाहै छी।"

आब बिना कुनो प्लोट बैक-ग्राउण्ड तैयार केने नन्दिता नहुँ-नहुँ अपन कविताक पाठ करए लगली। प्रारम्भ लघु कवितासँ केलैन। कविताक संरचना ने बड्ड नीक आ ने बड्ड अधलाहे। हलाँकि प्रेममे सेहो नारीक फ्रस्ट्रेशन परिलक्षित बुझना गेलैन, राघवकेँ नन्दिताक कवितामे। ओना, नन्दिताक अवाज कोइली जकाँ मधुर आ चहकैत। कविता-पाठ करैत-करैत नन्दिताक भाव-भंगिमा भव्य लागि रहल छेलैन। एक कविता पढ़ैत रूकली नन्दिता। राघव झट दनि पूछि देलखिन-

"नन्दिता भाभी,एक बात पुछी?"

नन्दिता-


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

"हँ-हँ पुछू ने!"

राघव-

"अहाँक साहित्यिक कृतिमे महिला पात्र रिबेलियन किएक होइत अछि? ओना लेखन शैली हमरा बड़ प्रभावित कऽ रहल अछि।"

"यों ही कोई वेवफा नहीं होता"

ई कहैत नन्दिता नमहर साँस भरलैन। फेर साँस छोड़लैन। फेर भरलैन। साँस भरब आ छोड़बक प्रक्रिया किछु काल धरि चलैत रहलैन। प्रत्येक साँसक संग नन्दिताक वक्ष ऊपर-निच्चाँ करैत रहल। राघव नन्दिताक पुष्ट-वक्ष गुच्छकेँ कन्हिया-कन्हिया निहारैत रहला। शायद ई सोचैत जे देखितो छैथ आ नन्दिता बुझियो नहि रहल छैथ। मुदा नन्दिता तँ छैथ स्मार्ट। भान लागि गेलैन जे राघव हुनकर यौवनकेँ तारि रहल छैन। नन्दिता सोचलैन : चलू राघवकेँ ऐ ख्वाबमे रहए दइ छिऐन जे हम किदु नइ बूझि रहल छी।

फेर नन्दिता बजली-

"हँ राघवजी। अहाँक अवलोकन सूक्ष्म आ सार्थक अछि। एकर इतिहास छै। हमर जीवनक बीतल किछु एहेन घटना जे हमर साहित्य-सर्जनाक महिला चरित्रकेँ किछु उग्र, व्याकुल, प्रतिशोधी, अहंकारी बना दइ छै। ओना, कखनो काल नहियोँ चाहैत हमर सृजनमे महिला पात्र ओहन भऽ जाइत अछि। ऐपर हम काल्हि रातिमे अहाँक संग विस्तारसँ चर्चा करब। आइ अपन किछु कविता आ गल्प अहाँकेँ सुनबए चाहै छी। शैली, कथानक, परिवेश, उपमा, अलंकार आदिक प्रयोगपर अहाँक विचार जानए चाहै छी।"

राघव बजला-

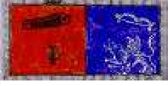
"हँ-हँ नन्दिता भाभीजी, अहाँ अपन किछु लघु कथा आ अन्य कविता सुनाउ। रातिमे हम निश्चिन्ततासँ अहाँक पोथीकेँ समाजिक परिदृश्यमे समाजशास्त्री जकाँ पढ़ए आ समझए चाहै छी। समाजशास्त्रक परिदृश्यमे विवेचन करए चाहै छी। नारी मनोदशा, मानवीय संवेदनाक पितृसत्तात्मक समाज केर संरचना आ पितृसत्तात्मक समाज द्वारा नारीक शोषणकेँ अहाँक लेखनीक ऐनासँ बुझए चाहै छी।"

नन्दिताक मन प्रफुल्लित भऽ गेलैन। साहित्यकारकेँ साहित्यकेँ सुनैबला आ साहित्य समीक्षाक संग ओकर प्रशंसा करैबला भेट जाए तखन मन हर्षित तँ हेबे करै छै। नन्दिता अपन कविताक पोथीक पन्ना चश्मा पहीरि पलटए लगली। तीनटा पन्नाकेँ मोड़ि लेलैन। फेर अपन कुर्सीसँ उठली आ अपन शयन कक्ष दिस बढ़ैत बजली-

"राघवजी! हम कनिकबे कालमे आबि रहल छी।"

राघव सोचए लगला, आखिर कुन प्रयोजनसँ नन्दिता भाभी अपन शयन कक्ष गेली? कुनो-ने-कुनो प्रयोजन तँ अबस्स हेतैन।

पनरह मिनटक भीतर नन्दिता पुन: राघवजीक कक्षमे हाथमे एक कलात्मक शीशाक ट्रेमे दूटा बाटीमे रसमलाइ लेने प्रवेश केलैन। नन्दिताक मन प्रसन्नचित आ संतुष्ट छेलैन। ट्रेकेँ टेबुलपर रखैत बजली-



"राघवजी, काल्हि हमर छोट भाए राँचीसँ आएल छल। माँ ओकरे दिया ई मिठाइ भेजने छेली। छोटका रसमलाइ। एकरा रसभरी सेहो कहल जाइ छै। राँचीमे पंजाब स्वीट्स केर रसभरी बहुत विख्यात छै। बातेक क्रममे एकएक स्मरण आएल जे रसभरी तँ फ्रीजमे राखल अछि। सुधाकर मधुमेहक रोगी भऽ गेल छैथ ने, तँए ओ ई सभ नइ खाइ छैथ। अमरेश आ विमलेश दिनेमे खेने छला। केवल हम आ अहाँ नइ खेने रही। सोचलौं साहित्य सुनेबाक क्रियाकेँ आरो आगाँ बढ़ेबासँ पूर्व कनी मुँहकेँ नीक मीठाइसँ मीठ कऽ ली।"

राघव मने-मन प्रसन्न भेला। नन्दिताक आदरमे आत्मिकताक भाव जगलैन। बिना किछु बजने अपना संकेता-भावसँ नन्दिताकेँ बहुत किछु कहि देलखिन। आब एक कटोरी राघव अपन बामा हाथमे लऽ दहिना हाथे चम्मचसँ रसभरी खाए लगला। बिना किछु कहने मशीन जकाँ नन्दिता सेहो राघवकेँ अनुशरण करैत दोसर कटोरी बला रसभरीकेँ ग्रहण करए लगली। मीठाइ खेलाक पश्चात् राघव अपन असलासँ दक्षिणी निकालि एक सौंस दाना नन्दिताकेँ आ एक स्वयं लेला। नन्दिताक हाथमे जखन राघव दक्षिणी देलखिन तँ राघवक हाथ नन्दिताक हाथसँ सटि गेलैन। राघवकेँ नन्दिताक कोमल हाथक स्पर्श नीक लगलैन। हाथ कनी काल सटले रहए देलखिन। कहि नइ किए, नन्दिता सेहो जेना चहैक उठली। चेहरापर किछु अलग तरहक उमंग नन्दिताकेँ राघवक स्पर्शसँ प्राप्त भेलैन। नन्दिता सेहो राघवकेँ हाथक स्पर्शक सानिध्य किछु क्षण लेल आरो प्राप्त करए चाहै छेली। दुनू एक-दोसरक हाथक स्पर्शक मुद्रामे करीब दू मिनट धरि रहलैन। आब राघवकेँ एकाएक ई भान भेलैन जे नन्दिता तँ हमरा इशारा कऽ रहली अछि। नन्दिता सुन्नरि आ आकर्षक छैथ। हमरो नन्दिताक प्रति आकर्षन बढ़ि रहल अछि मुदा नन्दिता तँ छैथ गुरु-पत्नी समान। कहीं हमर डेग कुनो शास्त्र अथबा परम्परा विरोधी दिशामे तँ ने बढ़ि रहल अछि..?

..एक पैघ प्रश्नवाचक चिन्ह राघवक कपारपर नाचए लगलैन। राघवकेँ स्थितिक भान भेलैन जे बात गलत भऽ रहल अछि। ऐ बातकेँ सोचैत राघव झट-दे नन्दिताक हाथसँ अपन हाथ हटा लेलैन। नन्दिता सेहो पुन: अपन पोथीक पन्ना उनटबए लगली।

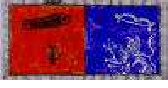
नन्दिता राघवकेँ पुछलखिन-

"राघवजी, अगर अहाँ कही तँ दू-तीनटा छोट-छोट कविता सुनाबी आ तेकर बाद एक या दूटा कथा सुनाबी, अहाँकेँ?"

राघव बजला-

"हँ-हँ! सुनाउ ने। एकटा किए चारिटा कविता सुनाउ।"

आब नन्दिता कविता पाठ करए लगली। जेतेक नन्दिताक तनक सुन्दरता तेतबे मनक सुन्दरता आ तइसँ बढ़ि कऽ बात करैक मीठाँस। राघव गद्-गद् भेल जा रहल छला। काव्य-पाठक क्रममे नन्दिताक नुआँक आँचर खसि पड़लैन। अधकटी आङीमे सहेजल नन्दिताक उन्नत वक्ष जेना कविताक धारक संग यात्रा करैत हो। उठैत-बैसैत। साँस संग नन्दिताक वक्ष जेना नृत्य करैत हो। कविताक संग-संग राघव दोग-दागमे नन्दिताक वक्षकेँ सेहो अवलोकन करए लगला। हुनका किछु-किछु होमए लगलैन। मन करैन जे नन्दिता भरि रातिअहिना आँचर खसेने वक्षक अवलोकन करबैत कविता-कथाक पाठ करैत रहथु।


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

मुदा ई की कुनो सम्भव बात छल? नहि। कदापि नहि। कविताक पाठ आ गल्पक वर्णन चलैत रहलै। पता नइ केना रातिक डेढ़ बाजि गेल। आब नन्दिताक नजैर देबाल-घड़ीपर गेलैन। झट दनि अकचकेली-

"राघवजी! रातिक डेढ़ बजि गेल। अहाँकेँ भोरे-भोर फिल्डवर्कमे जेबाक अछि। आब ऐगला चर्च काल्हि करब। अहाँक निन्नक पूर्ति केना हएत तइ बातक चिन्ता भऽ रहल अछि।"

राघव-

"कुनो बात नहि नन्दिता भाभी। हमरा लोकैन ऐ तरहक गति-विधिसँ अपना-आपकेँ आत्मसात कऽ नेने छी। केतेक दिन तँ चौबिसो घण्टा काज करए पड़ैत अछि। तँए अहाँ चिन्ता जुनि करू। अगर इच्छा हुअए तँ एकटा कथा आ दूटा कविता आरो सुनाउ। अहाँक लेखनीमे चुम्बकीय आकर्षण अछि। कथ्यकेँ सपाट आ अलग अन्दाजमे अहाँ लिखै छी। समाजक दृढ़ मान्यता आ पुरुख-समाज द्वारा बनाएल गेल जंजीरकेँ तोड़ैले अहाँक साहित्यक नारी पात्र उद्धत रहैत अछि। परिवेशक संग कथानक सम्बन्ध स्थापित कऽ लैत अछि।"

राघवक ऐ बातसँ प्रभावित भऽ नन्दिता मने-मन आनन्दित भऽ पुन: कुर्सीपर बैस गेली। आ अपन पोथीक पन्ना उलटाबए लगली। राघव बजला-

"ओना, आब अहाँकेँ नीन आबि गेल हएत।बच्चा सभ सेहो असगरे सूतल छैथ। अगर चाही तँ अहाँ जा सकै छी।"

नन्दिता झट-दे बजली-

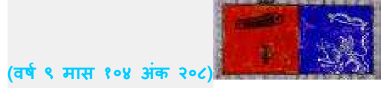
"हमरो लेल जगनाइ कुनो समस्या नै अछि। लेखनक कार्य अधिकांशत: हम रातियेमे करै छी। हमर दुनू पुत्र आब छैँटगर भऽ गेल छैथ। अहाँ कहि रहल छी तँ एक कथा आ तीन कविता आरो सुनबै छी।"

नन्दिता पुन: कविताक पाठ करए लगली। नहुँ-नहुँ मुदा स्वर स्पष्ट आ नजाकतसँ भरल पाठ। हरेक कविताक पाठक उपरान्त राघव ओइ कवितापर किछु प्रश्नआ जिज्ञासा करैत रहलखिन। आ नन्दिता ओइ जिज्ञासाक उत्तर दैत रहली। अन्तमे नन्दिता एक लघु कथा अपन नाटकीय अन्दाजमे सुनेलैन। कथा राघवकेँ बड्ड नीक लगलैन। कथोसँ नीक नन्दिताक उपस्थिति राघवकेँ नीक लागि रहल छेलैन। आब अढ़ाइ बाजि चुकल छल। नन्दिता किताबकेँ सेरियबैत उठली। कहलखिन-

"राघवजी, आब सूतए जा रहल छी। शुभ रात्री।"

'शुभ रात्री' कहैत नन्दिता राघव दिस अपन हाथ बढ़ा देलैन। राघव कनी सह देला परन्तु हाथ नन्दिता दिस बढ़ि गेलैन। हैण्डसेक केलैन। हैण्डसेक करैत राघव नन्दिताकेँ 'शुभ रात्री' कहैत बाहर धरि छोड़ए एला। नन्दिता अपन कक्ष दिस चलि गेली। राघव नन्दिताक सम्बन्धमे एक घण्टा धरि सोचैत रहला। अन्तत: साढ़े तीन बजेमे सूति रहला।

दोसर दिन भोरे राघव स्नान-धियान केला बाद चूरा-दहीक जलपान कऽ सीतामढ़ीक हेतु प्रस्थान केलैन। प्रस्थान करै काल नन्दिता दक्षिणी आ लौंग लेने ठाढ़ि छेलैन। राघव बिना किछु कहने आँखिक भाषा



बुझैथ, नन्दिताक हाथसँ सभटा लौंग-दक्षिणी लऽ लेलैन। नन्दिताक आँखिसँ ई लागि रहल छेलैन जे नीक रहितैक जे राघव आइ केतौ जेबे नहि करितैथ। बिना नन्दिताकेँ कहने राघव हुनकर आँखिक भाषा बूझि गेला। आँखियेक इशारासँ कहलखिन-

"शोधक कार्य अछि, तँए दिन भरि लेल अवलोकन हेतु जेनाइ आवश्यक।"

राघव चलि पड़ला। जाबे धरि नजैरसँ ओझल नहि भेलैन ताबे धरि नन्दिता दिस राघव घूमि-घूमि तकैत रहला। नन्दितो एकटक भेल गेलरीमे ठाढ़ भऽ राघवकेँ जाइत देखैत रहली।

राघव भरि रस्ता केवल आ केवल नन्दिताक सम्बन्धमे सोचैत रहला। प्रेम, आकर्षण, सेक्स आ पाप सबहक बोध राघवकेँ एके संग हुअ लगलैन। नन्दिताक देहक बनाबटसँ राघव आकर्षित छला। नन्दिताक लेखनी सेहो अपने ढंगसँ राघवकेँ प्रभावित कऽ रहल छेलैन। नन्दिताक वस्त्र पहिरक अन्दाज आ सौन्दर्य विलास राघवकेँ कामूक बना रहल छेलैन। हुनकर मनक आ तकन कामदेव जाग्रत भऽ रहल छेलैन। मर्यादा आ अन्य चीज जेना विद्रोह करबाक हेतु उफान मारैत हो। भाँड़मे गेल मर्यादा आ विचारक लक्ष्मण-रेखा। नन्दिता सिनेहमणि आ कामदेवी छैथ। हुनका शायद हमरा सन युवकक आवश्यकता मनक आ तनक सामंजस्य आ अदान-प्रदानक हेतु जरूरी छैन तँ ओइमे मर्यादाक हनन केहेन? किछु एहने भावना राघवकेँ भऽ रहल छेलैन।

फेर ई भाव कनी राघवकेँ चिन्तित आ ग्लानि-भावसँ भरि दैत रहैन जे अन्तत: नन्दिता छैथ तँ गुरुक पत्नी। अगर मर्यादा भंग भेल तँ गुरुजीक संग विश्वासघात भेल। गुरुकी सोचता! कहीं शापित कऽ देता तखन तँ..?

फेर आधुनिक विचार कहैन- जे हेतै ओ देखल जेतइ। नन्दिता किछु उलझनकेँ आइ राति जरूर बतेती। फेर अन्तिम निर्णए लेब जे की करब।

पूरा दिन कार्य करैमे चित्त नै भवैत रहैन, राघवकेँ। जेना नन्दिता हुनकर मनोवृतिकेँ एरेस्ट कऽ नेने होनि। मुदा कार्यक सम्पादन करब हुनकर शैक्षणिक आ प्रोफेशनल जबाव-देही छेलैन। तँए कार्यकेँ सम्पादन केला। कनी जल्दी समाप्त कऽ दरिभंगाक लेल विदा भेला। शनि दिन रहइ। रस्तामे जीबैत कबइ माछ भेटलैन। लगभग दू किलोक कुड़ी। राघव हुण्डे कीन लेला। मलाहिनसँ कुनो मोल-भाव नहि केला।

हाथमे माछ नेने राघव तीव्र गतिसँ प्रो. सुधाकर केर मकानक प्रांगणमे प्रवेश केला। आशाक विपरित नन्दिता नहि छेली। नन्दिताक जेठ बालक अमरेशसँ पता चललैन जे नन्दिता रेडियो स्टेशनपर अपन एक लघु कथाक प्रसारण हेतु गेल छैथ। राघव माछक झोरा अमरेशकेँ दऽ देलखिन। बेबी इन्होर पानि देलकैन। राघव पानि पीलाक बाद मुँह-हाथ धोलैन। बाहर एला तँ बेबी नेबोबला चाह दऽ गेलैन। राघव चाह पीबैत रहला आ नन्दिताकेँ एबाक इन्तजार करैत रहला।

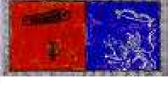
लगभग अदहा घण्टामे नन्दिता एली। ऐबते राघवसँ पुछलखिन-

"कखन एलौं राघवजी?"

राघव-

"अदहा घण्टा भेल।"

नन्दिता-



"चाह इत्यादि भेटल की नइ?"

राघव-

"हँ-हँ। सभ किछ भेटल। गर्म पानि आ चाह दुनू। आइ कनी जल्दी आबि गेलौं। अमरेश कहलैन जे अहाँ दरिभंगा रेडियो स्टेशन कुनो कथाक प्रसारण हेतु गेल रही।"

नन्दिता-

"हँ। प्रति मास दरिभंगा रेडियो स्टेशनसँ हमर एक कथा प्रसारित होइत अछि। अही बहाने रचना करैमे आ साहित्य सर्जनामे नीक लगैत अछि।"

ई कहैत नन्दिता अपन कक्ष दिस विदा होइत बजली-

"राघवजी, कनी हम दस मिनटमे अबै छी। फेर बैस कऽ निश्चिन्त भऽ गप करब।"

राघव गरदेन हिला 'हँ' कहि देलखिन।

दस मिनटक भीतर नन्दिता फ्रेश भऽ राघव लग आबि एक कुर्सीपर बैस गेली। राघवकेँ कहलखिन-

"जीबैत कबइ माछ केतए भेट गेल राघवजी?"

राघव-

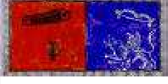
"रस्तामे एक मलाहिन बेचैत छलि। सोचल कीन लइ छी।"

कनी कालक बाद नन्दिता अपनेसँ भीतर जा चाह बना कऽ अनलैन। राघवकँे आगूमे चाहक ट्रे दैत बजली-

"लीअ राघवजी, एक बेर पुन: चाह पीबू। हमरो चाह पीबाक इच्छा भऽ रहल अछि।"

चाह संगे किछु नमकीन सेहो परोसल गेल रहइ। राघवकेँ सेहो चाह पीबाक इच्छा भेलैन। दुनू गोरे चाह संगे पीला।

रात्रिक भोजनक पश्चात नन्दिता पुन: राघव लग आबि साहित्य चर्चामे लगि गेली। आइ नन्दिता कारी रंगक नुआँ पहीरिने छेली। नुआँक खोंछि नाभिसँ निच्चैं। नाभी स्पस्ट देखाइत रहैन। नुआाँ पहीरबाक एहेन स्टाइल जे पूरा पेटक संग नाभीक सौन्दर्य प्रस्फुटित भऽ रहल छेलैन। दुधिया गोराइ चाम नन्दिताकेँ काम सुन्दरी बना रहल छेलैन। राघव ओइ सौन्दर्यमे डूमि गेला। मन बहकए लगलैन। पहिल बेर राघवकेँ ई एहसास भेलैन जे नारीक शरीरक सभसँ उत्तेजक आ कामुक अंग नाभि होइ छै। सुडौल पेट, तरीकासँ नुआँ धारण करबाक अन्दाज ओकरा आरो उत्तेजक बना दइ छै। बहुतो स्त्रीगणकेँ बच्चा भेला बाद पेटक नाभि फाटि जाइ छै आ पेट,नाभि आ नाभिसँ निच्चाँबला प्रदेशकेँ छितीर-बितीर कऽ ओकर सौन्दर्यकेँ स्वाहा कऽ दइ छै। नन्दिता यद्यपि भागवन्त छेली। हुनकर पेट आ नाभि प्रदेशमे एकौटा दागक लेश नहि छेलैन। नाभि तक पेट देखाइत रहैन। के कहैत अछि जे नुआँ कामोत्तेजक नइ होइत अछि। राघव जखन नन्दिताक सौन्दर्यक सर्वेक्षक नुआँमे केलैन तँ लगलैन जेना नारी सभसँ सुन्नरि, चहटगरि, कामोत्तेजक नूएँमे लागि सकैत अछि। नुआाँकेँ नाभिसँ निच्चाँ पहीरक अन्दाज



नन्दिताकेँ यक्षीबला प्रतिमासँ कनीकबो कम सुन्नर नहि बना रहल छेलैन। ईहो सम्भव भऽ सकैत अछि जे राघव नन्दिताक प्रति आकर्षित छला तँए हुनका नन्दितामे दोदारगंज यक्षीक सौन्दर्य तकै छला। अन्ततः सौन्दर्यक तँ बखान करएबला पर निर्भर करैत अछि जे गुण विद्यमान छै। खैर, अखनुक मोटा-मोटी स्थिति ई छल जे राघवकेँ नन्दिता बड्ड सोहनगर-रमनगर आ कामुक नारी लगै छथिन।

नन्दिता सेहो कुनो कम पारखी थोड़बे ने छेली। मने-मन आँकि लेलैन, राघवक मनोदशाकेँ। बुझना गेलैन जे ओ स्वयं कुनो बड्ड सुन्दर आ सुगन्धमयी फूलल फूल तँ राघाव ओइ फूलक मकरन्दकेँ चुसएबला भमरा छला। यद्यपि नन्दिताकेँ राघव रूपी भमराकेँ चुसए देमएमे कुनो आपैत नहि छेलैन। हँ, कनी एक-आध दिन आरो परैख लेमए चाहै छेली।

नन्दिता राघवकेँ ड्रीम-वर्ल्डसँ जगबैत पुछलखिन-

"की राघवजी, आइ हम अपन कवितासँ प्रारम्भ करी अथबा गद्यसँ?"

राघवकेँ ने गद्यसँ मतलब छेलैन आ ने पद्येसँ। हुनका मतलब छेलैन तँ सिर्फ आ सिर्फ नन्दितासँ। झट-दे उत्तर देलखिन-

"नन्दिता भाभी, हमरा वएह पसन्द अछि जे अहाँ सुनाबी। अहीं कहू की सुनबए चाहै छी?"

नन्दिता बजली-

"एक बात कही?"

राघव-

"हँ-हँ कहू! की कहए चाहै छी?"

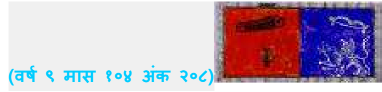
नन्दिता-

"हमर इच्छा अछि जे आइ सर्वप्रथम हम अहाँकेँ अपन लघु हिन्दी उपन्यास 'मधुमय आकाश'क किछु-किछु प्रेरक आ महत्वपूर्ण प्रसंग सुनाबी।कुनो हर्जा तँ ने?"

राघव-

"हर्जा किएक? अबस्स सुनाउ।"

आब नन्दिता अपन हिन्दी उपन्यास 'मधुमय आकाश'क पन्ना पलटए लगली। पन्नो सभमे अनेक कथनीय पाँतिकेँ अण्डरलाइन पेन्शिलसँ केने छेली। पेन्शिलसँ रेंखांकित पंक्तिक एक-एक शब्दकेँ पढ़ए लगली। उतार-चढ़ाव नीक जकाँ मेन्टेन करैत रहलैन। कखनो प्रत्यंचा चढ़ैत कखनो प्रेमाधिक्यक आवेगमे प्रस्फुटित चेहरा आरो सौन्दर्यकेँ बिखेरब प्रारम्भ कऽ दैन। राघव भाव-विह्वल होइत नन्दिताक उपन्यासक अंश नन्दिताक मुहसँ भाव-विभोर होइत सुनैत रहला। बीच-बीचमे कखनो गरदेन हिला, कखनो मुखाकृतिकेँ गम्भीर कऽ तँ कखनो जिज्ञासा प्रवृतिसँ प्रश्न कऽ तँ कखनो मुक्त-कण्ठसँ प्रशंसाक शब्दाडम्बरसँ नन्दिताकेँ उत्साहित करैत रहलैन। उपन्यास कम प्रेरक नहि रहइ। एक एहेन किशोरीक कथा जे भावावेशमे आबि अपन जेठ बहिनक देबरसँ प्रेम-विवाह कऽ



लैत अछि। बादमे प्रतारना, शोषण,अत्याचार, भावनात्मक दोहनक शिकार भऽ आत्म-ग्लानि आ अपन निर्णएपर पश्चाताप करैत ओ किशोरी आत्म-हत्या करबा लेल विवश भऽ जाइत अछि। आत्म-हत्या कैयो लैत अछि। उपन्यासक उतार-चढ़ाव भावनाक प्रबलता आदि नीक जकाँ प्रदर्शित केने छेली। नन्दिता समस्त चीज एकीकृत भाव आ स्वरूपमे राघवकेँ नीक लगलैन।

बीच-बीचमे राघव कनखी दोगे नन्दिताक नाभि आ खुजल पेटक दर्शन करैत रहला। नन्दिता कखनो नाभि लग हाथ राखि लथि तँ कखनो फुजल छोड़ि दैत छेलखिन।

राघवक दृष्टि यदाकदा नन्दिताक समुन्नत वक्ष दिस सेहो जानि। राघवकेँ होनि- ठीके नन्दिता भाभी बानरक हाथमे नारिकेल जकाँ छैथ। प्रोफेसर सुधाकर हिनकर सौन्दर्यकेँ भला की बूझि सकै छैथ?

नन्दिता अपन उपन्यासमे से एक घण्टा धरि उद्धधरण पढ़ैत रहली। राघव सुनैत रहला। अन्तमे उपन्यासक अन्तिम तीन पन्ना नन्दिता भाव-विभोर भऽ पढ़लैन। आब राघव दिस गम्भीर होइत बजली-

"कहू राघवजी, उपन्यास पसिन आएल?"

राघव-

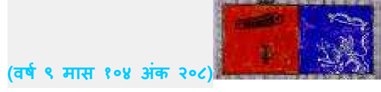
"हँ-हँ, खूब पसिन आएल।पते नहि चलल जे समए केना निकैल गेल। भावमय, भावनामय सभ तरहेँ नीक रचना। एकरा एन्थोपोलोजी ऑफ इमोशन कही तँ कुनो अतिशियोक्ति नहि। अहाँ तही मनोदशाक चित्रण अपन खाँटी अन्दाजमे करैत छी। अहाँ परिवेश, बिम्ब इत्यादिक विधन अपना तरहेँ करै छी। नारी विशेष रूपे मिथिलाक मैथिल ब्राह्मणक तथाकथित सभ्रान्त नारीक मनोदशा आ पुरुखक नारीक प्रति विचार-संस्कार आ बेवहारक वर्णन आ विवेचनमे अहाँ बेजोड़ छी। अहाँक शैली आ अहाँक रचनाक प्रचार हेबाक नितान्त आवश्यकता अछि। अहाँक जिह्वापर ओ सरस्वती बैसल छैथ जे सत्यकेँ बिना कुनो भय आ धोखें-निर्भिक रूपे लीखै छैथ। ओ सरस्वती बैसल छैथ जे पागधारीक, कुकृत्यकेँ ताल ठोकि कहै छैथ। ओ सरस्वती बैसल छैथ जे तथाकथित इलीट या सभ्य समाजक अधार कऽ पुरुख समाजक भीतरक निर्लज्जता आ स्वांगसँ संसारकेँ परिचित करबै छैथ।"

राघवसँ अपना बारेमे ऐ तरहक बात सुनि नन्दिता गद्-गद् भऽ गेली। कनी भावनात्मक सेहो भेली।

राघव दिस गम्भीर होइत नन्दिता बजली-

"एक बात कही, हमर परिस्थिति हमरा लेखिका बना देलक राघवजी। की सोचने रही आ की भऽ गेल! देखैत-देखैत जीवनक तमाम अरमानमे जेना अगराही लागि गेल! आब जीवनमे कुनो इच्छा नहि अछि। एकेटा इच्छा अछि जे अपना संग घटल आ अपना आँखिक समक्ष घटल सभ परिस्थिति-परिवेश आ घटनाकेँ बेलाग लिख पाठकक समक्ष लऽ आबी। आइ ने काल्हि कियोक तँ पढ़तै आ सत्यक अन्वेषण हेतइ? वो सुबह कभी तो आएगी?"

राघव गम्भीर भेला। जिज्ञासा बढ़लैन। मन भेलैन नन्दिताक वेदना आ इतिहासकेँ कुरेदी। मन भेलैन कनी साहित्यसँ खिसकी आ सत्यक अन्वेषण करी। बिना किछु कहने जिज्ञासाक मूद्रामे नन्दिता दिस तकला राघव। नन्दिता बूझि गेली राघवक मनोदशा आ बातकेँ आगाँ बढ़ौलैन।



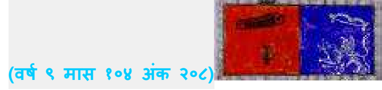
गम्भीर होइत बजली नन्दिता-

"राघवजी, अहाँकेँ लागल हएत जे हम प्रोफेसर सुधाकरकेँ किएक नहि सम्मान करैत छिऐन?"

राघव-

"एहेन बात नहि छै नन्दिता भाभी। कनी ऐ बातक आभास हमरा अबस्स भेल जे अहाँ आ प्रोफेसर साहैबमे किछु मत-भिन्नता अछि। विचार द्वन्द्व तँ सभ पति-पत्नीमे होइत छै। हमरो सहजन्याक संग अछि। मुदा हमरा लोकैनमे सामंजस्य अछि। मतभिन्नता बहुत नाजी अछि। प्रखर तखने रहैत अछि जखन केवल हमहीं दुनू गोरे रहैत छी। एकर विपरीत अहाँ आ भाइ साहैब केर मतभिन्नता जेना केकरो लग दृष्टिगोचर भऽ जाइत अछि? आ आब अहाँक साहित्यक श्रवण केलासँ ई स्पष्ट भऽ गेल जे ई मत-भिन्नता आ अहाँक वैचारिक विद्रोह अकारण नहि भऽ सकैत अछि।"

राघवक ई बात सुनिते जेना नन्दिता भावावेशमे आबि गेली। आँखिसँ नोर मोती जकाँ झहरए लगलैन। आब राघवोकेँ नइ रहल गेलैन। उठला आ नन्दिताक माथकेँ अपना एक हाथसँ पकैड़ दोसर हाथसँ रूमाल निकालि हुनकर नोर पोछए लगला। नन्दिता आरो भावुक भऽ गेली। नोर आरो तीव्र गतिसँ बहए लगलैन। कुहेस फाटए लगलैन। राघव नोर पोछैत रहला आ नन्दिता नोर चुआबैत रहली। ओना नन्दिताक आँखि आ गालक स्पर्शसँ राघवक मन दोसरे रंगक हुअ लगलैन। लाल-लाल कोमल गाल। क्रीम इत्यादि लगलाक कारणे चिक्कन। फूलल-फूलल गाल। नोर पोछबाक क्रमे समस्त गाल आ गरदेनक स्पर्श अनेको बेर राघवकेँ भेलैन। नन्दिता सेहो नहि रोकलखिन। शनै: शनै: राघव नन्दिताक गालकेँ सहलबए लगला। नन्दिता चुप रहली। राघवकेँ मोन भेलैन जे नन्दिताकेँ चुमि ली। मुदा मनकेँ थीर केला। हलाँकि एक आँगुर नन्दिताक ठोर लग लऽ गेला। आँगुर कॉपैत रहलैन। कॉपैत आँगुरकेँ एकाएक पाछू लऽ गेला। कनियेँ कालक बाद फेर हिम्मत केलैन। ऐबेर ठुड्डी तक आँगुरकेँ लऽ गेला। हाथ अखनो काँपि रहल छेलैन। कनी कालक बाद हाथकेँ संयमित केला आ ठुड्डीकेँ सहलबए लगला। तीन मिनट धरि सहलबैत रहला। आब राघव धीरे-धीरे नन्दिताक कुर्सीक पाछाँ जा ठाढ़ भऽ गेला। फेरो अपन आँगुरक हरकतकेँ बढ़बए लगला। आँगुर आब नन्दिताक रसगर-रमनगर ठोर दिस यात्रा प्रारम्भ केलकैन। पूरा शरी घामसँ अनेरे भीज गेलैन। राघवकेँ हाथ फेरो काँपए लगलैन। हाथ फेर ठुड्डी दिस लऽ एला। बीच-बीचमे रूमालसँ नन्दिताक नोर सेहो पोछैत रहला। आब अन्तिम प्रयास केलैन आ आँगुरकेँ नन्दिताक ठोरपर राखि देलखिन। नन्दिता जेना स्वप्नसँ जगली तहिना तुरन्त अपन हाथसँ राघवक आँगुरकेँ हटा देलखिन। मुदा राघवक आँगुर फेर हरकतमे आबि गेलैन आ नन्दिताक ठोरपर आबि थमि गेलैन। आब हिलनाइ कम भऽ गेल छेलैन। ऐबेर नन्दिता सेहो प्रतिकार नहि केलखिन। राघव नन्दिताक निच्चाँ-ऊपरक ठोर सहलबैत रहलाह। नन्दिता आ राघव दुनू गोरे चुप छला। राघव केर हाथ आ नन्दिताक ठोर अपन हरकतमे व्यस्त छल। आकर्षण आ मनोभावक मिलन। आब राघव दोसर हाथसँ नन्दिताक गालकेँ सहलबए लगला। ई क्रम पाँच मिनट धरि चलल। राघवक हिम्मत बढ़ैत गेलैन। आब हाथ नहि काँपि रहल छेलैन। राघव आब कनी हिम्मत करैत नन्दिताक केसकेँ माथ लग चुमि लेला। नन्दिताक फेरो कुनो प्रतिकार नहि केलखिन। मुदा राघव कनी सोचमे जेना पड़ला। अन्तत: नन्दिताक संग हुनकर ई बेवहार केतेक उचित छेलैन? मुदा एकै क्षणमे राघव जाग्रत भेला आ सोचलैन- ऐमे पाप केहेन? नन्दिता भाभी तँ सिनेहक पियासल छैथ। पियासलकेँ पानि पीयाबएमे कुन पाप? ई सोचि राघव नन्दिताकेँ जोरसँ पकड़ैत हुनकर ओंठपर अपन ओठ पाछाँ देने लऽ एला। नन्दिता आँखि झाँपि लेली। राघव चुम्बनक प्रहार-पर-प्रहार करए लगला। फेर अपना मुहमे नन्दिताक ओंठ लऽ चूसऽ लगला। नन्दिता सेहो राघवक संग देमए लगली। दुनू नैसर्गिक लोकमे विचरण करए लगला। वातावरण सरमणीय चिन्ता मुक्त, भय मुक्त भऽ



चुकल छल। हँ, राघव आ नन्दिता जोर-जोरसँ आ जल्दी-जल्दी साँस लैत छला। राघवकेँ इच्छा भेलैन जे नन्दिताकेँ वक्ष अपन छातीसँ सटा ली। अपन वाहपासमे समेट ली। हाथ एक क्षणक हेतु वक्ष दिस बढ़लैन मुदा कहि नहि किएक हाथ आपस खींच लेलैन। राघव नन्दिताकेँ छोड़ि पुन: अपन स्थानपर आबि गेला। नन्दिता पाँच मिनट धरि पाथरक मूर्ति जकाँ बैसल रहली। फेर उठली। अपनाकेँ ठीक केलैन। राघव दिस देखैत बजली-

"हम पाँच मिनटमे वापस अबै छी।"

दस मिनटमे नन्दिता राघव दिस आबि गेली। राघवक सामने बैसैत कहलखिन-

"राघवजी, अगर अहाँ लग समए हो तँ हम अपन जीवनक वृतान्तक किछु विशेष घटनाक यर्थाथ अहाँ संगे बाँटए चाहै छी?"

राघव तँ ऐ बातक इन्तजारे करै छला। झट-दे कहलखिन-

"हँ-हँ किएक नइ। अबस्स सुनाउ।"

नन्दिता-

"भऽ सकैत अछि सभटा वृतान्त कहैत-कहैत भोर भऽ जाए। ऐ स्थितिमे अहाँ की करब? फेर भोरे-भोर अहाँ केतौ केना जाएब? अरामो करब तँ आवश्यक ने?"

राघव-

"अहाँ चिन्ता नहि करू। जेतेक समए लेबाक अछि लीअ। हमरा एतेक दिनक बहुत रास बात सभकेँ लिखबाक अछि। काल्हि केतौ ने जाएब। अहाँसँ वार्तालापक पश्चात तीन-चारि घण्टा सूतब तत्पश्चात लिखनाइ प्रारम्भ करब।"

राघवक बातसँ नन्दिता आश्वस्त होइत बजली-

"निश्चिन्तसँ पलथी मारि कऽ बैस जेबाक इच्छा अछि। ऐसँ कथा निधोख कहि सकब।"

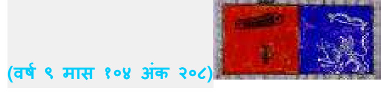
राघव उठला आ नन्दिताकेँ हाथ पकड़ैत कहलखिन-

"ठीक छै तखन पलंगपर पलथी मारि बैस जाउ। मच्छरदानीक भीतर बैसब तँ मच्छरो ने काटत।"

नन्दिता राघवकेँ आग्रहक सम्मान करैत पलंगपर मच्छरदानीक भीतर बैस रहली आ कथा प्रारम्भ केली। नन्दिताक दुनू पुत्र अलग कक्षमे निनभेर छला। राघव केबाड़ीकेँ सटा अपनो मच्छरदानीमे आबि गेला आ नन्दिताकेँ पकैड़ हुनका माथकेँ अपन पलथीपर राखि लेलैन। नन्दिता कुनो प्रतिकार नहि केली। राघव नन्दिताक केस सहलबए लगला आ कथा प्रारम्भ करबाक इसारा केलैन।

नन्दिता कथा कहब आरम्भ केली-

"हमर पिता एक सभ्रान्त अभियन्ता छला आ बिहार सरकारमे पैघ ओहदापर छला। हम सभ दू बहिन आ एक भॉइ छेलौं। सभसँ पैघ हम। हमरासँ तीन बर्खक छोट हम्मर बहिन। आ छह बर्खक छोट भाए। हम्मर माता-



पिता हमरा सभ संग कुनो विभेद नहि केलैन। हम तीनू भाए-बहिन कन्वेन्ट स्कूलमे पढ़लौं। हमरा लड़का सभसँ मित्रता छल आ ओइ लेल कुनो परिवारसँ कुनो पावन्दी नहि। जखन पाँचमी कक्षामे गेलौं तँ बाबूजी साईकिल कीन देलैन। एक मासक भीतर साईकिल चलाएब सीख गेलौं। स्कूल आ बजार इत्यादिमे साईकिलसँ जाए-आबए लगलौं। चूकि हमर बाबूजी आ माँ लम्बा छला। तँए हमहूँ तीनू भाए-बहिन कद-काठीमे छरहरगर आ गोर-नार रही। जखन हम दस बर्खक भेलौं तँ लोककेँ बूझि पड़िऐ जे चौदह बर्खक छी। सुन्नैर तँ रहबे करी। पिताजीक आमदनी अगाध रहैन तँए कुनो तरहक दिक्कत नहि छल। जखन कखनो कुनो चीज, खेलौना, वस्त्र, भोज्य पदार्थ आदिक जरूरत भेल, हमर माता-पिता तुरन्ते आनि दइ छला। ऊपरसँ जेठ सन्तान हेबाक फायदा अलग छल। हम अपन माता-पिताक प्रथम सन्तान रही। आ हमर माथ हमर नाना-नानीक कपार...।"

इम्हर राघव, नन्दिताक कखनो केस तँ कखनो ओठकेँ सहलबैत रहैन। कखनो काल राघवक हाथ नन्दिताक गरदेन धरि चलि जाइन। मुदा राघव अपना-आपकेँ गरदेन धरि सीमित रखला। हँ, बीच-बीचमे ठोर, आँखि आ कपारपर चुम्बन करैत रहला। नन्दिता प्रतिकार नहि करथिन। ओइसँ आरो हरियर होइत उर्जावान भऽ अपन कथाक बखान करैत रहली नन्दिता।

नन्दिता-

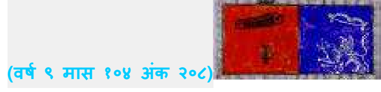
"हमर पिताक एक संगी पटना विश्वविद्यालयमे इतिहासक प्रोफेसर छेलखिन। जखन हम मैट्रिकक परीक्षा दऽ देलौं, तहिया पनरह बर्खक रही। पिताक प्रोफेसर मित्र हमरा ओतए एला। हमर माता-पिता हुनकर नीक आव-भगत केलखिन। हम हुनकर पएर छूबि कऽ प्रणाम केलिऐन। ओ हमरा पुछला, की करै छी बुच्ची? हम जबाव देलिऐन- हम ऐबेर मैट्रिकक परीक्षा देलौं अछि। ओ प्रसन्न भेला। ओही बातक क्रममे हमर बाबूजी प्रोफेसर साहैब लग निवेदन केलखिन, कनी बुच्ची लेल योग्य बर देखू ने प्रोफेसर साहैब? प्रोफेसर साहैब बजला- कनी समए देल जाउ, हम अबस्स नीक बर तकबाक प्रयास करब। हमर पिताजी हुनकर आश्वासन सुनि गद्-गद् भऽ गेला। हमर बाल-सुलभ मनकेँ ई प्रपोजल नीक नहि लागल।"

नन्दिता बजैत रहली आ राघव सुनैत रहला। एककेँ कथा सुनेबाक आतुरता तँ दोसरकेँ कथा सुनबाक जिज्ञासा। दुनूक मनमे एक-दोसराक मानसिक आ शारीरिक प्रेमकेँ प्राप्त करबाक उत्कट अभिलाषा आ इच्छा। मुदा ऐ इच्छाकेँ केवल कामेक्षा कहनाइ उचित नहि। राघवक हाथ आब कनी मर्यादाकेँ भंग करैत गरदेन आ बाँहि लग आबि गेलैन। हाथ पुन: काँपए लगलैन। मुदा हिम्मत नहि हारला। धीरे-धीरे राघवक हाथ नन्दिताक वक्षकेँ स्पर्श करए लागल। पहिने एक आँगुर, फेर दोसर आँगुर आ बादमे सम्स्त हाथ...।

नन्दिता आनन्दित भेली। मुदा कथाक्रमक प्रवाहकेँ रोकलैन नहि। कथा चलिते रहल।

..नन्दिता-

"जखन प्रोफेसर साहैब चलि गेला तँ हम अपन माएसँ लड़ए लगलौं, जे अखन नहि करक अछि विवाह। पहिने पढ़ब। एम.ए. करब। कुनो कौलेजमे नौकरी करब। फेर देखल जेतइ। माँ अहाँ पिताजीकेँ कहि दियौन जे अखन हम्मर विवाहक सम्बन्धमे नहि सोचैथ आ ने केकरोसँ जिक्र करैथ।"



“..मुदा माए छेली बुझनुक आ परम्परासँ बान्हल। झट-दे बजली, अहाँ चुप रहू ने बुची। कुनो आइये लड़का तका गेल? जहाँ धरि पढ़बाक बात छै तँ पढ़ैवाली लड़की बिआहक बादो पढ़ि सकैए। अहाँक काज अछि पढ़ब आ घरक काजमे दक्षता प्राप्त करब। बिआहक निर्णए बाबूजीपर छोड़ि दियौन। जहाँ धरि प्रोफेसर साहैबक बात छैन तँ ओ बड्ड नीक लोक छैथ। केतेको नीक कन्यादान आ बरदान करा चुकल छैथ। ऊपरसँ अहाँक बाबूजीक बालसखा सेहो छैथ, जे करता से नीके करता।'

> “माइक मनमे प्रोफेसर साहैबक प्रति अटूट बिसवास देख हमहूँ कनी निश्चिन्त भेलौं। आ एकबेर पुन: मस्तीक जिनगी जीबाक प्रयास करए लगलौं। मुदा मस्तीबला दिनमे जेना ग्रहण लागि गेल हमरा! तीन मासक भीतर, रबि दिन प्रोफेसर साहैब बिनु बजाएल आ नौतल पाहुन जकाँ हमर आवासपर एक आरो मित्रक संग पहुँचला। संजोगसँ पिताजी घरेपर छला। प्रोफेसर साहैबकेँ नीक जकाँ आव-भगत आ स्वागत-सत्कार कएल गेल...।”

“..चाह इत्यादि ग्रहण करला बाद प्रोफेसर साहैब अपन अटैची खोलला आ एकटा पोस्टकार्ड साइजक ब्लेक एण्ड व्हाइट फोटो निकालि पिताजीकेँ देखबैत कहलकैन जे ई लड़का बड़ संस्कारी छैथ। बी.ए. आ एम.ए. दुनूमे गोल्ड मेडल भेटल छैन। पी.एच-डी.क थीसीस तैयार छैन। एक मासक भीतर जमा भऽ जेतैन आ छह मासक अभियन्तरे पी.एच-डी.सँ अवार्डेड भऽ जेता। थोड़बे दिनमे लेक्चरर भऽ जेता। हँ, उमेरमे करीब चौदह-पनरह बर्खक अन्तर अबस्स छैन।”

“..हमर बाबूजी गम्भीर होइत फोटो देखए लगला। जखन लड़काक सम्बन्धमे सभ जानकारी भेटलैन तँ 'हँ' कहि देलखिन। पंजिकार लग अधिकार मालाक परिक्षण भेल आ विवाह तँइ भऽ गेल। भेलै जे एक मासक भीतर विवाह हेतइ। हम चिन्तामे मग्न भऽ गेलौं। आब की करूँ, की नहि? हमर आयु पनरह बर्खक आ हमर होमएबला पतिक आयु तीस बर्खक!!”

“..एकेटा आस लागल जे माए लग जाइ आ हुनकेसँ बात करी। माए लग गेलौं। कहलयैन- 'ई की भऽ रहल अछि? तैपर माए बजली- 'देखू बुच्ची जे हेतै से नीके हेतइ। अहाँक पिता अहाँ लेल कुनो गलत निर्णए थोड़े ने लेता। लड़का विद्वान छै। एकर फायदा अहाँकेँ भेटत। अहाँ असानीसँ एम.ए; पी.एच-डी. इत्यादि कऽ सकब। ई लड़का अहाँकेँ ऐ दिशामे उत्साहित करता आ सभ तरहक मदैत देता। तँए, अहाँ चिन्ता जुनि करू। हमहूँ तँ अहाँ बाबूजी सँ तेरह बर्खक छोट छी। कुन समस्या अछि हमरा? कहू ने?”

“..आब हम मानि लेलौं जे हमर समस्याक कुनो निदान नहि अछि। आत्म समर्पन मात्र बाँचल छल। एक मासक भीतर हमर विवाह भऽ गेल। विवाहक रातिमे वीध-बेवहार करैत-करैत चारि बाजि गेल। हमरा ईहो नहि बुझल छल जे विवाहक पश्चात वर-कनियाँ आपसमे बात करै छै। अगर दुनूमे सामंजस्य हौउ तँ शारीरिक सम्बन्ध सेहो स्थापित कऽ सकैत अछि। हम विधकरीक बगलमे विवाह भेलोपरान्त भेर नीनमे सुति रहलौं। शायद सुधाकरकेँ ई बात नीक नहि लगलैन। भिनसरमे करीब साढ़े दस बजे, कोहबर घरमे हमरा असगरमे बजा

पुछलैन- बुच्ची, रातिमे अहाँ हमरा लग किए ने एलौं? तैपर हम कहने रहिऐन- नीन आबि गेल छल। सुति रहलौं। तखन ओ कहने छला- ठीक छै आइ दिनमे हमरा लोकैन गप करब। कहलयैन- ठीक छै।"

"..मुदा कहि नहि किए हम अपन सहेली सभ संग बात-चीतमे लागि गेलौं। सुधाकर लग नहि जा सकलौं। पाँच बजे साँझमे सुधाकर हमरा बजेला। हम सहज भावसँ हुनका लगमे गेलौं। ओ तामसे घोर छला। हमरा घरमे प्रवेश करिते-मातर कहलैन, अहाँ किए ने ऐलौं आइ दिनमे?"

हम कहलयैन-

"बिसरा गेल। सखी-बहिनपा संगे बैसल रही।"

सुधाकर-

"बुच्ची अहाँ बीस बेर कान पकैड़ कऽ उठू-बैसू। ई हमर आदेश अछि।"

"हम कहलयैन- किएक? हम नै उठब-बैसब। नहि आबि सकलौं तँ ऐ लेल कान पकैड़ कऽ उठ-बैस करबाक की प्रयोजन?"

"..हमर ई जबाव सुनि सुधाकर चप्पल लऽ हमरा दिस बढ़ला। हमरा भेल ई आब हमरापर प्रहार करता। एकर प्रतिकार करी। जँ नहि करब तँ जिनगी पर्यन्त हिनकर कोपभाजन बनए पड़त। ई सोचि हमहूँ अपन पेन्सिल हिलबला सैण्डल हाथमे उठेलौं आ चिचियाइत बजलौं, खबरदार जे हमरा मारलौं। अगर हमरा मारब तँ हमहूँ चप्पलसँ अहाँकेँ कपार फोड़ि देब।"

"सुधाकर बूझि गेला जे हम हुनका केवल गीदर भभकी नहि देखा रहल छेलिऐन अपितु अगर ओ हमरा लग एला तँ हमर पेन्सिल हिलबला चप्पलसँ...। सुधाकर ठमैक गेला। हाथसँ चप्पल निच्चाँ राखि देलैन। हमहूँ अपन पेन्सिल हिल सैण्डलकेँ निच्चाँ राखि देलौं। आब सुधाकर किछु अभद्र गारिक प्रयोग करए लगला। हम फेरो शेरनी जकाँ चिचिएलौं, खबरदार जे अभद्र भाषाक प्रयोग केलौं आ गारि पढ़लौं हमरा! अहाँ एकटा गारि पढ़ब तँ हम दसटा गारि पढ़ब। एहेन बेवहार हमरा लग नहि चलत।"

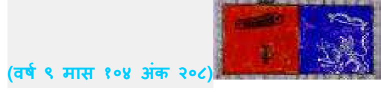
"..सुधाकर अपन मन मसोसि कऽ रहि गेला। केवल एतबे बजला जे रातिमे गप करब, अखन अहाँ जाउ..।"

"..हम चोटे कोहबर घरसँ बाहर भऽ गेलौं। ओना ई निश्चित भऽ गेल जे ई आदमी विद्वान कम आ राक्षस बेसी अछि। एकरा पत्नी नहि एक सेविका अथबा दासी चाही। मुदा हम दासी थोड़े ने रही?"

"..रातिमे सभ वीध-बेवहारक बाद पाँचटा गीतहारि विद्यापतिक गीत-

'सुन्दरि चलली पहुँ घर ना

चहु दिस सखी सब कर धरा ना रे



घरबा मे जाइते परम डर ना रे

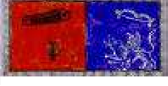
जइसे रहु डर शशी कापे ना रे...।"

"..गबैत हमरा कोहबर दिस लऽ गेली। हमर स्थिति 'जैसे रहू डर शशी कांपे ना रे' बला छल। पनरह बर्खक जीवनमे पहिल बेर डरक अनुभूति भेल छल। खैर!भीतर प्रवेश केलौं। ओछाइनपर चम्पा फूल छिड़ियाएल। इत्रसँ समुच्चा कोठली सुगन्धित। सुधाकर चुपचाप एक मोट पोथी पढ़बामे तल्लीन छला। हम जखन भीतर गेलौं तँ कहलैन- आउ बैसू बुच्ची। हम बैस रहलौं। सुधाकर ठाढ़ भेला। घरक केबाड़ भीतरसँ बन्द केला। आ हमरा लग आबि कहलैन- 'बुच्ची, आइसँ हम आ अहाँ पति-पत्नी छी। ऐ बातक एहसास अहाँकेँ अछि ने?"

"..हम चुपचाप रही। सुधाकर बजैत रहला- 'अहाँकेँ बुझल अछि जे आब हमर शरीरपर अहाँक अधिकार अछि आ अहाँक शरीरपर हमर। आइसँ हम सभ एक-दोसरक, शरीरक स्पर्श आ प्रयोग करब। ई कहैत सुधाकर हमरा लग आबि हमर गालकेँ चुमि लेला। हुनकर मुखसँ जर्दा पानक गंध अबैत छल, जे हमरा नीक नहि लागल। ऐसँ पूर्व स्त्री-पुरुखक बीच यौन सम्बन्धक नाम अबस्स सुनने रहिऐक मुदा केना होइ छै, की सभ होइ छै, की प्रक्रिया छै, तइमे स्त्री केर भूमिका की होइ छइ आ पुरुखक भूमिका की होइ छइ, तइ सब बातक ने तँ कुनो जानकारी छल आ ने कुनो अनुभवे। हम एही गुण-धुनमे रही। मुदा सुधाकर निर्लज्ज बनि अपन वस्त्र हमरा समक्ष खोलए लगला। कनी काल तँ हम चुप रहलौं मुदा जखन ओ लगभग निर्वस्त्र भऽ गेला तँ बाजि उठलौं- 'ई की कऽ रहल छी अहाँ? निर्लज्जताक पाराकाष्ठा पार कऽ रहल छी। ई नीक बात नहि। उघारे देहे ओ थेथर जकाँ दाँत निपोरैत हमरा दिस बढ़ला। हुनकर भावना हमरा विध्वंसक लागि रहल छल। हम पलंगपर सँ उठि कऽ बाहर भगबाक निरर्थक प्रयत्न केलौं। मुदा बेकार। पाछाँसँ हमर झोंट पकैड़ सुधाकर हमरा ओछाइनपर अनला आ सीधे हमर वक्ष पकैड़ लेलैन। हम हाथ छोड़ेबाक यत्न करए लगलौं। मुदा बेकार। हमहूँ जल्दी हारि मनबाक लेल तैयार नहि। सुधाकरक दहिना हाथक आँगुरकेँ दाँतसँ हम काटए लगलौं। आब सुधाकर तामसे प्रचण्ड भऽ एक घूसा हमरा मुँहपर मारलैन। लागल जेना आँखिक आगू अन्हार पसैर गेल। हम लाचार भऽ गेलौं। बलिष्ठ राक्षस लग एक पनरह बर्खक बच्ची भला की टीक सकै छलि। सुधाकरकेँ तामस कम नहि भेलैन। हमरा ओ तीन चमेटा आरो मारलैन। फेरो हमर समस्त कपड़ाकेँ खोलि निर्वस्त्र कऽ दरिंदा जकाँ हमर अंगक संग खेलए लगला। हब्सी जकाँ हमर वक्ष, दरदेन, पीठ, नितम्ब आदिपर दाँत कटलैन। आ हमरा संगे बलात्कार केला। एक ओहन बलात्कार जेकरा सामाजिक मान्यता प्राप्त छै। एक ओहेन बलात्कार जइमे बलात्कारीकेँ लड़कीबला सभ भगवानक दर्जा दइ छइ आ प्रति दिन बलात्कार करबा लेल अवसर प्रदान कऽ अपना-आपकेँ धन्य बुझैत अछि। एहेन बलात्कार जइमे लड़कीकेँ माए, बहिन, भाऊज, सखी एवं अन्य महिला सभ सजा कऽ, संवारि कऽ उत्सवक माहौल बना गीत-नाद गबैत श्रृगार कए बलात्कारीक कक्षमे असगरे छोड़ि अबैत छै। ओइ अभागिनक वेदना, दर्दकेँ के बुझत? नारीक जनम नहि दिअए विधाता..!"

'विधाता' कहि नन्दिता थोड़े कालक लेल जेना ठमैक गेली। मुदा ओ पुन: ओही क्रममे आबि बाजए लगली-

"..हमरा बीचमे दाँती लगि गेल। हमर कानबक अवाज नहि छिड़िअए तइले एक हाथसँ हमर मुँहकेँ दबने रहला सुधाकर। जखन दाँती लागलतँ पानिक छींच्चा मारि दाँती छोड़ाबैथ। हम आब अपना-आपकेँ सरेण्डर कऽ देलौं। भरि राति चील आ नढ़िया जकाँ सुधाकर हमर मांस नोचैत रहला। तीन बेर बलात्कार केलैन। भोरे साढ़े



पाँच बजे कहलैन जे आब बाहर जाउ। हमर पएर डगमगा रहल छल। आँखि झँपा रहल छल। समुच्चा शरीर गुड़-घा जकाँ दर्द करैत रहए। गुप्तांगक दर्दक की चर्चा करी। नहि बाजी सएह नीक। पहिल बेर ई अनुभूति भेल जे बेटी बनि कऽ रहनाइ केतेक कष्टमय छै। बरामदाक कातमे अखरे चौकीपर बेहोशीक हालतमे पड़ि रहलौं।"

"..थोड़बे कालक बाद हमर भाभी एली आ पुछलैन- बुच्ची पाहुन पसिन एला? हम तामसे धोर होइत जबाव देलिऐन- भाभी एखन जाउ! हमरा असगर सुतए दिअ।"

"..पछाइत माए एली। हमर माथ सहलबैत पुछलैन- बुच्ची, मुँह-हाथ नहि धोब? मौहकक बेर भऽ गेल अछि। पाहुन इन्तजार कऽ रहला छैथ। हमर कुहेस फाटि गेल। हम माएकेँ भरि पाँज पँजिया पकैड़ भोकासि पाड़ि कानए लगलौं। संयोगसँ ओतए कियो नहि छल। तैयो माए दोसर घरक भीतर लऽ गेली। हम कानि कऽ सभ बात कहलयैन। हम कनैत रहलौं आ माए हमरा अपन करेजसँ सटेने रहली। भेल सभ दिन अहिना माइक छातीसँ सटल रही।"

"..माए गम्भीर होइत बजली- बुच्ची की करबै एकरे कहै छै नारी जीवन! समझौता सबतरि सभ परिस्थितिमे स्त्रीगणेकेँ करए पड़ै छै। अहाँकेँ नहि बुझल अछि जे हम अहाँक पिताक संग केतेक समझौता केलौं अछि। अहाँ पाहुन संगे मिल कऽ रहू। दुनू गोरेमे समझौता भऽ जाएत तँ जीवन स्वर्ग भऽ जाएत। प्रारम्भमे कनी दिक्कत सभकेँ होइ छै। अहाँ चिन्ता जुनि करब।"

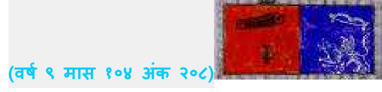
"..भेल जेना माय सेहो हमर दर्दकेँ नहि बूझि सकली। नीक ई रहैत जे ऐ नृशंसकारी दुगुना उमेरक कारी भुजंग डेढ़ आँखिक विद्वानक बदला हमरा सिनेह करएबला, हम-वयस्क कमे पढ़ल आ सुन्दर युवक हमर पति रहैत। मुदा बाबूजीक पागक रक्षाक लेल आ सगा-सम्बन्धी लग अपन शेखी बघारबा लेल बाबूजी हमरा राक्षक संग बान्हि देला। ई चण्डाल हमरा लेल कसाइ अछि।"

"..जीवनक यएह नियति छै, ई हमरा ज्ञात भऽ गेल छल। लेकिन हम ऐबातक निर्णए अबस्स लऽ नेने छेलौं जे कुनो परिस्थितिमे सुधाकरकेँ अपनापर आक्रमण नहि करए देबैन। आब अगर हमरा ओ मारता तँ चोरा कऽ माहुर खुआ जान मारि देबैन।"

"..ऐ दृढ़ प्रतिज्ञा आ आत्म विश्वासक संग माइक संग हम पएर-हाथ धो मौहक करए हेतु चलि गेलौं।"

"..दोसर रातिमे हमर रूप रनचण्डीबला छल। हम घरमे प्रवेश करिते सुधाकरकेँ कहि देलिऐन, देखू! हम अहाँक पत्नी छी। वेश्या नहि। हमरासँ शारीरिक सम्बन्ध चाहैत छी। राखू। मुदा हमरा संगे भविसमे मारि-पीट नहि करू। अगर ई स्थिति भेल तँ हमरासँ खराप कियो ने हएत। केतेक मारब घरमे अहाँ। बाहर निकलैत देरी हम चप्पल, ईंटा कुनो वस्तुसँ सबहक समक्ष प्रहार कऽ देब। तैयो नहि मानब तँ थाना जा एफ.आई.आर. दर्ज करा देब। अगर अहाँ सम्मान करब तँ हमहूँ सम्मान करब आ चुप रहब।"

"..हमर ऐधमकीसँ सुधाकर काँपि गेला। भेलैन इज्जत मटिया-मेट भऽ जाएत। ऐबेर ओ किछुनहि बजला। यद्यपि ओ ओइ रातिमे तीन बेर हमरा संगे यौन सम्बन्ध स्थापित केलैन- बलात् आ हमरा इच्छात विपरीत। हम

मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

सोचि लेलौं जे ई मनुख हमर तनक भूखल अछि। मनक भूखल नहि अछि। हमहूँ एकरा संग मनसँ प्रेम आ स्नेहालिंगन तँ नहि कऽ सकैत छी। फेर कऽ लीअ जेतेक हमर शरीरक उपयोग करत। हम जड़ बनल रहब...।"

"विवाहक पाँच बर्खक पश्चात हमर प्रथम पुत्र अमरेश जीक जन्म भेलैन। तीन बर्खक बाद बिमल भेला। तेकर बाद कुनो बच्चा नहि होमए देलिऐ। जड़वत जीवन चलैत रहल। सुधाकर आ हम दू विपरीत बाटक बटोही। हम सुधाकर संगे केतौ सभा, कार्यक्रम, विवाह-दान इत्यादिमे नहि जाइ छी। विवाहक दोसरे दिनसँ बाबूजीकेँ टोकनाइ तक छोड़ि देल। अबैत छैथ तँ यंत्र जकाँ प्रणाम कऽ लइ छिऐन। एकर अतिरिक्त किछु नहि।"

"विवाहक तीन बर्खक वाद एक घटना घटल,जे हमर परिवारकेँ झँककोरि देलक।"

राघव-

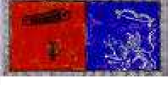
"से की?"

नन्दिता-

"हमर छोट बहिन रागिनी हमरा ओतए आएल छलि। करीब पाँच मास एतए रहल। कहि नहि केना ओकरा सुधाकर केर छोट भाए प्रभाकरसँ प्रेम भऽ गेलइ। एक मासक बाद हमरा रागिनी ऐ बातक जानकारी देलक। हम मना केलऐ मुदा दुनू एक-दोसरक प्रेममे पागल। एक-दोसरक संग मरबा आ जीबाक सप्पत खेबाबला। यद्यपि सुधाकर सेहो ऐ प्रेम-प्रसंगसँ प्रसन्न नहि छला। हम्मर माता-पिता सेहो दुनूकेँ बुझेलखिन। मुदा बेकार। एक दिन दुनू अपन हाथक नस काटि लेलक। जखन पता चललै तँ डाक्टरकेँ बजाएल गेल। दुनू परिवार रागिनी आ प्रभाकरकेँ प्रेम लग झूकि गेल। विधिवत् विवाह भऽ गेलइ। रागिनी विवाहक पश्चात् जमशेदपुर चलि गेली। जमशेदपुरमे प्रभाकर अंग्रेजीक लेक्चरर छला।"

"तीन बर्ख धरि तँ बड्ड नीक रहलै, एकटा बेटा सेहो जन्म लेलकै मुदा बेटाक जन्म होइते-मातर दुनूमे खट-पट प्ररम्भ भऽ गेलइ। मारि-पीट प्रारम्भ भऽ गेलइ। स्थिति बद्-सँ-बदतर होइत रहलै। एकबेर तँ रागिनी तलाक तक लेबाक लेल मन बना लेलैन। मुदा हमर बाबूजी, सुधाकर, हमर ससुर कहियो चाहे रागिणीक ससुर,सभ मिल कऽ रागिणीकेँ सम्बन्ध विच्छेद नहि करए देलखिन प्रभाकरसँ। किछु दिनक बाद रागिणी पुन: जमशेदपुर गेली। छह मास धरि ठीक रहलैन। सातम माससँ वएह रामा वएह खटोला। फेर मतभेद-मनभेद प्रारम्भ। फेर मारि-पीटक सिलसिला। रागिणी जखन तंग भऽ जाथि तँ हमरा फोनपर गप करए लगैथ। हम तँ अपने लाचार छेलौं। की कऽ सकै छेलिऐन। खाली एतेक कहि दइ छेलिऐन जे हम तँ मना केने रही ने रागिणी? ई सभ तँ राक्षसक परिवार अछि। ई सभ शेरक खालमे नढ़िया अछि। रागिणी किछु नहि बाजैथ। केवल हिचुकि-हिचुकि कऽ कानैथ। फेर कहैथ- बहिनदाइ! हमर दिने खराप छल। ई राक्षस दारू पीब जरैत सिगरेटसँ हमर जाँघ आ कनपट्टी जरबैत रहैए। कामातुर भऽ विपरीत तरहक सेक्स लेल हमरा बाध्य करैत अछि। एकर शरीरसँ विचित्र तरहक गन्ध अबै छै। एकरा की कएल जाए?"

"रागिनीक प्रश्न छोट मुदा हमरा लेल यक्ष प्रश्न छल- अनुतरित।"


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“आ अन्तमे जीबनक कष्ट आ प्रभाकर केर शारीरिक आऔर मानसिक यातनासँ तंग आबि कऽ रागिणी असगरेमे अपन दहिना हाथक नश काटि लेली। घरमे कियो ने रहइ। जखन रातिमे साढ़े दस बजे प्रभाकर एला तँ देखै छैथ जे शोनितक धार बहैत आ रागिणी बेसुधि भेल पड़ल। प्रभाकरकेँ किछु ने फुरलैन। उठा-पुठा कऽ नर्शिंग होम लऽ गेला। डाक्टर कहलखिन सभ किछु समाप्त भऽ गेल। रागिणी आब जीबैत नहि छैथ। आ ऐ तरहेँ एक जीवनक दुखद अन्त भऽ गेल। रागिणीक आत्महत्याक पश्चात हमर बाबूजी कैँ दिमाग खुजलैन। आब ओ बुझलखिन जे समाजिक मर्यादा, लोकाचार आ सोतियानाक नामपर केना महिलाकेँ शोषण आ दोहन कएल जाइत अछि। देखू रक्षसबा प्रभाकरकेँ? आब ओ अनेरे नोर चुअबैत रहैए। असगरेमे मध्य–रात्रिमे रागिणी अहाँ केतए चलि गेलौं? आदि-आदि चिचिआइत रहैए। लेकिन आब की। चिचिएने की हएत? रागिणी तँ उड़ि गेली पिजरासँ। अजाद भऽ गेली। नीके भेलइ। सभ दिनका झंझट, शोषण, मार-पीटसँ नीक वेचारी दुनियाँ छोड़ि चलि गेल।”

रागिणीक कथा कहलाक बाद नन्दिता जोर-जोरसँ साँस लेमए लगली। छातीक धड़कन बढ़ि गेलैन। मनमे अकुलाहट उठए लगलैन। राघव सेहो द्रवित भऽ गेला। प्रोफेसर सुधाकर प्रभाकर एवं सुधाकरक प्रति घृणा आ आक्रोश भरि गेलैन। नन्दिताक प्रति सिनेह आ संवेदना बढ़ि गेलैन। नन्दिताक आँखिमे नोर छेलैन। गालपर सेहो नोरक टघार आबि गेल रहैन। राघव अपन रूमालसँ नन्दिताक नोर पोछलैन। नन्दिता राघवक पलथीपर सँ माथ हटबैत बैसली। अपन कक्ष दिस विदा भेली। राघव चुप छला। दस मिनटक भीतर नन्दिता तरोताजा भऽ मुँह-कान धो, क्रीम इत्यादि लगा पुन: राघव केर कक्षमे प्रवेश केलैन। राघवक मन हर्षित भेलैन। नन्दिता राघव लग आबि बिना किछु कहने पुन: राघवक पलथीपर माथ राखि लेट गेली। राघवक हाथ अनायास नन्दिताक माथपर चलि गेलैन। आ राघव नन्दिताक रेशमी केशकेँ सहलबए लगला।

नन्दिता कथाकेँ आगू बढ़ेनाइ शुरू केलैन-

“राघवजी, आब कहू ई सभ सम्मानक पात्र छैथ?”

राघव-

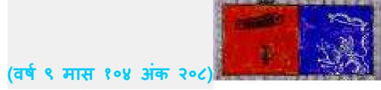
“नहि नन्दिता भाभी नहि। ई सभ तँ कसाइ छैथ। हिनका लोकैनकेँ अपन डिग्री आ शिक्षाक तमाम कागजातकेँ आगिमे जरा कऽ सुड्डाह कऽ लेबाक चाही। एहेन शिक्षाक की प्रयोजन जे मनुखकेँ जानवर बना दिए?”

नन्दिता-

“देखू राघवजी, अखन डेढ़ राति भऽ गेल अछि। अगर काल्हि अहाँ केतौ बाहर नहि जाइ तँ हम चारि-साढ़े-चारि धरि अपन जिनगीक वृतान्त अक्षरसह सुनबए चाहै छी। अगर बाहर जेबाक विचार अछि तँ ऐतै विराम दइ छी?”

राघव-

“आगू अपन वृतान्त पूरा करू। हम काल्हि केतौ ने जाएब। आगूक वृतान्तसँ सेहो हम बहुत किछु सीखब। समाजक एहेन चीजकेँ जानि रहल छी जेकरा सम्बन्धमे कल्पना तक नहि केने रही।”



राघवक ऐ आश्वासनसँ नन्दिता निश्चिन्त भऽ गेली। राघवकेँ हाथ पकैड़ अपन वक्ष लग लऽ जा बजली-

"राघवजी, आइ पहिलबेर विवाहक बाद कुनो पुरुखक प्रति सिनेह उत्पन्न भेल अछि हमरा। हम तँ सुधाकर आ प्रभाकरक किरदानी देख ई मानि नेने रही जे सभ पुरुख घटिया आ स्त्रीगणक चामक भूखल अछि। हमरा होइत छल जे पुरुखकेँ केवल अपन दंभ, लोक-लाज, समाजिक मर्यादासँ मतलब रहै छै। स्त्रीगणक मान, मर्यादा स्वाभिमान, भावना भाँड़मे गेल, तइसँ पुरुखकेँ की प्रयोजन? लेकिन अहाँक विचार हमर मान्यताकेँ बदैल रहल अछि। जइ तरहेँ प्रति दिन अहाँ अपन पत्नी सहजन्यासँ फोनपर बात करै छी। हरेक निर्णएमे हुनकर भागीदारीकेँ सम्मान करै छी, तइसँ ई स्पष्ट अछि जे अहाँ स्त्रीकेँ सही अर्थमे सहचरी मानै छी।"

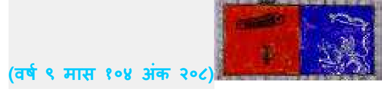
राघव-

"अहाँ ठीके कहै छी नन्दिता भाभी। ओना, एक बात स्पष्ट कऽ दी जे जइ परिवारमे हमर जन्म भेल अछि तइमे महिलाक स्थान सर्वोपरि छै। हमर पिता बिना हमरा माएकेँ पुछने कुनो कार्य नहि करै छैथ। परिवारक संचालनक तमाम जिम्मेवारी माइक छैन। पिताजीक कार्य केवल अर्थोपार्जन छैन। केतेक निर्णए हमर माए असगरे लैत छैथ। हमर पिता कखनो ओइ निर्णएपर अथबा माइक निर्णए क्षमतापर प्रश्न नहि करैत छैथ। यएह स्थिति हमरो अछि। बजारक खरीददारी, गृहकार्यक निर्णए, नौत-हकार, कुटुम-परिवार सम्बन्धी तमाम निर्णए सहजन्य अपने हिसावे करै छैथ। वेतनउठा हम हुनका दऽ दइ छिऐन। बाँकी कुनो चीजसँ हमरा लेना-देना नइ अछि। आइ धरि हम कहियो सहजन्यासँ कुनो तरहक हिसाव नहि लेलिऐन। हुनकर आलमारी आ लॉकर खुजले रहै छैन, मुदा कहियो हम ओकरा नहि छुबै छी। यएह शायद हमरा दुनूक बीच असली प्रेमक गाँठ अछि। सहजन्याक माता-पिताकेँ हम अपन माता-पिता जकाँ सम्मान करै छिऐन। एकर फायदा हमरा ई भेटैए जे सहजन्या सेहो हमर माता-पिताकेँ बड्ड सम्मान आ सेवा करै छैथ। हमरा हमर सासुरक लोक सभ कहै छैथ जे अहाँ अलग-तरहक लोक छी। अन्यथा पत्नीकेँ माता-पिताक प्रति केकर धियान जाइ छै- मिथिलामे।"

राघवक बात सुनि नन्दिता भावुक भऽ गेली। राघवक प्रति प्रेममे हुनका आरो बृद्धि भऽ गेलैन। राघवक हाथकेँ जोरसँ पकैड़ अपना छाती लग सटेलैन। राघवक हाथक पृष्ठ भाग आब नन्दिताक वक्षक अनुभव कऽ रहल छल। राघव ऐ अनुभवमे मग्न छला। धीरे-धीरे हिम्मत कऽ राघव अपन हाथकेँ सोझ केला आ आब अपन दुनू हाथ सोझे-सोझ नन्दिताक वक्षपर रखि ओकर आङीक ऊपरसँ दबाबए लगला। नन्दिता चुप रहली। कुनो प्रतिकार नहि..। थोड़बे कालक पछाइत राघवक हाथ नन्दिताक आङीक भीतर प्रवेश कऽ अपन आनन्दक हरकतमे संलग्न भऽ गेल। आनन्दित नन्दितो। पहिल बेर नन्दिता स्त्री आ पुरुखक सामंजस्यक प्रेमक अनुभूति जे कऽ रहल छेली। आब जखन प्रोफेसर सुधाकरक यर्थाथक ज्ञान भऽ गेलैन तँ राघवक मनक अपराधबोध सेहो खतम भऽ गेलैन। नन्दिताकेँ शारीरिक आ मानसिक सहयोग देनाइ निश्चित रूपे राघवकेँ परमार्थक कार्य अथबा ई कहू जे मानबाधिकारक रक्षा करब बुझना गेलैन।

नन्दिता आनन्दित होइत बिना राघवकेँ हाथ हटेने अपन वृतान्तकेँ आगू बढ़बैत जारी रखली-

"आ तही दिनसँ हम यन्त्रवत रहए लगलौं। जीवनक उत्साह खतम भऽ गेल। बचपनेमे अपना-आपकेँ बूढ़ बुझए लगलौं! जखन दुनू बच्चा कनी नमहर भऽ गेला आ स्कूल जाए-अबए लगला तँ पढ़नाइ प्रारम्भ केलौं। हलाँकी खेनाइ बनाएब, घरक काज सम्हारब इत्यादि ऐ सभमे हम कहियो रूचि नहि रखलौं। सुधाकर चेरी



इत्यादिक बेवस्था केलैन। आर्थिक सहयोग सुधाकरसँ नहि भेटल।पिता हमर माइक माध्यमसँ किछु टका इत्यादि हमरा लेल भेज दइ छला। बादमे हमरा भेल जे स्वयंसिद्धा बनी। पढ़ाइ प्रारम्भ केलौं। बी.ए; एम.ए. केलौं आ आब पी.एच-डी. केर थीसीस जमा होबएबला अछि। आशाक प्रतिकूल सुधाकर शिक्षाक क्षेत्रमे अपन प्रभुत्तवक कारणे हमरा एम.ए. आ पी.एच-डी.मे नीक मदैत केलैन। फेर कथा लिखनाइ प्रारम्भ कएल। प्रारम्भमे मैथिलीमे आ बादमे हिन्दीमे सेहो। आब दुनू भाषामे एक प्रवाह, प्रभाव एवं अधिकारक संग लिखै छी। जखन एक आध रचना छपल तँ लिखैमे आरो मन लागए लगल। हमर साहित्य सही अर्थमे हमर जीवनक आगू-पाछू घुमैत रहैत अछि।"

नन्दिता बजैत रहली। राघव सुनैत रहला। बीच-बीचमे राघवक हाथ नन्दिताक आङीक भीतर किछु अलग तरहक क्रीड़ामे व्यस्त छल। नन्दिता हाथक क्रीड़ासँ आनन्दित होइत रहली। राघव नन्दिताक वृतान्त सुनबामे मस्त आ नन्दिताक संग क्रीड़ा करबामे मस्त। नन्दिता राघवकेँ अपन वृतान्त सुनबैमे आ राघवक हाथक चहलकदमीकेँ अपन आङीक भीतर आन्नद लेमएमे व्यस्त आ प्रसन्न...।

नन्दिता-

"एकटा बात तँ हम रागिनीक सम्बन्धमे नहि बतेलौं। सहज मनक रागिनी आत्महत्यासँ पहिने प्रभाकर हेतु एक कविताक निर्माण हिन्दीमे केली। हुनकर लाश लग एक पन्नामे मोचरल किछु शोणितक बुनक छिट्टासँ भरल ओ कविता लोककेँ भेटलै। ओ कविता हमरा दुइये बेर पढ़ला बाद कंठस्थ भऽ गेल अछि। राघवजी, अगर अहाँ कही तँ हम ओइ कविताकेँ सुनाऊ?"

राघव-

"हँ-हँ। अबस्स सुनाउ नन्दिता भाभी। हमहूँ तँ बुझी जे आत्महत्यासँ ठीक पहिने रागिनीक मनोदशा की छेलैन आ प्रभाकरजीक प्रति हुनकर सोच की छेलैन।"

आब नन्दिता आँखि मुनि कऽ रागिनीक अन्तिम कविताक पाठ करए लगली-

"तुम्हारा दिया धोखा

मैंने उठाकर वहीं रख दिया है

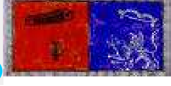
जहाँ बहुत संभाल के रखती थी

तुम्हारा प्यार..!

तुम्हारी सूरत में

कहाँ छिपी थी ये फ़रेब की लत

और ये दिलों से खेलने की फ़ितरत



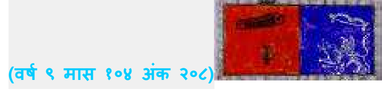
अन्दाज तुम्हारा
अभी तो सदमा है
गहरी नीन्द से मानो किसी ने
जबरदस्ती उठा दिया हो झिंझोड़ कर
ये भी टूटेगा

ठीक वैसे ही
जैसे तोड़ दिया तुमने यकीन
और अधबने मिट्टी के घरौंदे
दिल भी हमरा

कभी जो सोचू
तो एक लहर सी उठती है
बहुत तेज दर्द की, जैसे खंजर ही
तुमने दे मारा

डूबने से पहले
एक झलक सी दिखी थी
तुम्हारी शहद सी आँखों की
और राज तुम्हारा

अब तो यूं है
के होश आया है जैसे
मीलों चले गहरी बेहोशी में



ये कदम आवारा

अब तो न मैं हूँ तुम्हारो साथ
न मेरी जिद न जजबात
बस एक निशानी बाँकी
जो अब है तुम्हारा

चली मैं दूर गगन की ओर
न मेरा कोई ओर न ही छोर
सम्हालना बेसक लोक लाज के भय से हमको
यही अन्तिम परिणाम हमारा।”

थोड़े कालक पछाइत नन्दिता पुन: बाजए लगली-

“राघवजी बीचमे ई प्रसंग बाँकी रहि गेल छल। एकाएक स्मरण आबि गेल तँ सोचलौं जे अहाँकेँ सुना दी। रागिनीक ई पत्र अपना-आपमे बहुत बात कहैत अछि।”

रागिनीक कवितासँ राघव सेहो भावुक भऽ गेला। अपन नोर नहि रोकि सकला।

कनी कालक बाद नन्दिता एकबेर पुन: अपन जीवन वृतान्तकेँ सुनाएब प्रारभ केलैन। नन्दिता गम्भीर भेली आ बाजए लगली-

“राघवजी, कहि नहि किए हमरा अपना-आपकेँ श्रोतीय ब्राह्मण परिवारमे जन्म लऽ एना बुझना जा रहल अछि! बुझना जा रहल अछि जेना पूर्वजन्ममे सहस्त्रो गाइक बध केने रही। आ तेकरे फल भोगि रहल छी। ओना तँ अपना-आपकेँ श्रोतीय सभ सर्वश्रेष्ठ मानैत अछि मुदा जहाँधरि महिलाक स्थिति छइ तँ महिलाकेँ अमानवीय ढंगसँ शोषण ई समाज कऽ रहल अछि। कथा हमरा आ रागिनीक जीवन आ शोषणसँ अन्त नहि होइत अछि। असंख्य रागिनी आ नन्दिता ऐ तथाकथित सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणक वितंडावाद आ कर्मकाण्डक नाओंपर कुल, जाति, मूल आ परोपट्टाक नाओंपर अभिशप्त भऽ तप्त नोर झहरबैत अपन जिनगीकेँ बिता रहल छैथ। केतेक रागिनी या तँ विवश भऽ आत्महत्या कऽ लइ छैथ, चाहे मारि देल जाइ छैथ। की कहलैन यात्रीजी-

‘अगराही लगौ बरू बज्र खसौ

एहेन जातिपर बरू धसना धँसौ

भूमिकम्प हौ या फटौ धरती

माँ मिथिला रहिये कऽ की करती?'

..हम मानि लेलौं जे किछु नहि बाजब। हँ, सुधाकरकेँ ई भान अबस्स करा देलिऐन जे जँ ओ हमरा शरीरपर प्रहार करता तँ हमहूँ नहि छोड़बैन। सुधाकर ऐ बातकेँ बूझि गेला। हम कुनो सभा, संस्कार, गोष्ठी, उत्सव आदिमे सुधाकरक संग नहि जाइ छी। सुधाकरकेँ एतेक अबस्स बता देलिऐन जे हमरा संसर्गसँ पूर्व ओ नीक जकाँ साबुन तेल आदि लगा स्नान ध्यान कऽ लेथि। अन्यथा हमरा लग नहि आबथु। सुधाकर ऐ बातकेँ स्वीकारि लेलैन। हमर यातना, हमर विद्रोह, हमर अरमानक टुटब, रागिनीक प्रेम-विवाह, विवाहेत्तर शोषण आत्महत्या सभ हमरा लेल साहित्य सृजनक आधार आ सामग्री बनि गेल। हम लिखैत रहलौं। तीन विधामे- कविता, कहानी आ उपन्यास। दुनू भाषामे- मैथिली आ हिन्दी। जखन किछु कविता आ गल्प छपए लागल तँ आरो उत्साहित भेलौं। बादमे रेडियोसँ सेहो हमर कथा आ कविताक प्रसारण नीज वाणीमे हुअए लगल।

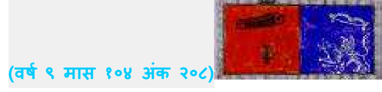
..जनै छी राघवजी! हमरा सभसँ संतुष्टि ऐ बातसँ होइए जे लोक आ समाजआब नहु-नहु हमरा अपन साहित्य लेखनक कारणे जनैत अछि। हम प्रो. सुधाकरक पत्नी या चीफ इन्जीनियर केर बेटीक रूपमे अपन परिचय समाजमे नहि जानबए जाहै छी। मनक आर सभ अरमान तँ ध्वस्त भऽ गेल मुदा अपना कृतिक कारणे आइ अबस्स जानल जाइ छी। पैछला मासमे हमर एक कथा 'सरिता' आ एक कथा 'हंस'मे छपबा लेल स्वीकृत भऽ गेल अछि। एक छोट कविता 'कादम्बनी'क नव अंकमे छपल अछि। ऐ सभसँ हमरा आत्मिक संतुष्टि भेटैत अछि।"

"आब अहाँसँ भेँट भेलापर हम पुरुषक प्रति अपन नजरिया बदलबाक प्रयास करब। जनै छी, जखन हम किशोर वयमे एलौं तँ मनक अनन्त अरमान छल। अपन सम-कक्ष तथा सिनियरो लड़का सभ हमरा बड़ गौरसँ देखैत छल। कतेक लड़का सभ हमरा सुना-सुना कऽ कहैत छल- 'की चीज अछि नन्दिता! जेकर कनियाँ हेतै ओ बड्ड भाग्यशाली हएत। एकर घरबला तँ एक साल धरि एकरा छोड़ि केतौ निकलबे ने करत।' आदि-आदि। ई बात सभ सुनि हम बड्ड आनन्दित होइत रही। परीक देशमे विचरन करए लगी। भेल जे दुनियाँक सभसँ सुन्दर, सिनेही आ रमनगर लड़का हमर जीवन-साथी बनत। मुदा हाय रे भाग्य..!

'हे देव तूँ ई की केलह?

हमर भाग्यमे की लिख देलह?

कारी वर्ण, डेढ़ आँखि, हमरा उमेरसँ पनरह बर्खक अधिक आयुक वर! ओहो निरंकुश, मिथ्याभिमानी, नारीक शोषक, संस्कारहीन, आ मचण्ड! एहेन राक्षस जे सोलह-सतरह बर्खक लड़कीक



भावनाकैँ नहि बूझि सकै छल! भाँड़मे जाए ओकर शिक्षा आ समाजशास्त्रक ज्ञान। भाँड़मे जाए मर्यादा आ लोक-लाजक दीवार। दुर्भाग्य हमर ई छल जे हमरा सासुओक सुख नहि भेटल! जखन सुधाकर इण्टरमिडिएटमे पढ़ै छला, तखने माए मरि गेलखिन। कियो हमर भावनाकैँ बुझिनिहार नै।"

नन्दिता राघव दिस देखैत बजली-

"राघवजी, आब तीन बजि गेल। अहाँकैं निन्द आबि गेल हएत। दिन भरिक थाकल छी। अहाँ अराम करू, हम जाइ छी।"

राघव-

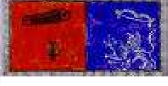
"कुनो एहेन बात नइ छै नन्दिता भाभी। अहाँकैं संगति हमरा नीक लगैए। किछु आरो बात करू। काल्हि तँ आब केतौ नहियेँ जाएब।"

ई कहि राघव नन्दिताकैँ पूरा अपना-आपसँ सटा लेलैन। राघव नन्दिताक आङीकैँ लगभग खोलि देलखिन। हाथ नाभीसँ निच्चाँ जा चहलकदमी करए लगलैन। प्रारम्भमे नन्दिता राघवक हाथकैँ रोकलखिन। राघव नहि मानला। नन्दितो छोड़ि देलखिन। दुनू एक दोसरक देहक अनुभूति आ विलक्ष्ण आन्नदमे मग्न भऽ गेला। दू शरीर एक आत्मा बनि गेल। ई क्रिया करीब बीस मिनट धरि चलल। नन्दिताक गौर वर्ण आ राघवक श्यामल शरीर एक अलग रंग-रभसक संजोग बना रहल छल। नन्दिताकैँ आइ एना बुझा रहल छेलैन जेना ओ राघव संगेअपन हनीमून मना रहल होथि। आब नन्दिताकैँ एहसास भेलैन जे सुहागराति की होइ छै। आब ओ बुझली जे शारीरिक सुख अगर स्त्री-पुरुखक मिलाप आ आपसी सहयोगसँ होइ तँ ओ सुख सर्वाधिक सुन्दर सुख छी। राघव पागल जकाँ नन्दिताक प्रत्येक अंगकैँ अपना वसमे केने जा रहल छला। नन्दिताकैँ अपनामे समेटने जाइत छला आ नन्दिता राघवक प्रेममे मिश्री जकाँ घुलल जा रहल छेली। सभ मर्यादा खतम भऽ गेल छल। दुनू एक-दोसराक प्रत्येक अंगकैँ प्राकृतिक रूपे दर्शन केलैन, भोगलैन आ तिरपित-तिरपित भऽ गेला। ने धोख ने लाज। केवल आ केवल शारीरिक आ मानसिक प्रेम आ समर्पण। दुनू ब्याहल मुदा दुनूक प्रेमकैँ निश्छल आ प्रथम प्रेमक अनुभूति कहल जा सकैत छल। अन्तमे कामोत्तेजनाक अधिक आवेशसँ राघव आ नन्दिता घामसँ तरबतर भऽ गेला। राघव हाफए लगला। नन्दिता झट-दनि अपन वस्त्र सम्हारए लगली। राघव सेहो अपन वस्त्र आ ओछाइनकैँ सेरियाबए लगला। नन्दिता ठाढ़ होइत बजली-

"आब तीन बाजि कऽ पच्चास मिनट भोर भऽ गेल। बीस मिनटमे बच्चा सभ उठि कऽ पढ़ब शुरू करता। आब अहाँ सुतू। हमहूँ जाइ छी।"

राघव एकबेर पुन: नन्दिताक हाथ पकैड़ हुनका अपन हृदयसँ सटेलखिन आ अनेको बेर अनेको स्थानपर चुमि लेलखिन। नन्दिता राघवक ऐनूतन प्रयोगसँ गद्-गद् भऽ गेली। आब नन्दिता अपन कक्षमे प्रविष्ट भऽ गेली।

राघव नन्दिताक सम्बन्धमे सोचए लगला। एकबेर भेलैन जे की ओ अपन अपन पत्नी- सहजन्याक संग धोखा तँ ने कऽ रहला अछि? एक मन ईहो भेलैन जे कदाचित राघव अपन ऐ कृत्यसँ प्रोफेसर सुधाकर-संगे बिसवाघात तँ ने कऽ रहला अछि? फेर भेलैन जे नहि नन्दिताक समस्त वृतान्त बुझला बाद शायद राघव आ नन्दिताक बीच जे किछु भेल ओ निश्चित रूपेण सर्वथा धर्मक कार्य छी। यएह बात सभ सोचैत-सोचैत राघव नीनभेर भऽ गेला।



प्रात: नियत समैपर राघव उठि गेला। आश्चर्यक बात ई जे नन्दिता सेहो चहकैत उठली। हुनकर सौन्दर्यमे आइ एक नैसर्गिक रोहानी झलकैत छल। समुच्चा शरीरक पोर-पोर जेना प्रेम-प्रसंगक अनुभूतिसँ खिल रहल छेलैन। नन्दिता बेबीक आबैक प्रतिक्षा नहि केली। सीधे रसोइ कक्षमे गेली। सर्व प्रथम राघव लेल इन्होर पानि, तत्पश्चात नेबोबला चाह लऽ कऽ आबि गेली। नन्दिता आ राघव संगे-संग चाह पीलैन।

राघव स्नान-धियान केला बाद घर बन्द कऽ दू घण्टा सुति रहला। तकर बाद दू घण्टा धरि अपन फिल्ड डायरी लिखलैन। आब भोजन तैयार छल। राघव आ नन्दिता संगे भोजन केला। भोजनक बाद नन्दिता बेबीकेँ दस टका आ गहुम दैत कहलखिन-

"बेबी, जो गहुम पीसेने आ। आइ-काल्हि मीलबला दोसर चीज मिला दइ छै, तँए अपना सामनेमे गहुम पीसा कऽ चिक्कस नेने आ।"

बेबी नन्दिताक आज्ञाक पालन करैत गहुम पीसबैले विदा भेल। आब समए दू बजि कऽ पच्चीस मिनट भऽ रहल अछि। नन्दिता राघवक कक्षमे प्रवेश करैत बजली-

"राघवजी, आब ऐ घरमे मात्रहम आ अहाँ छी। हमर दुनू बालक साढ़े चारि बजे साँझमे स्कूलसँ विदा हएत।"

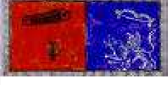
राघव नन्दिताक इसारा बूझि गेला आ झट-दनि घर बन्न कऽ लेलैन। आब नन्दिता आ राघव भयमुक्त वातावरण पाबि कामदेवक आगोशमे मग्न भऽ गेला। करीब एक घण्टा धरि दुनू एक-दोसरामे पूर्ण रूपेण समर्पित भऽ गेला। हरेक दैहिक सुखक बाद दुनू आर उत्साही आ स्फूर्तिवान भऽ जाइत रहैथ। दुनूक चेहरापर एक फराक चमक झलैक रहल छेलैन। लगभग चालिस मिनटक पछाइत नन्दिता राघवकेँ कहलखिन-

"राघवजी, आब घरक केबाड़ खोलि दियौ। बेबी कुनो क्षण आबि जाएत। बेबी आ हमर दुनू बालक सुधाकरक गुप्तचर अछि। हिंगसँ हरैद तक सभ बात सुधाकरकेँ बतबैत रहै छैन। एकरा सभ लग एक बातक धेयान अबस्स रहए जे हमरा लोकैन कुनो ओहन हरकत नहि करी जइसँ एकरा सभकेँ कुनो आभाष लगइ।"

राघव गरदेन हिला नन्दिताक बातकेँ समर्थन केलैन।

आब सभ राति नन्दिता अपन नव रचनाक डायरीमे आबि राघवक कोरामे माथ रखि अपन साहित्यक चर्चाक संग-संग प्रेम-प्रसंग आ देहक संसर्ग सेहो चलैत रहलैन। आब दुनूक मध्य मानसिक, साहित्यिक आ शारीरिक समन्वय परिपक्व भऽ रहल छेलैन। दुनू एक-दोसरक प्रति समर्पित एना जेना राघव अठारह बर्खक होथि आ नन्दिता सतरह बर्खक। आ उमहर ऐ सभ घटनासँ बेखबर प्रोफेसर सुधाकर बनारसमे कॉपी जँचबामे मग्न...।

जखन राघवकेँ दिल्ली जेबाक पाँच दिन शेष रहि गेलैन तहिया प्रो. सुधाकर आबि गेला। दोसर दिन बिहार बन्द रहइ। कारण बसबला आ टैक्सीबला बन्दक आह्वान केने रहै, तँए राघव फिल्डवर्क लेल केतौ ने गेला। इमहर प्रो. सुधाकरकेँ चलि एबाक कारणो रातुक साहित्य श्रवण आ रंग-रभस सेहो समाप्त भऽ गेलैन। दिनेमे दस-पनरह मिनट लेल नन्दिता प्रो. सुधाकर केर समक्षमे राघवसँ किछु पुछि लइ छेली। आब स्वतंत्रता


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

समाप्त भऽ चुकल छेलैन। दोसर दिन हड़तालक कारणे राघव केतौ नहि गेला। नन्दिता प्रसन्न छेली। ओना राघव आ नन्दिताक प्रसन्नता कइयेक गुणा बढ़ि गेलैन जखन प्रो. सुधाकर राघवसँ कहलखिन-

"राघवजी! आइ हम विश्वविद्यालय जा रहल छी। विभागमे रिसर्च कमिटिक मिटिंग तीन बजेसँ अछि। ओइसँ पहिने हमरा लोकैनकेँ किछु दस्तावेज इत्यादि ठीक करक अछि। हम पाँच बजे साँझ धरि फ्री हएब। जखन आएब तँ निश्चिन्तसँ गप करब।"

ई कहि आधा घण्टाक भीतर प्रो. सुधाकर घरसँ बाहर निकैल गेला। कनियेँ कालक बाद नन्दिता स्नान-धियान करक बास्ते विदा भेली। बारह बजैत-बजैत राघव आ नन्दिता संगे भोजन केला। भोजनक तुरंत बाद बेबी सेहो खेलक। नन्दिता बेबीकेँ कहलखिन-

"जो बेबी अपन माएसँ भैँट केने आ। पाँच बजे धरि चलि अबिहेँ।"

बेबी नन्दिताक कृपा बूझि गद-गद भऽ गेलि। पाँच मिनटक भीतर कैम्पससँ बाहर भऽ गेलि। आब नन्दिता आ राघव सबा चारि बजे धरि स्वतंत्र...।

नन्दिता अपन साहित्यक डायरी लऽ राघवक कक्षमे प्रवेश केली। राघव गद्-गद् भऽ गेला। नन्दिता अपन साहित्य-चर्चा प्रारम्भ केलैन। आधा घण्टाक बाद राघव उठला आ नन्दिता सहज भावसँ बिहुसैत आ मने-मन गदगदाइत राघवक कोरामे बैस गेली। आब एक दिस नन्दिता अपन साहित्य सुना रहल छेली आ दोसर दिस राघव नन्दिताक संग छेड़खानीमे व्यस्त आ मस्त छला।

ई क्रम चलैत रहलैन। एकाएक करीब पौने दू बजेमे प्रो. सुधाकर किछु कार्यसँ घर आबि गेला। नन्दिता झट-दनि राघवक कोरासँ निच्चाँ उतैर गेली। बिना सुधाकरकेँ देखने नन्दिता अपन घर दिस विदा भेली। प्रो. सुधाकरक आँखि क्रोधे आगि उगैल रहल छेलैन। हलाँकी सुधाकर ने तँ राघवकेँ किछु कहलखिन आ ने नन्दितेकेँ।

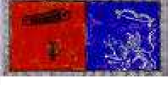
आधा घण्टाक पछाइत सुधाकर किछु फाइल लऽ पुन: विश्वविद्यालय दिस विदा भेला। जाइ काल राघवकेँ कहलखिन-

"राघवजी, अहाँ अपन समान लऽ ग्राउण्ड फ्लोरमे एकटा छोटका रूम अछि तइमे रखि लिअ आ हमरे संगे विश्वविद्यालय चलू।"

राघव समान लऽ निच्चाँ चलि एला। घरमे ताला लगेला आ सुधाकर संगे विश्वविद्यालय दिस विदा भेला। भरि रस्ता सुधाकर राघवकेँ किछु नहि कहलखिन। राघवो सहमल छला। भेलैन अगर सुधाकर अपमानित करितैथ तँ की होइत..?

खैर, राघवकेँ पुस्तकालयमे बैसा प्रो. सुधाकर अपन विभागमे चलि गेला। राघव पुस्तकालयमे तीन चारि गोट पोथी लऽ एकठाम बैस पढ़ए लगला। यद्यपि पढ़ैमे मन नै लगलैन। हलाँकी राघवकेँ अपन कृत्यपर कुनो पश्चाताप नहि छेलैन। आब हुनकर मनमे प्रो. सुधाकरक प्रति कुनो सम्मान नहि रहि गेल छेलैन। नन्दिताक कथा सुनला बाद सुधाकरमे ओ एक निहायत राक्षसकेँ देखए लगला। मुदा राघवकेँ अपनासँ बेसी नन्दिताक चिन्ता छेलैन।

प्रोफेसर सुधाकर छह बजेमे राघव लग पुस्तकालय एला आ दुनू गोरे संगे विदा भेला। सुधाकर रस्तामे राघवसँ कहलखिन-



"राघवजी, अहाँ नन्दिताक बातमे समए बरबाद नहि कऽ अपन कार्यपर धियान केन्द्रित करू। हुनका कथा लिखबा आ सुनेबाक अतिरिक्त कुनो काज नहि छैन। हमरा अहाँ सबहक बात बेवहार नीक नहि लागल। तँए निच्चाँ लऽ एलौं अहाँकेँ। निच्चोमे सभ बेवस्था छै। हमहूँ अहीं लग बातचित करबा लेल चलि आएब। केवल भोजन लेल ऊपर हमर निवासपर जेबाक अछि।"

राघव गरदेन हिला प्रो. सुधाकरकेँ अपन स्वीकृति दऽ देलखिन। दुनू गोरे गन्तव्यपर पहुँचला। राघव ऊपर नहि गेला। निचला कमरा बहुत छोट आ तीतर-बीतर रहइ। मकराक झोलसँ भरल। किछु किताब अबस्स राखल रहइ। राघवकेँ भेलैन जे एतए रहनाइ सम्भव नहि अछि। मुदा राति भऽ गेल रहइ। सोचलैन राति भरि कहुना रहि जाइ छी। साढ़े आठ बजे दिवाकर आबि कऽ कहलकैन-

"भोजन तैयार अछि चचाजी। चलू करबा लेल। पापा आ मम्मी दुनू अहाँक इन्तजार कऽ रहल छैथ।"

राघव आधा मनसँ विदा भेला। प्रो. सुधाकर आ नन्दिता डायनिंग टेबुलपर बैसल छला। प्रो. सुधाकर राघवकेँ अपना लग बैसक इशारा केलखिन। राघव हुनकर आज्ञाकेँ सम्मान करैत हुनके लग बैस गेला। नन्दिता कनी परेशान अबस्स छेली। मुदा ओतबो नइ जेतेक राघव सोचै छला। खैर, सभ गोरे भोजन केला। नन्दिता राघवकेँ लौंग आ इलायची तथा प्रो. सुधाकरकेँ पान बना देलखिन। नन्दिता सेहो स्वयं इलायची खेली। पान छोड़ला आइ छठम दिन छेलैन नन्दिताकेँ। आब प्रो. सुधाकर आ राघव निच्चाँ दिस विदा भेला। राघवक मनमे रातिक वार्तालाप नहि होमाक कचोट तँ बहुत छेलैन मुदा की कऽ सकै छला। राघवक कक्षमे आबि प्रो. सुधाकर हुनकासँ परियोजना सम्बन्धी बात बहुत काल धरि करैत रहला। लगभग एगारह बजे रातिमे प्रो. सुधाकर सुतैले गेला। ऐ घरमे राघवकेँ भरि राति नीन नइ भेलैन। ऐगला दिन भोरे राघव कुनो गाम लेल प्रस्थान केलैन। बहुत देर धरि कार्य केला बाद आपसीमे दरिभंगाक नै आबि अपन गाम चलि गेला। दू दिन अपने गामसँ अलग-अगल स्थान जाथि। दोसर दिन भोरे-भोर प्रो. सुधाकर फोन केलखिन तँ राघव कहि देलखिन जे ओ अपन वृद्ध माता-पितासँ भेँट करक हेतु अपन गाम चलि एला। राघव ईहो कहलखिन जे दिल्ली जाइसँ एक दिन पूर्व ओ दरिभंगा जेता आ विस्तारसँ चर्च करता। नन्दितासँ सेहो राघवकेँ फोनपर बात होइ छेलैन।

कार्यक समाप्तिक बाद राघव दरिभंगा गेला। तखन प्रो. सुधाकर घरपर नहि छला। नन्दिता निच्चाँ एली आ कहलखिन जे प्रो. सुधाकर लहेरियासराय कुनो मित्रकेँ कुनो नर्सिंग होममे देखबा लेल तुरंते गेल छैथ। राघव हाथ-पएर धोलैन। तैबीच नन्दिता स्वयं चाह बना लऽ अनली। राघव चाह पीबैत बजला-

"नन्दिता भाभी, हमरा कारणे अहाँकेँ बहुत दिक्कत भऽ गेल?"

नन्दिता-

"अरे! बेकार अहाँ किए चिन्ता करै छी राघवजी? सुधाकर अपने-आप ठीक भऽ जेता। हिनका हमर कुनो पुरुखसँ बातचित आ आत्मियता नहि पसिन छैन। हमरा दुख केवल ऐ बातक अछि जे अहाँकेँ निच्चाँ आबए पड़ल!"

राघव-

"नहि! ऐसँ हम परेशान नइ छी। हमरा केवल अहाँक चिन्ता भऽ रहल छल। कहीं भाइ साहैब मारि-पीटपर ने उतरल होथि?"

नन्दिता-

"ओते हिम्मत नहि छैन। हमरापर जहिया हाथ उठा देता तहिया हमहूँ औकात देखा देबैन।"

ई कहैत नन्दिता राघव दिस बढ़ली आ राघवजीक कपार चूमि लेली। राघव पुन: उत्साहित भेला। कक्ष बन्द केलैन आ दुनू गोरे आनन्दलोकक अनुभव करैत रभसमे लागि गेला। एना लगैत छल जेना नन्दिता सिर्फ आ सिर्फ राघव लेल बनल होथि। राघव नन्दिताक शारीरिक सानिध्य पाबि तृप्त छला। नन्दितो तहिना छेली। करीब चालिस मिनटक पछाइत दुनू अपन-आपकेँ ठीक केलैन आ घरक दरबज्जा नन्दिता खोलली। फेर गप करए लगला। थोड़े कालक बाद नन्दिता ऊपर जाए लगली। राघव एकबेर फेर भरि पाँज-के पकैड़ नन्दिताकेँ चुमए लगला। नन्दिता सेहो प्रत्युत्तरमे सएह केलखिन।

आब राघव अपन डायरीमे छुटल बात सभ लिखए लगला। कैमराक चीप निकालि फोटो सभकेँ लैप-टॉपमे डाउनलोड केलैन। फेर थीमक अनुसारे ओकर अलग-अलग फोल्डर बना ओइमे रखला। ताबे प्रो. सुधाकर आबि गेलखिन। दुनू गोरेमे बहुत देर धरि गप भेलैन। नन्दिता बीचमे बेबीकेँ भेजलखिन। बेबी आबि कऽ बाजलि-

"चाह लाबी की?"

प्रो. सुधाकर जबाव देलखिन-

"हँ-हँ, चाह बना। कनी चूरा सेहो भूज। हम सभ ऊपरे आबि रहल छी।"

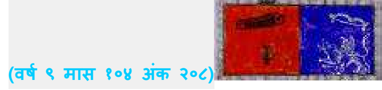
आब राघव आ प्रो. सुधाकर ऊपर एला। बेबी चूरा भुजए लगल। सुधाकर अपन पुत्र दिवाकरकेँ दोकानसँ पकौड़ा लाबए कहलखिन। सभ गोरे भूजल चूरा आ गरम-गरम पकौड़ा खेलैन। नन्दिता सेहो संगे बैसल छेली। राघव आ प्रो. सुधाकर फेर निच्चाँ आबि गेला आ सभ डाटापर चर्च प्रारम्भ केलैन। साढ़े दस बजे रातिमे कार्यक समाप्तिक बाद सभ गोरे भोजन केला। राघव अपन कक्षमे आबि किछु आरो बचल बात सभ लिखलैन आ सूति रहला।

दोसर दिन राघव स्नान-धियान केलैन आ छह बजे भोरे प्रो. सुधाकर स्वयं हुनका ऊपर लऽ गेलखिन। चूरा-दही-चीनी परोसल छेलैन। नन्दिता कीचनमे व्यस्त छेली। जखन राघव जलखै कऽ लेला तखन नन्दिता कीचनसँ बाहर एली। एकटा टीफीन राघव लेल तैयार छेलैन। राघवकेँ दैत कहलखिन-

"राघवजी, अहाँक पत्नी सहजन्या सुधाकरकेँ कहने छेलखिन जे अहाँ बाहरक वस्तु यात्राक अवधिमे नइ खाइ छी। तँए थोड़ेक पुरी, पड़ोरक दू फँक्का आ थोड़ेक खजुरिया बना देलौं अछि। एकरा खाइत जाएब भरि रस्ता...।"

राघव लग कृतज्ञताक कुनो शब्द नहि छेलैन। राघव आब प्रो. सुधाकरकेँ चरण स्पर्श केला। सुधाकर पीठ ठोकि असिरवाद देलखिन आ हृदयसँ लगेलखिन। आब राघव नन्दिताक चरण छुला। नन्दिता अपन हाथ राघवक पीठपर देलखिन। नन्दिताक हाथक स्पर्शसँ राघव धन्य भऽ गेला। नन्दिता आ हुनकर दुनू बालक राघवकेँ निच्चाँ धरि छोड़ि एलैन। राघवक संगे प्रो. सुधाकर सेहो रेलबे स्टेशन धरि विदा भेला।

स्टेशनपर गाड़ी आबि गेल रहइ। राघव गाड़ीक प्रथम ए.सी. कोंचमे बैस गेला। प्रो. सुधाकर सेहो कोच धरि गेलखिन। आब ट्रेन पाँच मिनटमे खुजत। ई जानि राघव पुन: प्रो. सुधाकरकेँ चरण स्पर्श करैत कहलखिन-



"श्रीमान, आब अहाँ उतैर जाउ।"

प्रो. सुधाकर गाड़ीसँ निच्चाँ उतैर गेला।

ट्रेन खुजि गेल। राघव एकबेर पुन: नन्दिताक सम्बन्धमे सोचए लगला। मनमे एलैन, केना परिस्थिति मनुखकेँ की की बना दइ छै। नन्दिताक परिस्थिति हुनका लेखिका बना देलकैन- परिस्थिति लेखिका।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

राजेश वर्मा 'भवादित्य'

पटोरी पछवारि टोल,

पो०- पंचगछिया, सहरसा।

बीहनि कथा

रौशन राज। प्राथमिक स्कूलक चौथा किलासक विद्यार्थी। स्वतंत्रता दिवस मनेबाक उत्साह ओकरा कतेक दिन पहिने सँ रहय। 15 अगस्त सँ एक दिन पहिने ओ अपन मम्मी सँ पैसा माँगि पन्नीवला तिरंगा झंडा, माथमे बान्हयवला पट्टी जाहिपर " I LOVE MY INDIA" लिखल रहै आ गालमे साटय लेल तिरंगा वला स्टीकर कीनिके आनि लेने छल।

15 अगस्तक भोरे उठि ओ पन्नीवला तिरंगाके एकटा करचीमे खोंसि, गालमे स्टीकर साटि आ माथमे पट्टी बान्हि स्कूल पहुँचल। प्रभातफेरी मे खूब नारालगेलक। झंडोत्तोलनक बाद सभ छात्रकेँ प्रसादक रूपमे बुनियाक वितरण भेलै। ओ पन्नीवला तिरंगेमे बुनिया लऽ कय खाइत-खाइत घर दिस चलि देलक। बाटमे जखन बुनिया खतम भऽ गेलै ओ जूठका तिरंगावला पन्नीकेँ मोड़ि- माड़ि सड़कक कातमे फेक देलक आ अपन संगीसभ संगे खेलबामे व्यस्त भऽ गेल।

ओकर मुखमंडल पर पूर्ण स्वाधीनताक संतोष पसरल छलै।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

३. पद्य

३.१.1.रवि भूषण पाठक- 9 टा कविता 2. रौशन कुमार झा " गोविन्द "- कसैया दहेज़

३.२.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.३.रामसोगारथ यादव- ३ टा कविता

३.४.जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल- २ टा गजल

1.रवि भूषण पाठक- 9 टा कविता 2. रौशन कुमार झा " गोविन्द "- कसैया दहेज़

1

रवि भूषण पाठक- 7 टा कविता

1

श्री लक्ष्मी चौधरी ,करियनक सम्मान मे

ऊ जे क' देलखिन

उठानी मे
की तू क' सकबीहीं जवानी मे?
कोन जोकरक तोहर चरचा एॆ ठाम
बहुत दम छै हुनकर कहानी मे
की भाव की अभाव की परभाव कहियौ
बूझि पेबही ऐ जिनगानी मे?

2

हजार-लाख मे

एकोटा ने ईमानदार रहै
सौ मे सौटा विधायकजीक कोटेदार रहै
भीजल चीन्नी रहै गहुम बोरापार रहै
जेहल मे जीभ पेट थाना मे गिरफ्तार रहै
दै मुठ्ठी सँ लै लोपेलोप एहने ई कारोबार रहै
ऐ मिलावट –कमतौली क सब हिस्सेदार रहै
मिलतै छल एक धुर अप्पन जमीन
सिमरिया सँ बिस्फी तक भाषाक कालाबजार रहै

3

डहकन

जत्ते खोड़बौ ओत्ते गड़तौ
गरमी मे आगि जाड़ मे बर्फ सन लागतौ



नोचतौ नछोरतौ भमोरतौ ने फालतू
जत्त' जत्त' छूतौ ओत' ओत' दागतौ
भगेतौ खेहाड़तौ ने जालेे बिछेतौ
बिन कत्ते दूरे सँ गत्तर-गत्तर काटतौ

4

खट्टा चूक्क

दोसरक खुशी देखिते हुनकर मोन भ' जाइ छैन खट्टा चूक्क
दोसर के मुसकियाइत हुनकर दिल मे उठै छैन हुक
दोसर के हरियाइत देख हुनकर पानि किएक सुखैत छैक
किएक ओ सुखा के कसौंझी भेल जाइत छथिन
पूरा टोल गीत गाबैत रहै आ हुनकर दांत कोथ रहै
पुरा गाम खुशी सँ हरियर रहै केवल हुनकर मोन पतैली जँका कारी भेल रहै
हयौ नीच्चे गिरबाक होए त' भरल-पुरल गिरू
झूल भ' गिरबै त' किओ छुअत नइ छुअत.....

5

मीत्ता-2

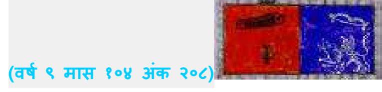
एना दोस्ती के जुनि गीज मीत्ता
कखनो दुश्मनो पर पसीज मीत्ता
ढ़ोलहा देने कसम किरिया केहन
दम धेनाइयौ कुनो छै चीज मीत्ता
एना जे करबै दर्दक विज्ञापन
कम कहनैये छै तमीज मीत्ता

6

हरियर

हरियर खूब हरियर रहै
आ लाल खूब टक्क लाल
मुदा हरियर जे कनेक करियाइत रहै
आ लाल जे खूनमाखून होइत रहै
सेहो देखि लेलियै ऐ बेर गाम मे
तहिना ऊज्जर मे खूब टीनोपाल रहै
आ सेठबा सब खूब मालामाल रहै
मुदा उजरका आब बेदाग नइ बचलै
सेहो लिख लेलियै ऐ बेर गाम मे
पीयर ने हरिदैल रहै ने बसंती
पाकल जे सड़ि गेल रहै
से चखि लेलियै ऐ बेर गाम मे.....

7



बहुत किछु विदा भ' गेल रहै

आ किछु विदा हेबाक लेल तैयार रहै गेट पर
सबसँ पहिने मुंहक मैथिली
आ ईसरगत,डरकडोरि ,बद्धी,माला
लागैत रहै नइ रहतै देह पर कुनो सूत
खरखर सुभाव क' स्थान पर
बरसैत रहै चाशनी वला मौध
आ जे मोन मे रहै
से ठोर पर नइ रहै
तमाम आदर्श नुका रहलै
भगवत्ती घरक कुनो ताखा मे
सपना सब भकुआयल -भूतिआयल
अतृप्त ईच्छाक धार बहैत रहै पूरा देह

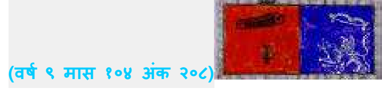
8

व्यर्थ प्रलापी

व्यर्थ प्रलापी
घनघोर षड्यंत्रकारी
जे लिखै छथिन बड्ड नीक
ओ कत' गेलखिन ?
सुर आ असुर दूनू के देलासा दए वला
कविता ,कहानी ,आलोचना
ब्लॉग ,पत्रिका ,किताबादि सँ सम्पुष्ट
ओ युवा मनीषि कत' चलि गेलखिन
हुनकर अशुभ वाणी अमंगलकारी छाया
नइ देखाइछ त' मोन किदनदन कर' लागैत अिछ
ऊ छथिन चालि चलै लेल
आ हमहूं छी हुनकर चालि बिगाड़बाक लेल
हे ऊप्पर सँ हरियर आ अंदर सँ सोंसि-घ़डियार
अहांक फू-फा नइ सुनै छी त' कान नोच्च' लागैत अछि
अहांक दुष्ट सोच अछि
तखने हमहूं छी
अपने कत्त'छी धियान लगेने ?

9

झाबाद



झाबाद रहै ,मिश्राबाद रहै
यादबाद रहै ,मंडलाबाद रहै
आ सिंह सँ पसवान के सुसमाद रहै
तखने मिथिला जिंदाबाद रहै

2

रौशन कुमार झा " गोविन्द "
पिता - श्री नारायण जी झा
पता - ग्रा०+पो० - सतघरा,
थाना - बाबूबरही,
जिला - मधुबनी, बिहार

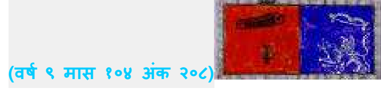
कसैया दहेज़

मिथिला के पावन धरती पर,
राखल एखनो धरि अय सहेज ।
आंच अबैया नारीक मान पर,
बहुत कसैया अय इ दहेज़ ।।१।।

आन शान के राइख ताख पर,
लैया बेटा के बदला में दहेज़ ।
सबटा भार दइया बेटीये पर,
रहि ने गेल कनिको परहेज ।।२।।

नै जनि कक्कर अय ई देन,
पराया सब बेटी के बुझैया ।
जमा करैया दहेजक धन,
बेटा ककरो जेना किनैया ।।३।।

देब लेल बेटी के निक घर,
करैया अरमानक त्याग ।
घुमि तकैया गाम-गाम वर,
नै थाकैया घटकक पग ।।४।।



दाम लगबैया बेटा के,
बेटा के बजार बड तेज।
खाली करैया बात टका के,
बहुत कसैया अय ई दहेज़ ।।५।।

बहुत मोल-भाव कय,
होइया बियाह फेर ठीक।
दहेजक मोल चुकाबय,
जाइया घरारी तक बिक ।।६।।

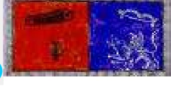
सखी-सहेली नैना जोगिन,
बर बराती सब अबइया।
नव युवती बनय सुहागिन,
ख़ुशी स् बियाह भ् जाइया ।।७।।

माँ-बाबू , बहिन और भैया,
सब तेजि कय सासुर बसैया।
सौस-ससुर सब ताना दैया,
बिन जवाब के सब सुनैया ।।८।।

सब पैलो पर सौस कहैया,
किछु नै अनलक ई दहेज।
नारी के सम्मान जरैया,
बहुत कसैया अय ई दहेज ।।९।।

अपने भाग्य के दोषी मानै,
नोर बहा क सब सहैया।
नैहरक लोक किछो नै जानै,
बेटी पर कि कहर अबैया ।।१०।।

किछु नारी सबटा सहैया,
किछु जीवन के मिटबैया।
जे जीवन के मोल बुझैया,
सासुर ओकर जान ल लैया ।।११।।



समस्या नै मात्र मिथिला के,
समस्या पूरा भारतवर्ष में ।
दहेज स बचाऊ नारी के,
नारीक जीवन बड संघर्ष में ।।१२।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

आशीष अनचिन्हार

२ टा गजल

1

मोनक गाछी मजरल किछु
धीरे धीरे गमकल किछु

खुल्लम खुल्ला जीवनमे
परदा पाछू खनकल किछु

हमहूँ छी बुधिमान बहुत
हमरो लग तँइ अभरल किछु

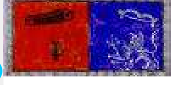
बड़ देलहुँ धेआन मुदा
देहक एना चनकल किछु

भेलै मेघक बँटवारा
इम्हर उम्हर बरसल किछु

सभ पाँतिमे 222-222-2 मात्राक्रम अछि
दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

2

सात तहमे दाबल बात
बड़ महकलै झाँपल बात



काँपि रहलै रसगर ठोर
काँपि रहलै कोमल बात
नै नुका सकलै भीतरमे
चमचमाइत माँजल बात

हमरा लग उजड़ल पुजड़ल तँ
हुनका लग छै साँठल बात

चुप रहू किछु नै बाजू
हमहूँ जानी जानल बात

सभ पाँतिमे 2122 + 2221 मात्राक्रम अछि
तेसर चारिम आ पाँचम शेरक किछु दीर्घकेँ लघु मानबाक छूट लेल गेल अछि

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

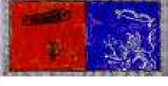
रामसोगारथ यादव- ३ टा कविता

1

।। गरिब ।।

फटै जखन करेज तऽ,
अपनेसँ सी लै छी।
अबै जखन अन्हर तऽ
हवेमे जिनगी जी लै छी ।।

जँ पानि कम पडि जाय तँ,
बस नोरे पी लै छी।
फटै जखन करेज तऽ,
अपनेसँ सी लै छी ।।

मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

यमबसियाक रातिमे
चँन्द्रमाके अशा लगौने छी ।
देह धुनिक रुइयाँकें सिरक
चमरिकें बनौने छी ।।

धनवानकें बाँन्दर बनी,
नित दिन नचैत रहै छी ।
प्यासल आशक जिनगिमे
लक्ष्य लेल दौडते रहै छी ।।

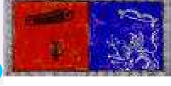
सभहक खुसिसँ कोठी भरै मुदा
बर्ष भरी हमरा मनक कोठिमे,
टिस मारिते रहैय ।
प्रकृतिककें खेल निरला अछि
मासे पछाडि कनिबिते रहैय ।।

करम कऽ पछाडि दौडते रहबै
जाँ धैर हाथ पैर चलाब सकबै ।
थरथरा जैतै जँ हाथ पैर तखन
दैबसँ जीवन अन्तकें प्रथना करबै ।।

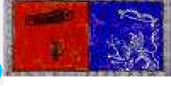
भेंटी जैतै जिनगिकें रंग तऽ
जीवन समहारी ले'बै ।
जँ आरो परिक्षा लेतै दैब तऽ
हँसी हँसिक सुहकारी ले'बै।।

2
।। देश प्रति स्नेह ।।

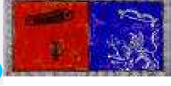
आई
निंदबासन रात्रिमे
अद्‌भुत
सपन देखलौं ।
बिचित्र रुपमे
एकटा नारी
आ हाथमे


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कफन देखलौँ ।।
कुछ लोक
ओकरा पछाडी
रंग बिरंगकें
झण्डा लेने
अवाज लगबैत
अबैत छलै ।
आ
उ नारी
कनैत कनैत
भगैत छलै ।।
इ दृश्य देखि
हमर मन
बिभोर भ'गेल
आ हम
पुछि देलियै ।
अहाँ पाछु
अतेक लोक किय ?
अहाँ हाथमें
कफन किय ?
अहाँ के छी ?
हमरा उतर अहि प्रकार भेंटल
हम अहि
ब्रह्माण्डकें
एक कोनामे
अपन अस्तित्व
कायम कैने
बहु जाती
बहु धर्म
बहु संस्कृतिमे
रमिरहल
अहि दुनियाके
एक मात्र
दासीबिहिन
स्वतन्त्र लोक छी ।।
हमरालँ

मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

अचल
सम्पत्ति अछि।
हमर
एक एक
कणकें
अलग महत्त्वसँ
दुनिया चिन्हिरहल अछि।।
हम
पृथ्वी लोकमे
सभसँ उच्च शिरसँ
चिनहायत छी।
हमर
खेतकें दाहर
कहुवो बहैत पानि
मात्र अछि
मुदा
किन्कोलेल
अमृत सम्मान छी।।
मुदा...अपसोच !!
इ हमरा
पछाडी पडल
सभ हमरे
संतान अछि।
किन्कोमे किन्कोसँ
मेलमिलाप नहिं अछि।।
आपसी लडाईमे
सभ ब्यस्त छैक।
कोई जातिकें नाम पऽ
कोई किन्को
पहिरनकें मजाक
बना कऽ
कोई किन्को
भाषा
संस्कृतिकें
नाटक बनाकऽ
यहाँ तक कि
छालाकें रंग



हिसाबे
आपसी भेंद भावमे
झगडी रहल छैक।
अहि
लडाईमे
हमर बहुत
संतान मरि गेल
आब हमरा
शंका लागिरहल य
कि
इ सभ
हमर संतान
हमरा
टुक्रा टुक्रा
करि धनकैत
चितामे
सवाह नै क दे।
तँहि लेल
हम
कफन
नुकाबैत
ओइ वीर
बेटा लँ
भागिरहल छी।
जे अहि
राक्षस सन
लोककें मारीक
इ कफन ओरहा
हमरा
आत्माकें
शान्ती दियाबि सकत।
आ
हमरा
समुचा सम्पत्ति पऽ

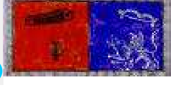
फिर अपन
पहुलके ताजकें
साथ
अपन
शिर दुनिया आगु
फिरसँ उच्च राखे ।।

अचानक हम
चेहा उठलौं
आ
बुझिगेलियै
के छलिं
ई सुन्नर नारी
के छलीह -
सात समुन्द्र पार
एहि मरुभूमिक देशमे
हमरासँ दूर
अपनत्व सँ तडैप रहल
हमर मातृभूमी छलीह
हमर देश छलीह
जे, अपन उद्दार लेल
हमर सपना आयल छलीह ।

3

"समुन्दर पार "

परिचित ,
अपरिचित ,
संस्कृति संग,
अपन,
परिचय,
कराबिरहल छी ।
गोर,



कारी,
श्यमला लोक संग,
अपन,
मधुरता,
बडाबिरहल छी ।।
बालु,
पथर,
कारी चटान संग,
अपना,
माटिके,
लेखाजोखा करिरहल छी ।
सात समुन्दरपार ,
मारुभुमिमे,
अपना,
उर्बल ,
संस्कृतिके
बिज भ'रिरहल छी ।।
ज्ञान,बिज्ञानसँ,
भरल,युगमे,
अपना,
माटिके,नमुना,
पेस करिरहल छी ।
रमन,चमनसँ,
भरल,जगमे,
चेत्थरी पहिर,
अपना माटिके
अस्तित्व
खोजि रहल छि ।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल
२ टा गजल



१
अपन निन्न अपने सपना छै
सबहक एक भिन्न दुनियां छै
ताम झाम आ तडक भडक ई
की बदलल सभटा ओहिना छै
मोटर बंगला बैंक डिपोजिट
सभटा छै लेकिन लाज कहां छै
आंगन घर आओर दरबज्जा
केहन शून माए बाप बिना छै
गप्प हंकैए अरब खरबके
करतब लेकिन चोर जकां छै
लोक बुझैए एखन नगरमे
सत सत बाजब साफ मना छै
सीता रामक मर्म जे बुझलक
अनिल तकर शीले गहना छै
वर्ण १२

२.
मेघ बनि बनि क' अबैत रहू अहिना
अहां नीक हमरा लगैत रहू अहिना
नाटक ई जिनगी आ हम अहां नटुआ
सभ कियो नाचय नचैत रहू अहिना
बाहरेमे रखियौ ई दुनियांके झंझटि
राम राम भीतर जपैत रहू अहिना
काम क्रोध लोभ मोह दुश्मन छी बडका
सदिखन स्वयंसं लडैत रहू अहिना
मोन वचन कर्मसं सबहक खुशीले'
संकल्प पल पल करैत रहू अहिना
अपनाकें चीन्हब आ दुनियांकें जा नब
चलबेमे सुख छै चलैत रहू अहिना
वर्ण १५

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

बालानां कृते

विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

आशीष अनचिन्हार

बाल गजल

उजड़ैए जे आँगन बाबा
नाचैए पतराखन बाबा

भानस भात बना धेलक ओ
चीखैए किछु चाखन बाबा

अजगर गहुँमन साँखर संगे
घूमैए बड़ धामन बाबा

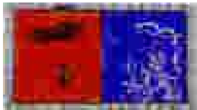
टालक टाल लगा मरि गेलै
लूटैए सभ लूटन बाबा

किछु दुर्घटना हेबे करतै
झूमैए मनभावन बाबा

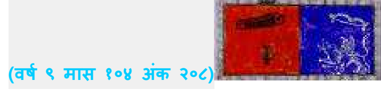
सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि
दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि
ऐ गजलमे दू टा काफियाक प्रयोग अछि

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि)ggajendra@videha.comकैँमेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि।रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमेटाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मीठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html “भालसरिक गाछ”- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ”जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु